MERI KHETI

मेरी खेती

किसानो की बात मेरी खेती के साथ

खेत खलियान
सब्जी
फूल
मशीनरी
मौसमी व अन्य कृषि सुझाव
सरकारी नीतियां
औषधीय खेती
पशुपालन–पशुचारा
प्रगतिशील किसान

जनवरी, 2024 मुल्य: 49रु

विषय सूची

सम्पादकीय

सलाहकार मंडल

खेत खलियान	01 - 02
सब्जी	03 - 05
फल	06 - 10
फूल	11 - 12
मशीनरी	13 - 15
मौसमी व अन्य कृषि सुझाव	16 - 19
सम्पादकीय	20
सामान्य लेख	21 - 24
सरकारी नीतियां	25 - 35
किसान समाचार	36 - 44
औषधीय खेती	45 - 46
पशुपालन–पशुचारा	47 - 49
मिट्टी की सेहत – खाद	50 - 53
प्रगतिशील किसान	54

विज्ञापन के लिए संपर्क करें : 91-9899991906, 91-8800777501

सम्पादकीय

मिट्टी में रहने वाला, मिट्टी में मर जाने वाला
शहर की इमारतों की सीढियां, किसान कैसे चढ़ेगा?
खो जायेगा नए शहर के धधुंले आइने में
किससे कितना लेना देना, अनपढ़ क्या हिसाब पढ़ेगा?

मिट्टी से जुडा किसान,
क्यूं हम सबका अन्नदाता हो कर भी नहीं जी पाता अपना हक, नहीं बचा पता अपना सम्मान? हाय!! येमिट्टी सेजुडा किसान।

आधनिुक दौर या यूं कहे की आधी नतैिकता का दौर। गौरतलब की बात है, दोनो का अर्थ एक जसै परिभाषित किया जाए तो कोई ज्यादा अंतर नजर नही आता। और इस दौर की मार अगर कि सी पर पड़ी और नजरंदाज भी कर दी गई,
तो वो है -किसान।

भारत देश का किसान जितनी फसल उगाता है, शायद ही उसका 10 प्रति शत भी खाता है और उससे भी कम खुद कमाता है। सोचिए क्या हो की अगर आपसे आपके खून जितना काम कराया जाए और फिर खून भी आपका न रहे, न उसकी कीमत। क्रोध की पराकाष्ठा पार तो होनी है। पर क्रोध का दायरा क्या सिर्फ आम आदमी पर लागू होता है? क्यूं समान परिस्थिति में जी रहा किसान,
नही कर सकता क्रोध? क्यूं नकुसान सहता जाए और काम करता जाए?

आजकल किसान की फसल जितने हाथो सेहोके गुजरती है,
फसल की कीमत बढ़ती जाती है पर किसान का अस्तित्व और मुनाफा घटता जाता है। सरकारी दफ्तर के दलालों की दलाली से गुजरने के बाद ये फसल गुजरती है निजी शाखाओं से जहां इसका भाव और किसान का मुनाफा दोनो निजी तरह सेतय किया जाता है।

निजी जेब का सवाल है भाई!
और बची कुची कोई कसर रही तो वो पूरी कर देता है काला बाजारी का अंधेरा,
जहां अपना किसान, अपना अन्नदाता, मानो खो जाता है।

धन्यवाद,
संपादक, दिलीप यादव

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक

श्री कृष्ण पाठक
फाउंडर, मेरीखेती

श्री दिलीप यादव
विशेषज्ञ, मेरीखेती

डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत्त)
उत्तर प्रदेश

प्रो. ए पी सिंह
पूर्व कुलपति, वेटरनरी विश्व विद्यालय, मथुरा

डॉ रितेश शर्मा
प्रधान वैज्ञानिक, बासमती निर्यात विकास फाउंडेशन (एपीडा, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार)

डॉ उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर, भरतपुर, राजस्थान

डॉ हरि शंकर गौड़
पूर्व कुलपति एसबीबीपीयूएटी, मेरठ, साइंटिस्ट, गलगोटिया विश्वविद्यालय

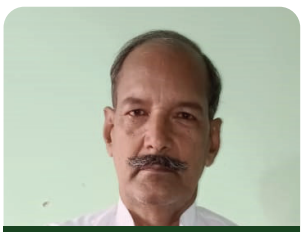

तेजपाल सिंह
प्रगतिशील किसान

डॉ एसके सिंह
प्रोफेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा बिहार

डॉ एम सी शर्मा
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति आईवीआरआई इज्जतनगर

डॉ जे.पी.एस. डबास
वरिष्ठ वैज्ञानिक आई ए आरआई

खेत खलियान

सर्दियों के मौसम में किसान इन बातों का विशेष ध्यान रखें

जैसा कि हम सब जानते हैं, कि सर्दी का मौसम चल रहा है। किसान भाई सर्दी के मौसम में फसल का बेहतर ढ़ंग से ध्यान रखें। इस मौसम में किसान भाई फसलों की तुड़ाई सही समय से करें। मौसम भले ही केसा हो खेती करना कोई सहज कार्य नहीं है। भारत के किसान रात दिन परिश्रम कर फसल उगाते हैं। सर्दियों में फसल उगाना और भी मुश्किल हो जाता है। इस दौरान तापमान कम होता है, जिससे पौधों की वृद्धि और विकास प्रभावित होती है। साथ ही, सर्दी में सूखे की संभावना भी ज्यादा होती है। इसलिए किसान भाइयों को सर्दी में खेती करते समय कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

किसान भाई इन बातों का रखें खास ध्यान

किसान भाई सर्दियों में ऐसी फसलों का चुनाव करें जो कम तापमान में सहजता से उग सकें। ऐसी फसलों में गोभी, मूली, गाजर, मूली, पालक, गेहूं, जौ, चना, मटर, सरसों और आलू आदि शामिल हैं। किसान भाई इस मौसम में खेती के लिए उचित बीजों का चुनाव करना बहुत महत्वपूर्ण है। बीजों को अच्छी तरह से सुखाकर ही खेत में बोना चाहिए। सर्दियों में बुवाई का सही समय बहुत महत्वपूर्ण है। बुवाई विलंभ से करने से पौधे अच्छी तरह से विकास नहीं कर पाते हैं। इस दौरान किसान भाई ज्यादा खाद और पानी की आवश्यकता होती है। इसलिए खाद और पानी की उचित मात्रा देनी चाहिए।

किसान भाई अपने खेत में पानी की समुचित व्यवस्था करें। सर्दियों में ठंडी हवाओं से पौधों को संरक्षित करने के लिए बाड़ लगाना चाहिए। फसलों की तुड़ाई का सही समय बहुत महत्वपूर्ण है। फसलों को सही समय पर न तोड़ने से उनकी गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है। खरपतवारों को समयदृसमय पर नियंत्रित करना चाहिए। इसके अलावा किसान रोग और कीटों का समयदृसमय पर नियंत्रण करें।

निम्नलिखित सुझाव इस प्रकार हैं

- खेत में गहरी जुताई करें ताकि मिट्टी में नमी बनी रहे।
- खेत में गोबर की खाद डालें।
- पौधों को समय-समय पर पानी दें।
- पौधों को रोग और कीटों से बचाएं।
- फसलों की तुड़ाई का सही समय देखें।

बायोटेक्नोलॉजी के जरिए फसलीय उपज और गुणवत्ता में सकारात्मक सुधार हुआ है

बायोटेक्नोलॉजी से तैयार की गई नई फसलों एवं तकनीकों की सहायता से किसान फसलों की पैदावार और गुणवत्ता दोनों को अच्छा बना पा रहे हैं। आजकल बायोटेक्नोलॉजी के क्षेत्र में काफी तीव्रता से प्रगति हो रही है। इसका लाभ बहुत से अन्य क्षेत्रों के साथ-साथ कृषि क्षेत्र में भी उठाया जा रहा है। आज के वक्त में बायोटेक्नोलॉजी ने कृषि क्षेत्र में क्रांति लाने का कार्य किया है। बायोटेक्नोलॉजी की सहायता से किसान अब ज्यादा उत्पादन और शानदार किस्म की फसलें उगा पा रहे हैं। इससे कृषकों को लाभ ही लाभ हो रहा है। बायोटेक्नोलॉजी के माध्यम से कृषि में विभिन्न प्रकार के नए-नए बदलाव किए जा रहे हैं। इससे फसलों की उपज बढ़ाने में सहायता मिल रही है। साथ ही कीट-पतंगों और बीमारियों से लड़ने में भी यह तकनीक अपनी अहम भूमिका निभा रही है। बायोटेक्नोलॉजी से किसान अपनी फसलों की गुणवत्ता और पैदावार दोनों को शानदार बना रहा है। बायोटेक्नोलॉजी कृषि के क्षेत्र में किस तरीकों से सहायता कर रही है।

बायोटेक इंजीनियर पूर्वा कुलश्रेष्ठ का इसको लेकर क्या कहना है ?

बायोटेक इंजीनियर पूर्वा कुलश्रेष्ठ का कहना है, कि बायोटेक्नोलॉजी ने कृषि क्षेत्र में काफी मदद की है। यह किसानों और कृषि उत्पादकता के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध हुई है। फसलों के उत्पादन को बढ़ाने में सहयोग मिला है।

उच्च पैदावार वाली नई किस्में तैयार की गई हैं। सूखा झेलने वाले पौधे तैयार किए गए हैं, जिससे कि सूखे की स्थिति में भी शानदार फसल हो सके। बायोटेक से खाद्य सुरक्षा में भी सुधार देखने को मिला है। फसलों की निगरानी अब सहज हो गई है।

नवीन प्रजातियों की फसलें

बायोटेक्नोलॉजी की सहायता से कृषि वैज्ञानिकों ने बहुत सारी फसलों की नवीन और उन्नत किस्में तैयार की हैं। इनमें सोयाबीन, धान, गेहूं, मक्का जैसी फसलें शुमार हैं। इन नवीन किस्मों में फसलों की पैदावार बढ़ाने और उन्हें बीमारियों व कीटों के प्रति सशक्त बनाने के गुण शामिल किए गए हैं। इन उन्नत बायोटेक फसलों की खेती करने से किसानों को पूर्व की तुलना में ज्यादा उत्पादन हो रहा है। इसके साथ ही इन फसलों की गुणवत्ता भी अच्छी हुई है और बाजार में इनकी कीमतें भी अच्छी मिल रही हैं। इससे किसानों की आमदनी में बढ़ोतरी दर्ज की गई है।

जानें दुनिया की सबसे महँगी सब्जी हॉप शूट्स के बारे में

किसान भाइयों आज हम आपको अपने इस लेख में विश्व की सर्वाधिक महंगी सब्जी के बारे में जानकारी देने जा रहे हैं। इस सब्जी का नाम हॉप शूट्स है। अगर हम इस सब्जी की कीमत की बात करें तो वो लगभग एक लाख रुपये प्रतिकिलो तक होती है। सामान्य तौर पर किसान इतनी महंगी सब्जी के बारे में जानते ही नहीं हैं।

आम जनता 200 रुपये किलो से लेकर 500 रुपये किलो की सब्जी की कल्पना तक ही सीमित है। शायद ही आपने इतनी महंगी सब्जी के बारे में सुना होगा। चलिए अपने इस लेख में हम आपको एक ऐसी सब्जी के संदर्भ में अवगत कराऐंगे, जो कि एक लाख रुपये किलो की कीमत पर बिकती है। आपकी जानकारी के लिए हॉप शूट्स नाम की एक सब्जी बाजार में 1 लाख रुपये किलो के भाव में बिकती है। रिपोर्ट्स के मुताबिक ये विश्व की सबसे महंगी सब्जी है। बाजार के अंदर इसकी कीमत 80 हजार रुपये से लगाकर 1 लाख रुपये तक पाई जाती है। इसकी खेती करने में ज्यादा परिश्रम नहीं करना पड़ता है।

हॉप शूट्स सब्जी का स्वाद एवं पोषक तत्व

हॉप शूट्स सब्जी के स्वाद के बारे में बात की जाए तो यह थोड़ा कड़वा रहता है। लेकिन, तैयार हो जाने के पश्चात ये मीठा हो जाता है। इसका इस्तेमाल सलाद, सूप इत्यादि के तौर पर किया जाता है।

सामान्य तौर पर इसको अधिकांश धनी या आर्थिक तौर पर मजबूत लोग ही खरीदते हैं। दरअसल, कुछ रिपोर्ट्स में यह उल्लेखित किया है, कि हॉप शूट्स सब्जी के अंदर बड़ी मात्रा में विटामिन्स विघमान होते हैं। साथ ही, इसमें एंटीऑक्सीडेंट भी उपलब्ध होते हैं, जिनकी सहायता से विभिन्न बीमारियों के उपचार में मदद मिलती है। इससे शरीर में कैंसर प्रतिरोधी क्षमता भी बढ़ जाती है।

हॉप शूट्स को आप घर में किस प्रकार उत्पादित करें ?

इस लेख के माध्यम से हम आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि एक लाख रुपये किलो में बिकने वाले हॉप शूट्स को आप अपने घर में भी उगा सकते हैं। इसको सूरज की रोशनी की आवश्यकता होती है। अब क्योंकि हॉप शूट्स को सूरज की रोशनी की अनिवार्यता की वजह से इसको न्यूनतम 6 घंटे की रोशनी की जरूरत पड़ती है। साथ ही, हॉप शूट्स को नमी वाली मृदा की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त हॉप शूट्स को उपजाऊ यानी उर्वरकों की भी जरूरत पड़ती है। हॉप शूट्स को लगाने के लगभग 2 माह पश्चात ये तैयार होता है। बतादें, कि इस दौरान इसे प्रमुख रूप से देखभाल की बेहद आवश्यकता होती है।

इन सब्जियों को आप अपने घर पर ही उगा सकते हैं

आज हम आपको घर में सब्जियां उगाने के कुछ अहम तरीकों के बारे में जानकारी देंगे। यहां आज हम आपको सबसे आसान, सस्ता एवं टिकाऊ तरीका बताने वाले हैं। बतादें, कि इन पांच सब्जियों का उत्पादन आप घर में भी बड़े आराम से कर सकते हैं।

भारत के प्रत्येक घर में सब्जियों का प्रतिदिन उपयोग होता है। महीने के खर्च के मुताबिक, देखें तो केवल सब्जियों के लिए आपको प्रति माह हजारों रुपये खर्च करने होते हैं। ऐसी स्थिति में यदि हम कहें कि आप अपने घर में ही कुछ सब्जियां बड़ी आसानी से उगा सकते हैं तो आप क्या कहेंगे। आइए आज हम आपको पांच ऐसी सब्जियों के विषय में बताऐंगे, जिन्हें आप अपने घर में किसी पुराने डिब्बे अथवा बाल्टी के अंदर भी उगा सकते हैं।

आप टमाटर और बैंगन भी घर में उगा सकते हैं

सर्दियों का मौसम है, ऐसे में टमाटर का उपयोग भारतीय घरों में काफी होता है। सब्जी बनानी हो अथवा फिर चटनी खानी हो टमाटर तो चाहिए ही। यदि आप अपने घर के अंदर टमाटर उगाना चाहते हैं, तो इसके लिए पहले एक पुरानी खाली बाल्टी अथवा टब लीजिए। उसके बाद उसमें मिट्टी एवं कोकोपीट आधा भर दीजिए। वर्तमान में टमाटर के अथवा बैंगन के पौधे लगा दीजिए। सुबह–शाम इसमें थोड़ा–थोड़ा पानी डालें। आप देखेंगे कि कुछ ही समय के अंदर ये पौधे सब्जी देने लायक हो जाएंगे।

धनिया और लहसुन सहजता से घर में ही उगा सकते हैं

सर्दियों में सर्वाधिक मांग धनिया की पत्ती एवं लहसुन की पत्ती की होती है। बाजार में ये काफी ज्यादा कीमतों पर बिकती हैं। इसके साथ ही बहुत बार ये ताजा भी नहीं मिलते। हालांकि, आप इन दोनों को बड़ी सहजता से घर में उगा सकते हैं। इन्हें उगाने के लिए आपको बस कोई टब अथवा पुरानी बाल्टी लेनी है, उसके बाद उसमें कोकोपीट एवं मिट्टी को मिलाकर आधा भर देना है। इसके उपरांत यदि आप धनिया उगाना चाहते हैं, तो उसके बीज इस के अंदर लगा सकते हैं। यदि आप लहसुन उगाना चाहते हैं, तो पहले लहसुन की कलियों को भिन्नदृभिन्न कर लीजिए, फिर उनको सिरे की तरफ से मिट्टी में घुसा दीजिए। सुबह शाम इसमें थोड़ा–थोड़ा पानी डालिए। आप देखेंगे कि कुछ ही दिनों में आपकी बाल्टी अथवा टब हरीदृहरी पत्तियों से भर जाएगी।

शिमला मिर्च भी आप घर पर ही उगा सकते हैं

शिमला मिर्च स्वास्थ्य के लिए काफी फायदेमंद होती है। सर्दियों में इसकी खूब मांग होती है। अब ऐसे में यदि आप अपने घर में शिमला मिर्च उगाना चाहते हैं, तो इसके लिए आपको ऊपर दी गई प्रक्रिया को दोहराना पड़ेगा। फिर उस बाल्टी अथवा टब में शिमला मिर्च के एक या दो पौधे लगा देने होंगे। इन पौधों को लगाने के कुछ दिनों पश्चात इनमें शिमला मिर्च लगने शुरू हो जाएंगे।

आलू की फसल को झुलसा रोग से बचाने का रामबाण उपाय

भारत में बदले मौसम के तेवर रबी फसलों से प्रत्यक्ष तौर पर जुड़े होते हैं। आलू की फसल झुलसा रोग के मामले में काफी संवेदनशील है। बतादें, कि कोहरा, बादल और बूंदाबांदी मौसम के बदले मिजाज में आलू की फसल झुलसा रोग के प्रति संवेदनशील होती है। आलू की खेती में लगने वाली ज्यादा लागत एवं रोग से संभावित भारी नुकसान के मद्देनजर कृषक रोकथाम के उपाय करें। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि बारिश, बादल और तापमान में आई अप्रत्याशित गिरावट एवं कोहरे के कारण महज आलू की ही नहीं बल्कि अन्य फसलों जैसे कि टमाटर, लहसुन और प्याज की फसल को भी नुकसान संभव है। बढ़वार रुकने के साथ-साथ रोगों के प्रति संवेदनशीलता भी बढ़ जाती है। वर्तमान में आलू की फसल पछेती झुलसा (लेट ब्लाइट) के प्रति संवेदनशील है। इसका प्रकोप ऊपर की पत्तियों से चालू होता है। प्रारंभिक समय में किनारे की पत्तियां काली होती हैं। तीव्रता से इसका संक्रमण संपूर्ण पत्तियों और तने से होकर कंद तक पहुंच जाता है। ये अगैती झुलसा से ज्यादा खतरनाक है। समय रहते इसकी रोकथाम ना होने पर 2–3 दिन में पूरी फसल चौपट हो सकती है।

झुलसा रोग की इस तरह रोकथाम करें

किसान मैंकोजेब के साथ कार्बेंडाजिम का छिड़काव करें। प्रति लीटर पानी में दवा का अनुपात 2.5 से 3 ग्राम तक रखें। पहले रक्षात्मक छिड़काव के पश्चात आवश्यकता हो तो दो सप्ताह के पश्चात दूसरा भी छिड़काव करें।

माहू का नियंत्रण कैसे करें

आज के मौसम में सब्जियों के साथ-साथ सरसों में भी माहू और इससे होने वाले विषाणु जनित रोगों के संक्रमण की संभावना होती है। प्रकोप होने पर पत्तियां मुड़कर मोटी और कड़ी हो जाती हैं। पौध का विकास और बढ़वार रुक जाता है एवं पैदावार प्रभावित हो जाती है। इसके नियंत्रण के लिए मेटासिस्टाक्स 1.5 मिली लीटर प्रति लीटर पानी में मिश्रित कर छिड़काव करें। पाले से संरक्षण करने के लिए खेत में नमी बनाए रखें। आप मैंकोजेब का भी छिड़काव कर सकते हैं।

सब्जियों की अन्य फसलों पर भी मौसम का असर होगा

अगर मौसम खराब रहा तो ऐसे में प्याज, लहसुन का विकास रुक जाता है। अधिकतर प्याज की रोपाई हो चुकी है अथवा नर्सरी में है। यदि प्याज की रोपाई करनी है, तो बेसल ड्रेसिंग में बाकी उर्वरकों के साथ प्रति एकड़ 10 किग्रा गंधक का भी इस्तेमाल करें। इफ्को का बेंटानाइट सल्फर एक शानदार उत्पाद है। नर्सरी में यदि गलन की दिक्कत है, तो मैंकोजेब, कार्बेंडाजिम एवं सल्फर का छिड़काव करें। विशेषज्ञों के मुताबिक 18:18:18 (घुलनशील उर्वरक) का छिड़काव भी बेहतर बढ़वार में मददगार है। कम तापमान के चलते लहसुन के कंद छोटे हो सकते हैं। इसके लिए 13:0:45 का छिड़काव करें। एक लीटर पानी में 10 ग्राम खाद डालें। इसमें 6 मिलीग्राम स्टीकर मिलाने से नतीजे बेहतर होंगे। सब्जियों में ऐसे मौसम में आए फलदृफूल गिर जाते हैं। ये बने रहें इसके लिए सूक्ष्म पोषक तत्वों का छिड़काव करें।

Khinni Ka Ped: खिरनी के पेड़ से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी

भारत के प्राचीन व आयुर्वेदिक ग्रंथों में इस khinni ka fal (खिरनी के फल) का अत्यधिक गुणगान गाया है। यह मीठा एवं हल्का सा कसैले स्वाद का फल शरीर के लिए अत्यंत लाभकारी है। खिरनी मसल्स को सशक्त करती है एवं पाचन तंत्र को दुरुस्त भी बनाए रखती है।इस फल के अंदर शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने का भी गुण विघमान है। इसकी उत्पत्ति भारत एवं नजदीकी देशों में मानी जाती है।

खिरनी के पेड़ (Khinni Ka Ped) की होती है काफी दीर्घायु

khinni ka fal (खिरनी के फल) आकार में दिखने में भले ही छोटी है। परंतु, इसका स्वाद शानदार माना जाता है। इसे उसी भांति बेचा जाता है, जैसे गन्ने की फांके (गंडेरी) बेची जाती है। मतलब बर्फ के ऊपर फांकों को ठंडी कर उसे ग्राहकों को दिया जाता है। खिरनी को भी ऐसे ही बेचा जाता है।परंतु, आजकल बड़े स्टोरों में यह पैकैटस में भी मिलती है। खिरनी के पेड़ों पर सितंबर से दिसंबर के माह में फूल लगते हैं। साथ ही, अप्रैल से जून के माह में फल पकते हैं। यह पेड़ों पर इतनी ज्यादा मात्रा में लगती है, कि कुछ एक दिन तो पूरा पेड़ संतरी रंग का दिखाई देने लगता है।

खिरनी यानी खिन्नी का उल्लेख खराद कला में भी हुआ है

कृषि विशेषज्ञ और वैज्ञानिकों का कहना है, कि यदि इसके पेड़ को कोई हानि न पहुंचाई जाए तो वह एक हजार वर्ष तक जिंदा रह सकता है। खिरनी के पेड़ (Khinni Ka Ped) से गोंद भी निकलती है, जो कि बहुत सारे कामों में आती है। खिरनी के पेड़ की लकड़ी काफी ज्यादा मजबूत एवं चिकनी होती है।

भारत के संस्कृति मंत्रालय के मुताबिक, राजस्थान के उदयपुर से संबंधित 'खराद कला' का इतिहास 250 वर्षों से भी ज्यादा प्राचीन है। यह एक ऐसी काष्ठ कला है, जिसमें आकृतियों को निर्मित करने के लिए 'खिरनी की लकड़ी' का इस्तेमाल किया जाता है।

खिन्नी के पेड़ का पौराणिक महत्व क्या है?

यह जानकर आप दंग रह जाऐंगे कि भारत के कुछ प्राचीन ग्रंथों में खिरनी को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। साथ ही, इसे फलों के राजा की भी उपाधि प्रदान की गई है। आयुर्वेद के ग्रंथों में खिरनी को राजादन, राजफल इत्यादि कहा गया है। पुराणों के अंदर खिरनी की गुठली (बीजों) से निर्मित तेल को प्रमुख माना गया है। ग्रंथ के मुताबिक, देवताओं द्वारा सम्मानित वैद्य अश्विनी कुमारों ने एक ऐसे स्वास्थ्यवर्धक तेल को तैयार किया था, जो किसी भी प्रकार के रोग से लड़ने की क्षमता रखता था।

इस तेल का नाम उन्होंने "अमृत तैल" निर्धारित किया था। इस तेल का इस्तेमाल उस दौर में राजाओं द्वारा किया जाता था। इस तेल को बनाने में अन्य औषधियोंध्वनस्पतियों के साथ ही खिरनी के बीज के तेल का भी उपयोग किया जाता था।

आम का पेड़ ऊपर से नीचे की तरफ सूख (शीर्ष मरण) रहा है तो कैसे करें प्रबंधित?

-प्रोफेसर (डॉ) एसके सिंह

आम में शीर्ष मरण (डाइबैक) एक ऐसी स्थिति है जिसमें शाखाओं की क्रमिक मृत्यु होती है, टहनियां ऊपर से नीचे की तरफ सुखना प्रारम्भ करती है, जिसके परिणामस्वरूप आम के पेड़ के समग्र स्वास्थ्य में गिरावट आती है और लगातार अनुकूल वातावरण मिलने पर पेड़ अंततः मार जाता है। विभिन्न कारक मृत्यु में योगदान करते हैं, जिनमें फंगल संक्रमण, कीट संक्रमण, पोषण संबंधी कमी, पर्यावरणीय तनाव और अनुचित कृषि कार्य शामिल हैं। डाइबैक को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए, कल्चरल (कृषि कार्य), रासायनिक और जैविक नियंत्रण रणनीतियों का समायोजन आवश्यक है।

आम के पेड़ों में शीर्ष मरण (डाइबैक) होने के प्रमुख कारण

1. फंगल संक्रमण

रोगजनक कवक, जैसे कि कोलेटोट्राइकम ग्लियोस्पोरियोइड्स, आम के पेड़ों पर आक्रमण कर सकते हैं, जिससे डाईबैक होता है।इसमें सबसे पहले पत्तियों पर गहरे चाकलेटी रंग के धब्बे बनते है जो अनुकूल वातावरण मिलने पर ये धब्बे बड़े धब्बों में बदल जाते है, जिससे पत्तियां पीली पड़ जाती है एवं झड़ जाती है रहनी नंगी हो जाती है एवं ऊपर से नीचे की तरफ सूखना प्रारम्भ करके धीरे धीरे पूरा पेड़ सूख जाता है।

2. कीट संक्रमण

तना बेधक जैसे कीट शाखाओं को कमजोर करने में योगदान करते हैं, जिससे शाखाएं मरने लगती हैं।

3. पोषण संबंधी कमी

आवश्यक पोषक तत्वों, विशेष रूप से पोटेशियम और मैग्नीशियम की कमी, आम के पेड़ों को मरने के प्रति अधिक संवेदनशील बनाती है।

4. पर्यावरणीय तनाव

प्रतिकूल पर्यावरणीय स्थितियाँ, जैसे सूखा या अत्यधिक तापमान, मृत्यु को बढ़ा सकती हैं।

5. अनुचित कृषि कार्य

अपर्याप्त कटाई छंटाई, सिंचाई, या खराब मिट्टी प्रबंधन डाईबैक के विकास में योगदान करता है।

आम का पेड़ ऊपर से नीचे की तरफ सूख (शीर्ष मरण) रहा है तो कैसे करें प्रबंधित?

निवारक उपाय

निम्नलिखित निवारक उपाय करके शीर्ष मरण रोग को प्रबंधित करने में सहायता मिलती है जैसे..

1. उचित कटाई छंटाई

नियमित और सही छंटाई एक संतुलित छत्र बनाए रखने में मदद करती है, जिससे मरने का खतरा कम हो जाता है।

2. उचित सिंचाई

लगातार और पर्याप्त पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करने से तनाव और निर्जलीकरण को रोकने में मदद मिलती है।

3. मृदा प्रबंधन

उचित मृदा पोषण और पीएच प्रबंधन को लागू करने से एक स्वस्थ पेड़ को बढ़ावा मिलता है।

4. मल्चिंग

पेड़ के आधार के चारों ओर मल्चिंग करने से नमी बनाए रखने में मदद मिलती है और मिट्टी का तापमान नियंत्रित रहता है।

रासायनिक नियंत्रण

शीर्ष मरण रोग को समय पर प्रबंधित नही किया गया तो पेड़ कुछ दिन के बाद मर जाएगा। इसे प्रबंधित करने के लिए निम्नलिखित कवकनाशी का छिड़काव करने के साथ साथ निम्नलिखित उपाय करने चाहिए

1. कवकनाशी छिड़काव (स्प्रे)

कवकनाशी लगाने से डाइबैक से जुड़े फंगल संक्रमण को नियंत्रित करने में मदद मिल सकती है। रोगग्रस्त हिस्से को तेज चाकू या सीकेटीयर से काटने के उपरांत उसी दिन साफ @ 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए , दस दिन के बाद ब्लाइटॉक्स @ 3 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए। रोग की उग्रता में कमी नहीं होने पर उपरोक्त घोल से एक बार पुनः छिड़काव करना चाहिए। पेड़ के चारो तरफ ,जमीन की सतह से 5–5.30 फीट की ऊंचाई तक बोर्डो पेस्ट से पुताई करनी चाहिए। प्रश्न यह उठता है कि बोर्डो पेस्ट बनाते कैसे है। यदि बोर्डो पेस्ट से साल में दो बार प्रथम जुलाई–अगस्त एवम् दुबारा फरवरी–मार्च में पुताई कर दी जाय तो अधिकांश फफूंद जनित बीमारियों से बाग को बचा लेते है। इस रोग के साथ साथ शीर्ष मरण, आम के छिल्को का फटना इत्यादि विभिन्न फफूंद जनित बीमारियों से आम को बचाया जा सकता है। इसका प्रयोग सभी फल के पेड़ो पर किया जाना चाहिए।

बोर्डो पेस्ट बनाने के लिए आवश्यक सामान

कॉपर सल्फेट, बिना बुझा चुना (कैल्शियम ऑक्साइड), जूट बैग, मलमल कपड़े की छलनी या बारीक छलनी, मिट्टी/प्लास्टिक/ लकड़ी की टंकी एवं लकड़ी की छड़ी।

1. कॉपर सल्फेट 1 किलो ग्राम
2. बिना बुझा चूना –1 किलो
3. पानी 10 लीटर

बनाने की विधि

पानी की आधी मात्रा में कॉपर सल्फेट। चूने को बूझावे, शेष आधे पानी में मिलावे इस दौरान लकड़ी की छड़ी से लगातार हिलाते रहे।

ध्यान रखने योग्य बातें

- किसानो को बोर्डो पेस्ट का घोल तैयार करने के तुरंत बाद ही इसका उपयोग बगीचे में कर लेना चाहिए।
- कॉपर सलफेट का घोल तैयार करते समय किसानो लोहें / गैल्वेनाइज्ड बर्तन को काम में नहीं लेना चाहिए।
- किसानो को यह ध्यान रखना हो की वे बोर्डो पेस्ट को किसी अन्य रसायन या पेस्टिसाइड के साथ में इसका इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

2. कीटनाशक

कीटनाशकों के लक्षित उपयोग से उन कीटों के संक्रमण को नियंत्रित किया जा सकता है जो मृत्यु में योगदान करते हैं।

3. पोषक तत्वों की खुराक

पोषक तत्वों की कमी को दूर करने के लिए संतुलित उर्वरक प्रदान करना निवारक देखभाल के लिए महत्वपूर्ण है।यदि आप का पेड़ 10 वर्ष या 10 वर्ष से ज्यादा है तो उसमे 500–550 ग्राम डाइअमोनियम फॉस्फेट ,850 ग्राम यूरिया एवं 750 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश एवं 25 किग्रा खूब अच्छी तरह से सडी गोबर की खाद पौधे के चारों तरफ मुख्य तने से 2 मीटर दूर रिंग बना कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिए।

जैविक नियंत्रण

1. प्राकृतिक शिकारी: प्राकृतिक शिकारियों की उपस्थिति को प्रोत्साहित करने से कीटों की आबादी को नियंत्रित करने में मदद मिलती है।

2. लाभकारी सूक्ष्मजीव: लाभकारी सूक्ष्मजीवों का प्रयोग रोगजनक कवक को दबा सकता है।

सारांश

अंत में, आम के पेड़ों में डाईबैक के प्रबंधन के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है जिसमें निवारक उपाय, शीघ्र पता लगाना, प्रतिक्रियाशील कार्रवा. ई और दीर्घकालिक स्थिरता अभ्यास शामिल हैं। कल्चरल, रासायनिक और जैविक नियंत्रण रणनीतियों को एकीकृत करके, किसान आने वाली पीढ़ियों के लिए आम के बागों के स्वास्थ्य और उत्पादकता को सुनिश्चित करते हुए, डाइबैक के प्रभाव को कम कर सकते हैं।

गुरलीन जमीन के छोटे से टुकड़े पर स्ट्रॉबेरी की खेती कर मिशाल बन चुकी हैं

गुरलीन का कहना है, कि उन्होंने ऑनलाइन ही स्ट्रॉबेरी की खेती करना सीखा था। गुरलीन के इस परिश्रम को देखते हुए उनके पिता ने उन्हें सपोर्ट किया। गुरलीन ने बताया कि आरंभ में उन्होंने छोटे से भूमि के टुकड़े से इसकी शुरुआत की थी। परंतु, आज वह ढेड एकड़ भूमि में इसका उत्पादन कर रही हैं।भारत में युवा पीढ़ी की सोच खेती-किसानी के प्रति आहिस्ते-आहिस्ते परिवर्तित हो रही है। बतादें, कि ऐसे बहुत सारे उदाहरण हैं, जहां युवाओं ने शानदान वेतन वाली नौकरी छोड़ खेती का मार्ग पकड़ा है। केवल इतना ही नहीं बहुत सारे युवा खेती कर लाखों की आमदनी कर रहे हैं। कुछ इस प्रकार की ही कहानी है, उत्तर प्रदेश-झांसी की मूल निवासी गुरलीन चावला की, जिन्होंने युवाओं के लिए एक नजीर प्रस्तुत की है। गुरलीन आज सफल ढ़ंग से खेती कर लाखों की आमदनी कर रही हैं। अपने परिश्रम की बदौलत गुरलीन एक बंजर भूमि के टुकड़े से सोना उगल रही हैं। जी हां, आपने सही सुना है, जब गुरलीन ने खेती का प्रारंभ किया था, तब उनके पास एक बंजर भूमि का टुकाड़ा था, जिसे उन्होंने कृषि करने लायक बनाया। वहीं, आज उसी भूमि पर वह अपनी फसल उगा रही हैं।

गुरलीन का सफर लॉकडाउन के दौरान चालू हुआ था

गुरलीन का कहना है, कि अपनी पढ़ाई संपन्न करने के पश्चात वह कुछ हटकर करना चाहती थी, जिस वजह से उन्होंने बंजर भूमि पर स्ट्रॉबेरी की खेती आरंभ की है। उन्होंने अपने सपनों को पूर्ण करने के लिए दिन-रात परिश्रम किया। गुरलीन ने बताया कि उन्हें इसका आइडिया लॉकडाउन के समय आया, जब वह झांसी में अपने घर पर थीं। उन्हें स्ट्रॉबेरी बेहद पसंद है। परंतु, लॉकडाउन के दौरान स्ट्राबेरी न मिलने पर उन्होंने घर पर ही इसे उगाने के विषय में सोचा। गुरलीन ने बतौर प्रयोग पहले घर में कुछ गमलों में इसके बीज रोपे। प्रयोग सफल रहने पर उन्होंने अपने पिता को इसकी जानकारी प्रदान की एवं उनके फॉर्म हाउस में बंजर पड़ी भूमि पर इसकी खेती चालू कर ड़ाली। गुरलीन ने बताया कि आरंभिक समय में उन्होंने छोटे सी भूमि से इसका प्रारंभ किया था। वहीं, आज वह ढेड एकड़ भूमि में इसका उत्पादन कर रही हैं।

गुरलीन के कार्य की PM मोदी भी सराहना कर चुके हैं

गुरलीन ने बताया कि उन्होंने झांसी ऑर्गेनिक्स नाम से एक वेबसाइट भी तैयार कर रखी है। जहां लोग ऑनलाइन माध्यम से आर्डर कर सकते हैं। गुरलीन स्ट्रॉबेरी की खेती के साथदृसाथ विभिन्न सब्जियों को भी उगा रही हैं। गुरलीन का कहना है, कि उन्होंने ढेड एकड़ भूमि से खेती का आरंभ किया था। वहीं, आज वह 7 एकड़ भूमि पर खेती कर रही हैं। झांसी में स्ट्रॉबेरी की सफलतापूर्वक खेती करने के पश्चात गुरलीन प्रशासन एवं सरकार की सराहना भी प्राप्त कर चुकीं हैं। गुरलीन प्रमुख तौर पर तब चर्चाओं में आईं जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात के 73वें संस्करण में उनका जिक्र किया एवं उनकी जमकर तारीफ की है। गुरलीन का कहना है, कि वह आज सफल ढ़ंग से खेती कर लाखों की आमदनी कर रही हैं।

जाड़े के मौसम में गुलाब को रोगों से कैसे बचाएं?

-प्रोफेसर (डॉ) एसके सिंह

गुलाब का हमारे लिए क्या महत्व है यह बताने की अवश्यकता नही है। गुलाब विचारों को अभिवक्त करने का सर्वोत्तम माध्यम है। विभिन्न कलर के गुलाब विभिन्न तरह के विचारों को व्यक्त करने का सर्वोत्तम माध्यम है। गुलाब जाड़े के मौसम में स्वस्थ रहे इसका ध्यान रखना अत्यावश्यक है।सर्दी के मौसम में गुलाब के पौधों में तरह तरह की चुनौतियाँ आती है, क्योंकि ठंड और नमी की स्थिति विभिन्न बीमारियों के लिए अनुकूल वातावरण बनाती है। सफल प्रबंधन के लिए निवारक उपायों के साथ साथ रोग विशेष को लक्षित करके उपचारों की आवश्यकता होती है। आइए जानते है सर्दियों के मौसम में गुलाब को प्रभावित करने वाली कुछ प्रमुख बीमारियों के बारे में एवं उनके प्रबंधन रणनी. तियों के बारे में

1. ख्स्ता फफूंदी (पाउडरी मिल्डीव)

ख्स्ता फफूंदी एक कवक रोग है जो ठंडी, शुष्क परिस्थितियों में पनपता है। सर्दियों में नमी के स्तर में उतार–चढ़ाव के कारण यह समस्या और बढ़ जाती है। ख्स्ता फफूंदी का प्रबंधन करने के लिए सुप्त मौसम के दौरान संक्रमित पौधे के हिस्सों की कटाई छटाई करके उसे जला दें। तत्पश्चात घुलनशील सल्फर @2 ग्राम प्रति लीटर पानी में या नीम तेल आधारित कवकनाशी @5 मिली लीटर प्रति लीटर पानी में घोलकर 10दिन के अंतराल पर दो छिड़काव करके इस रोग को आसानी से प्रबंधित कर सकते है।

इसके अलावा बेहतर वायु संचार के लिए पौधों के बीच उचित दूरी सुनिश्चित करें।

2. काला धब्बा

ब्लैक स्पॉट गुलाब की एक आम बीमारी है जो डिप्लोकार्पोन रोजे कवक के कारण होती है। यह ठंडी, नम स्थितियों में ज्यादा पनपता है। इस रोग के प्रबंधन रणनीतियों में शामिल हैंरू

सफाई: सर्दी के मौसम में होने वाले बीजाणुओं को कम करने के लिए गिरी हुई पत्तियों और मलबे को हटा दें।

कवकनाशी: क्लोरोथालोनिल @2 ग्राम प्रति लीटर या नीम तेल युक्त कवकनाशी @5 मिलीलीटर प्रति लीटर में घोलकर छिड़काव करें आवश्यकतानुसार 10 दिन के बाद दूसरा छिड़काव करें।

पानी देना: पत्तियों का गीलापन कम करने के लिए पौधों को आधार पर पानी दें।

3. बोट्राइटिस ब्लाइट

बोट्रीटिस सिनेरिया कवक के कारण होने वाला बोट्री. टिस ब्लाइट सर्दियों में कुछ ज्यादा ही समस्याग्रस्त हो जाता है। प्रमुख प्रबंधन प्रथाओं में शामिल हैं..

कटाई छंटाई: मृत या संक्रमित पौधे सामग्री को काट कर हटा दें।

वायु परिसंचरण: छंटाई छटाई और उचित दूरी द्वारा वायु प्रवाह में सुधार करें।

ओवरहेड वॉटरिंग से बचें: बीमारी के प्रसार को कम करने के लिए पत्तियों पर पानी कम से कम डालें।

4. सर्दी में चोट

ठंडा तापमान सर्दियों में चोट का कारण बन सकता है, जिससे गुलाब का समग्र स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। प्रबंधन में शामिल हैं

मल्चिंग: गुलाब के आधार के चारों ओर गीली घास की एक परत लगाएं।

शीतकालीनकरण: पौधे को सुप्तावस्था में लाने में मदद करने के लिए पतझड़ के अंत में पानी देना धीरे–धीरे कम करें।

हार्डी किस्मों का चयन: ठंडे तापमान के प्रति प्रति. रोधी गुलाब की किस्मों का चयन करें।

5. कैंकर रोग

सर्कोस्पोरा और नेक्ट्रिया कैंकर जैसी कैंकर बीमा. रियाँ सर्दियों के दौरान गुलाब को प्रभावित कर सकती हैं। प्रबंधन में शामिल हैं..

कटाई छंटाई: प्रभावित क्षेत्र के नीचे से काटकर संक्रमित शाखाओं को हटा दें।

कवकनाशी: रोकथाम के लिए तांबा आधारित कवकनाशी जैसे ब्लाइटॉक्स 50@3 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

स्वच्छता: बीमारी को फैलने से रोकने के लिए छंटाई करने वाले औजारों को साफ करें।

6. एफिड संक्रमण

एफिड्स अभी भी सर्दियों में सक्रिय हो सकते हैं, खासकर हल्के मौसम में। नियंत्रण उपायों में शामिल हैं..

लाभकारी कीट: लेडीबग जैसे प्राकृतिक शिकारियों को बढ़ावा दें।

बागवानी तेल: नीम का तेल या कीटनाशक का प्रयोग करें।

नियमित निरीक्षण: एफिड कॉलोनियों की निगरानी करें और त्वरित कार्रवाई करें।

सारांश

सर्दियों में गुलाब की बीमारियों के सफल प्रबंधन के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। कटाई छंटाई और उचित दूरी जैसी कल्चरल (कृषि) से लेकर कवकनाशी और कीटनाशकों के लक्षित उपयोग तक, एक व्यापक रणनीति आवश्यक है। सर्दियों की विशिष्ट चुनौतियों को समझकर और सक्रिय उपायों को लागू करके, माली यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि उनके गुलाब सबसे ठंडे महीनों में भी फलते–फूलते रहें। अंत में, सर्दियों में रोग प्रबंधन के लिए एक सक्रिय और एकीकृत दृष्टिकोण आपके गुलाब के बगीचे के स्वास्थ्य और सुंदरता को बनाए रखने में मदद करेगा। इन रणनीतियों को लागू करके, आप पूरे सर्दियों के मौसम में जीवंत और रोग–मुक्त गुलाब का आनंद ले सकते हैं।

कृषि यंत्रों की खरीदी पर सरकार देगी 50% से 80% अनुदान, जानें इसकी आवेदन प्रक्रिया के बारे में

सरकार समय समय पर किसानों के लिए नयी योजना लेकर आती रहती है। किसानों की आर्थिक स्थिति मजबूत करने की दिशा में सरकार निरंतर प्रयाश कर रही है। अब हरियाणा सरकार प्रदेश के किसानों के लिए नई योजना लेकर आयी है। हरियाणा सरकार ने राज्य के किसानों को कृषि उपकरण खरीदने पर व्यक्तिगत श्रेणी में 50% अनुदान देने की घोषणा की है, जबकि सहकारी समिति एफपीओ और पंचायतों ने किसानों के लिए कस्टम हायरिंग केंद्र बनाने पर 80% अनुदान दिया है। इस योजना को सरकार ने खेती में आधुनिक उपकरणों का उपयोग करने के लिए शुरू किया है। किसानों को इस योजना का लाभ मिलेगा, जिससे उनकी आय में वृद्धि होगी, क्योंकि वे नवीनतम उपकरणों को आसानी से खरीद सकेंगे। आज यहां आप इस योजना से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी के बारे में विस्तार से जानेंगे।

हरियाणा कृषि यंत्र अनुदान योजना के लाभ एवं विशेषताएं

सरकार हरियाणा राज्य के किसानों को इस योजना के तहत कृषि उपकरण खरीदने पर सब्सिडी देगी। इस योजना के अंतर्गत किसानों को 50 प्रतिशत से 80 प्रतिशत की अनुदान राशि मिलेगी। किसानों को आधुनिक कृषि उपकरणों से लाभ मिलेगा। राज्य के किसानों की आर्थिक हालत भी सुधरेगी। राज्य के किसानों को आधुनिक कृषि उपकरणों का उपयोग करने से उत्पादन में भी वृद्धि होगी।

हरियाणा कृषि अनुदान योजना के लिए पात्रता एवं आवश्यक दस्तावेज

योजना में आवेदन करने वाले किसान हरियाणा के स्थायी निवासी होने चाहिए। आवेदन करने वाले किसान के पास कृषि योग्य भूमि होनी बहुत आवश्यक है। साथ ही, इसके लिए किसान भाइयों के पास पैन कार्ड, बैंक पासबुक, परिवार पहचान पत्र, शपथ पत्र, पटवारी रिपोर्ट, मोबाइल नंबर, ट्रैक्टर आरसी जैसे महत्वपूर्ण दस्तावेजों का होना अनिवार्य है।

हरियाणा कृषि यंत्र अनुदान योजना के तहत किन यंत्रो पर मिलेगी सब्सिड़ी

हरियाणा कृषि यंत्र अनुदान योजना के अंतर्गत हरियाणा सरकार विभिन्न कृषि यंत्रो पर अनुदान देने का ऐलान किया है। इस योजना के तहत मिलने वाले यंत्रो की सूची में स्ट्रॉ बेलर, राइस ड्रायर, फर्टिलाइजर ब्रॉडक. ास्ट, लेजर लैंड लेवलर, ट्रैक्टर ड्रिवन स्प्रे, पैडी ट्रांसप्लांटर, है रेक, मोबाइल श्रेडर। रोटावेटर, रीपर बाइंडर, ट्रैक्टर ड्राइविंग पाउडर वीडर आदि यंत्र सम्मिलित हैं।

हरियाणा कृषि यंत्र अनुदान योजना के लिए आवेदन प्रक्रिया

इस योजना का लाभ लेने के लिए पात्र किसानों को आवेदन करना होगा, हरियाणा कृषि यंत्र अनुदान योजना में आवेदन करने के लिए सबसे पहले आपको आधिकारिक वेबसाइट agriharyana-gov-in पर जाना होगा। इसके बाद आपके सामने होम पेज खुलेगा,होम पेज पर आपको Farmers Corner वाले ऑप्शन पर क्लिक करके। Apply For Agriculture Scheme के ऑप्शन पर क्लिक कर देना है। इसके बाद आपके सामने एग्रीकल्चर की सभी स्कीम्स आ जाएगी। इसमें आपको हरियाणा कृषि यंत्र सब्सिडी योजना पर क्लिक कर देना है। जैसे ही आप अपनी स्कीम के सामने View वाले का ऑप्शन पर क्लिक करेंगे आपके सामने एक नया पेज खुलेगा। इसमें आपको हेयर टू Register के ऑप्शन पर क्लिक करना होगा। अब आपको पूछी गई जानकारी भरनी है। अब आवश्यक दस्तावेजों को अपलोड करना होगा। हरियाणा कृषि यंत्र अनुदान योजना के लिए ऑनलाइन आवेदन करने के लिए आपको फॉर्म सबमिट करना होगा, पूरी जानकारी सही–सही देना होगा। इस प्रक्रिया को को पूरा करने के बाद आपका आवेदन हो संपन्न हो जाऐगा।

John Deere 5105 4WD: जॉन डियर का 40 HP में बेहतरीन ट्रेक्टर ज्यादा माइलेज में बेहतरीन प्रदर्शन करता है

खेती की लागत को कम करने के लिए किसान भाई एक शक्तिशाली ट्रैक्टर खरीदने का विचार कर रहे हैं तो जॉन डियर 5105 4WD ट्रैक्टर एक बेहतरीन विकल्प हो सकता है। यहाँ 40 HP पावर वाला इंजन है जो फ्यूल एफिशिएंट तकनीक का उपयोग करता है। इस इंजन की माइलेज 2100 आरपीएम के साथ आती है। भारत में कृषकों के लिए ट्रैक्टर, हार्वेस्टर तथा विभिन्न अन्य कृषि यंत्रों को निर्मित करने के लिए जॉन डियर कंपनी को पहचाना जाता है। कंपनी के ट्रैक्टर आपको आधुनिक तकनीक के साथ उपलब्ध हो जाते हैं, जो खेती के खर्चे को घटाने का कार्य करती है। यदि आप भी खेतीबाड़ी के खर्चे को घटाने के लिए एक शक्तिशाली ट्रैक्टर खरीदने की तैयारी कर रहे हैं, तो आपके लिए जॉन डियर 5105 4WD ट्रैक्टर शानदार विकल्प हो सकता है। बतादें, कि कंपनी के इस ट्रैक्टर में 40 HP पावर उत्पन्न करने वाला शक्तिशाली इंजन आता है। कंपनी ने अपने इस ट्रैक्टर को फ्यूल एफिशिएंट तकनीक के साथ तैयार किया है, जो 2100 आरपीएम के साथ शानदार माइलेज प्रदान करता है।

जॉन डियर 5105 4WD की विशेषताएं क्या–क्या हैं

बता दें, कि इस जॉन डियर ट्रैक्टर में आपको 2900 सीसी क्षमता वाला 3 सिलेंडर में Coolant cooled with overflow reservoir Naturally Aspirated इंजन उपलब्ध हो जाता है, जो 40 HP पावर उत्पन्न करता है। इस ट्रैक्टर में Dry Type, Dual element एयर फिल्टर आता है। साथ ही, इसका इंजन 2100 आरपीएम पैदा करती है।

इस जॉन डियर ट्रैक्टर की अधिकतम पीटीओ पावर 34.4 HP है। कंपनी ने अपने इस 5105 ट्रैक्टर की वजन उठाने की क्षमता 1600 किलोग्राम निर्धारित की गई है। साथ ही, यह 1810 किलोग्राम के कुल वजन के साथ आता है। कंपनी ने अपने इस ट्रैक्टर को 3410 MM लंबाई तथा 1750 MM चौड़ाई के साथ 1970 MM व्हीलबेस में तैयार किया है। इस जॉन डियर ट्रैक्टर का मिनीमम टर्निंग रेडियरस 2900 MM निर्धारित किया गया है।

जानें जॉन डियर 5105 4WD की कीमत तथा वारंटी के बारे में

भारत में जॉन डियर 5105 4WD ट्रैक्टर की एक्स शोरूम कीमत 7.90 लाख से 8.50 लाख रुपये तय की गई है। इस 5105 4WD ट्रैक्टर की ऑन रोड कीमत भिन्न-भिन्न राज्यों में वहां के आरटीओ पंजी. करण और रोड टैक्स के चलते भिन्न हो सकती है।

जानें महिंद्रा 415 युवो टेक+ 4WD की विशेषताएं, कीमत और वारंटी के बारे में

आप भी खेती को बेहतर बनाने के लिए शक्तिशाली महिंद्रा ट्रैक्टर खरीदने की योजना बना रहे हैं, तो आपके लिए महिंद्रा 415 युवो टेक+ 4WD ट्रैक्टर शानदार विकल्प हो सकता है। कंपनी ने अपने इस ट्रैक्टर को अग्रणी तकनीक के साथ कृषकों के लिए किफायती कीमत पर प्रस्तुत किया है। इसमें 42 हॉर्स पावर उत्पन्न करने वाला दमदार इंजन देखने को मिल जाता है।

भारत में युवो सीरीज वाले ट्रैक्टर आपको शानदार माइलेज एवं ज्यादा मजबूती के साथ दिखने को मिल जाते हैं। महिंद्रा ट्रैक्टरों पर कृषकों का सदैव ही भरोसा रहा है। अगर आप भी खेती को आसान बनाने के लिए शक्तिशाली महिंद्रा ट्रैक्टर खरीदने की योजना बना रहे हैं, तो आपके लिए महिंद्रा 415 युवो टेक+ 4WD ट्रैक्टर शानदार विकल्प हो सकता है। महिंद्रा कंपनी ने अपने इस ट्रैक्टर को अग्रणी तकनीक के साथ कृषकों के लिए किफायती भाव पर प्रस्तुत किया है। बतादें, कि इस महिंद्रा ट्रैक्टर में आपको 42 हॉर्स पावर पैदा करने वाला दमदार इंजन दिखने को मिल जाता है। महिंद्रा कंपनी का यह ट्रैक्टर माइलेज और पावर का बेजोड़ संगम है।

जानें महिंद्रा 415 युवो टेक+ 4WD की विशेषताएं क्या-क्या हैं ?

महिंद्रा 415 युवो टेक+ ट्रैक्टर में आपको M ZIP & 3 Cylinder Parallel Cooling इंजन दिखने को मिल जाता है, जो 42 HP पावर के साथ 183 NM की अधि. कतम टॉर्क उत्पन्न करता है। कंपनी के इस ट्रैक्टर में क्तल ज्लचम एयर फिल्टर भी प्रदान किया गया है और इसका इंजन 2000 उत्पन्न करता है। इस महिंद्रा ट्रैक्टर की अधिकतम पीटीओ 38.5 पावर है। महिंद्रा कंपनी ने अपने इस पावरफुल ट्रैक्टर की लोडिंग क्षमता 1700 किलोग्राम है। महिंद्रा कंपनी ने अपने इस ट्रैक्टर को सशक्त बॉडी के साथ तैयार किया है। इसका लुक बेहद आकर्षक रखा गया है, जिससे पहली नजर में देखने वाले ज्यादातर किसान इस ट्रैक्टर को खरीदने का विचार बना लेते हैं।

जानें महिंद्रा 415 युवो टेक+ 4WD की कीमत एवं वारंटी के बारे में

भारत में महिंद्रा 415 युवो टेक+ 4WD ट्रैक्टर की एक्स शोरूम कीमत 7 लाख से 7.30 लाख रुपये निर्धारित की गई है। इस 415 युवो टेक+ 4WD ट्रैक्टर की ऑन रोड कीमत समस्त राज्यों में आरटीओ रजिस्ट्रेशन तथा रोड टैक्स के चलते भिन्न-भिन्न हो सकती है। कंपनी अपने इस महिंद्रा 415 युवो टेक+ 4WD ट्रैक्टर के साथ 6 वर्ष तक की शानदार वारंटी प्रदान कर रही है।

मौसमी व अन्य कृषि सुझाव

जाड़े में गेंहू की वानस्पतिक वृद्धि की अवस्था में यदि पत्तियां पीली हो रही तो परेशान न हो, सही कारण जानकर, करें प्रबंधित

गेहूं की फसल को रबी में लगाते है ,इसलिए स्वाभाविक तौर पर यह ठंडा तापमान को पसंद करने वाली फसल है। गेंहू की अच्छी वानस्पतिक वृद्धि के लिए ठंडक का होना आवश्यक है। लेकिन अत्यधिक ठंडक की वजह से पहली सिंचाई एवं कही कही पर दूसरी सिंचाई की वजह से तो कही कही पर सिंचाई का पानी लग जाने की वजह से गेंहू की नीचे की पत्तियां पीली हो रही है जिसकी वजह से गेंहू उत्पादक किसान बहुत चिंतित है, उन्हें समझ में नहीं आ रहा है की आखिर इसका सही कारण क्या है। सही जबाब नही मिलने की वजह किसान चिंतित है।

यह जानना बहुत आवश्यक है की गेंहू की निचली पत्तियां आखिर पीली क्यों हो रही है। इसके पीछे का विज्ञान क्या है? सर्दी का मौसम मिट्टी में सूक्ष्मजीवी गतिविधियों पर बहुत ही महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है, जिससे पौधों द्वारा पोषक तत्व ग्रहण करने पर असर पड़ता है। सर्दियों के मौसम में सूक्ष्मजीव जीवन और पौधों के पोषक तत्वों के अधिग्रहण के बीच यह जटिल संबंध पारिस्थितिक तंत्र की पारिस्थितिक गतिशीलता को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सर्दियों में तापमान जब बहुत कम हो जाता है तो इस पर्यावरणीय कारक का मिट्टी में सूक्ष्मजीवो पर गहरा प्रभाव पड़ता है। बैक्टीरिया और कवक जैसे सूक्ष्मजीव, पोषक तत्व चक्र और मिट्टी की उर्वरता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

उनकी मेटाबॉलिज्म (चयापचय) प्रक्रियाएं तापमान से सीधे जुड़ी हुई हैं, और जैसे ही सर्दी शुरू होती है, समग्र माइक्रोबियल गतिविधि कम हो जाती है। सर्दियों के दौरान माइक्रोबियल गतिविधि में कमी का एक प्राथमिक कारण मेटाबॉलिज्म (चयापचय) दर पर कम तापमान का प्रभाव है।

सूक्ष्मजीव, अन्य सभी जीवित जीवों की तरह, अपने चयापचय कार्यों के लिए अनुकूल विशिष्ट तापमान सीमाओं के भीतर काम करते हैं। जैसे–जैसे तापमान गिरता है, माइक्रोबियल चयापचय प्रक्रियाएं धीमी हो जाती हैं, जिससे उनकी समग्र गतिविधि में कमी आती है। यह मंदी प्रमुख माइक्रोबियल कार्यों को प्रभा. वित करती है, जिसमें कार्बनिक पदार्थों का अपघटन और पोषक तत्वों का खनिजकरण शामिल है। कार्बनिक पदार्थों का अपघटन सूक्ष्मजीवों द्वारा सुगम की जाने वाली एक मौलिक प्रक्रिया है, जो जटिल कार्बनिक यौगिकों को सरल रूपों में तोड़ती है। यह अपघटन नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम के साथ साथ सूक्ष्म पोषक तत्वों जैसे आवश्यक पोषक तत्वों को मिट्टी में छोड़ता है, जिससे वे पौधों के ग्रहण के लिए उपलब्ध हो पाते हैं। हालाँकि, सर्दियों के दौरान, इस प्रक्रिया की दक्षता में भारी कमी आ जाती है, और अपघटन दर कम हो जाती है।

कार्बनिक पदार्थों के अपघटन में यह मंदी सीधे तौर पर पौधों के लिए पोषक तत्वों की उपलब्धता को प्रभावित करती है। इसके अलावा, ठंडे तापमान में रोगाणुओं द्वारा पोषक तत्वों का खनिजकरण भी बाधित होता है।

सूक्ष्मजीव पोषक तत्वों के कार्बनिक रूपों को अकार्बनिक रूपों में परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जिन्हें पौधे आसानी से अवशोषित करते हैं। इस खनिजकरण प्रक्रिया में एंजाइमेटिक गतिविधियाँ शामिल होती हैं, और ये एंजाइम विशिष्ट तापमान सीमाओं के भीतर बेहतर ढंग से कार्य करते हैं। सर्दियों में, ठंडा तापमान एंजाइमेटिक गतिविधि को बाधित करता है, जिससे पोषक तत्वों के खनिज. करण की दर कम हो जाती है। नतीजतन, पौधों को मिट्टी से आवश्यक पोषक तत्व प्राप्त करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जबकि सर्दियों के दौरान समग्र सूक्ष्मजीव गतिविधि कम हो जाती है।

सर्दियों के मौसम में अत्यधिक ठंडक की वजह से गेंहू के खेत में भी माइक्रोबियल गतिविधि कम हो जाती है,जिसके कारण से नाइट्रोजन का उठाव (न्चजांम) कम होता है , गेंहू के पौधे अपने अंदर के नाइट्रोजन को उपलब्ध रूप में नाइट्रेट में बदल देता है। नाइट्रोजन अत्यधिक गतिशील होने के कारण निचली पत्तियों से ऊपरी पत्तियों की ओर चला जाता है, इसलिए निचली पत्तियाँ पीली हो जाती हैं। संतोष की बात यह है की यह कोई बीमारी नहीं है ये पौधे समय के साथ ठीक हो जाएंगे। यदि समस्या गंभीर हो तो 2 प्रतिशत यूरिया (20 ग्राम यूरिया प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें) का छिड़काव करने की सलाह दिया जा सकता है। अत्यधिक ठंढक से गेंहू एवम अन्य फसलों को बचाने के लिए हल्की सिंचाई करनी चाहिए, यथासंभव खेतों के किनारे (मेड़) आदि पर धुआं करें। इससे पाला का असर काफी कम पड़ेगा। पौधे का पत्ता यदि झड़ रहे हो या पत्तों पर धब्बा दिखाई दे तो डायथेन एम–45 नामक फफुंदनाशक की 2 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करने से पाला का असर कम हो जाता है। इससे फसल को नुकसान होने से बचाया जा सकता है।

फसलीय उत्पादन को प्रमुख रूप से प्रभावित करने वाले सामाजिक एवं भौतिक कारक क्या हैं ?

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि किसी खास भूभाग या क्षेत्र में बिना किसी समस्या के उत्पादित की जा सकने वाली फसलों के प्रकार को तय करने में भौतिक कारक काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मेरीखेती के इस लेख में हम आपको कुछ भौतिक व सामाजिक महत्वपूर्ण कारकों से अवगत कराऐंगे।

जलवायु का स्वरूप: जलवायु एक अत्यंत महत्वपूर्ण भौतिक कारकों में से एक है। विभिन्न फसलों को विशिष्ट तापमान सीमा, वर्षा पैटर्न और सूर्य के प्रकाश के स्तर की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, चावल प्रचुर वर्षा और गर्म तापमान वाले क्षेत्रों में पनपता है, जबकि गेहूं ठंडी और शुष्क परिस्थितियों को पसंद करता है।

मृदा की गुणवत्ता: मिट्टी की संरचना, उर्वरकता और पीएच फसल के विकास को काफी हद तक प्रभावित करते हैं। उदाहरण के तौर पर कुछ फसलें, जैसे कि आलू समुचित जल निकासी वाली अम्लीय मृदा में पनपती हैं। वहीं, बाकी फसलें जैसे कि सोयाबीन को पनपने में प्रमुख रूप से क्षारीय मृदा उपयुक्त हैं।

जमीन का ढ़ांचा: भूमि की ऊंचाई एवं ढलान के समान कारकों सहित परिदृश्य, जल निकासी और सूर्य की रोशनी के जोखिम को काफी प्रभावित करता है। पहाड़ी इलाके अंगूर के बागानों के लिए काफी अनुकूल हो सकते हैं। वहीं, एकसार मैदान बड़े स्तर पर गेहूं के खेतों के लिए उपयुक्त होते हैं।

प्राकृतिक आपदाऐं: फसलों की वृद्धि के लिए प्राकृतिक समस्याऐं जैसे कि सूखा, तूफान, बाढ़ और सुनामी संवेदनशील परिस्थितियां हैं। ये समस्त प्राकृतिक आपदाऐं फसलीय उपज को संकुचित या एक सीमा में बाध्य कर सकती हैं। टिकाऊ कृषि के लिए इन आपदाओं के लिए लचीलापन काफी महत्वपूर्ण है।

सामाजिक पर्यावरण कारक कौन – कौन से हैं

मानव जनित कुछ अहम गतिविधि जिसका फसलीय उत्पादन पर प्रत्यक्ष तोर पर प्रभाव पड़ता है। ऐसे समस्त कारकों को सामाजिक वातावरण के अंतर्गत शम्मिलित किया है।

फसलीय पैदावार को प्रभावित करने वाले आर्थिक कारक

कृषि क्षेत्र पर आर्थिक स्थिति विशेष रूप से असर डालती हैं। कृषकों को उपकरण, प्रौद्योगिकी एवं बीज खरीदने के लिए वित्तीय संसाधनों तक पहुंच की आवश्यकता है। बाजार की गतिशीलता और मूल्य निर्धारण संरचनाएं यह सुनिश्चित करने में भी भूमिका अदा करती हैं, कि किन फसलों का उत्पादन आर्थिक तौर पर सही है।

फसलीय पैदावार को प्रभावित करने वाले सांस्कृतिक प्रथाएं

सांस्कृतिक प्राथमिकताएँ एवं परंपराएँ फसल की लोकप्रियता पर प्रत्यक्ष असर डालती हैं। उदाहरण के लिए, चावल की खपत की सशक्त परंपरा वाले इलाकों में चावल की खेती ज्यादा प्रचलित है। सांस्कृतिक कारक खेती की पद्धतियों एवं फसल चक्रण प्रथाओं को भी प्रभावित करते हैं।

फसलीय पैदावार को प्रभावित करने वाले सरकारी नीतियां

अगर हम सरकारी नीतियों के संदर्भ में बात करें तो टैरिफ, अनुदान तथा व्यापार समझौते विशिष्ट फसलों को प्रोत्साहित अथवा हतोत्साहित कर सकते हैं। ये नीतियां प्रमुख फसलों की खेती की लाभप्रदता पर काफी गहरा असर डाल सकती हैं।

फसलीय पैदावार को प्रभावित करने वाला कारक श्रम उपलब्धता

फसलीय पैदावार के लिए एक शानदार कार्यबल की उपलब्धता अत्यंत महत्वपूर्ण है। चाय अथवा कॉफी जैसी श्रम प्रधान फसलों के लिए बेहद समुचित कार्यबल की अनिवार्यता सुनिश्चित होती है। वहीं, मशीनीकृत फसलों के लिए न्यूनतम श्रम संसाधनों की आवश्यकता हो सकती है।

जलवायु परिवर्तन कृषि क्षेत्र को किस प्रकार से प्रभावित करता है

आज के दौर में जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक मुद्दे के तौर पर उभर कर आया है। जलवायु परिवर्तन कोई एक देश अथवा राष्ट्र से जुड़ी अवधारणा नहीं है, अपितु यह एक वैश्विक अवधारणा है, जो समस्त पृथ्वी के लिए चिंता का वजह बनती जा रही है। देखा जाए तो जलवायु परिवर्तन से भारत समेत संपूर्ण विश्व में सूखा, बाढ़, कृषि संकट और खाद्य सुरक्षा, बीमारियां, प्रवासन इत्यादि का संकट बढ़ा है। परंतु, भारत का एक बड़ी तादात (लगभग 60 फीसद आबादी) आज भी कृषि पर आश्रित है। साथ ही, इसके प्रभाव के प्रति सुभेद्य है, इस वजह से कृषि पर जलवायु परिवर्तन के परिणामों को देखना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। ग्लोबल क्लाइमेट रिस्क इंडेक्स 2021 के मुताबिक, भारत जलवायु परिवर्तन से सर्वाधिक प्रभावित दस शीर्ष देशों में शम्मिलित है। जलवायु की बदलती परिस्थितियां कृषि को सबसे ज्यादा प्रभावित कर रहीं हैं। क्योंकि, दीर्घावधि में ये मौसमी कारक जैसे आर्द्र. ता, तापमान और वर्षा इत्यादि पर निर्भर करती है। अतः इस लेख में हम आपको बताऐंगे कि जलवायु परिवर्तन कृषि को कैसे प्रभावित करता है।

जलवायु परिवर्तन से उत्पादन में काफी गिरावट आई है

ग्लोबल वार्मिंग की वजह से विश्व कृषि इस सदी में गंभीर गिरावट का सामना कर रही है। जलवायु परिवर्तन पर अंतर सरकारी पैनल (IPCC) के मुताबिक, वैश्विक कृषि पर जलवायु परिवर्तन का कुल प्रभाव नकारात्मक होगा। हालांकि, कुछ फसल इससे लाभान्वित भी होंगी, परंतु फसल उत्पादकता पर जलवायु परिवर्तन का कुल प्रभाव सकारात्मक से अधिक नकारात्मक होगा। भारत में 2010–2039 के मध्य जलवायु परिवर्तन की वजह से तकरीबन 4.5 फीसद से 9 फीसद के मध्य उत्पादन के गिरने की संभावना है। एक शोध के अनुसार, अगर वातावरण का औसत तापमान 1 डिग्री सेल्सियस बढ़ता है, तो इससे गेहूं की पैदावार 17 प्रतिशत तक कम हो सकता है। इसी प्रकार 2 डिग्री सेल्सियस तापमान बढ़ने से धान का उत्पादन भी 0.75 टन प्रति हेक्टेयर कम होने की संभावना है।

कृषि लायक भूमि में काफी कमी आई है

जलवायु परिवर्तन की वजह से तापमान के उच्च अक्षांश की और खिसकने से निम्न अक्षांश प्रदेशों में कृषि क्षेत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। भारत के जल स्रोत तथा भंडार तीव्रता से सिकुड़ रहे हैं, जिससे कृषकों को परंपरागत सिंचाई के तरीके छोड़कर पानी की खपत कम करने वाले आधुनिक विधियां एवं फसलों का चयन करना होगी। ग्लेशियर के पिघलने से विभिन्न बड़ी नदियों के जल संग्रहण क्षेत्र में दीर्घावधिक तौर से कमी आ सकती है, जिससे कृषि एवं सिंचाई में जलभराव से गुजरना पड़ सकता है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, जलवायु परिवर्तन के कारण प्रदूषण, भूदृक्षरण एवं सूखा पड़ने से धरती के तीन चौथाई भूमि हिस्से की गुणवत्ता कम हो गई है।

जलवायु परिवर्तन से तापमान में बढ़ोतरी होती है

जलवायु परिवर्तन की वजह से विगत कई दशकों में तापमान में इजाफा हुआ है। औद्योगीकरण की शुरुआत से अब तक पृथ्वी के तापमान में तकरीबन 0.7 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी हो चुकी है। कुछ पौधे ऐसे होते हैं, जिन्हें एक विशेष तापमान की जरूरत होती है। वायुमंडल के तापमान के बढ़ने पर उनके उत्पादन पर प्रतिकूल या नकारात्मक असर पड़ता है। जैसे गेंहू, सरसो, जौ एवं आलू आदि इन फसलों को कम तापमान की आवश्यकता होती है। वहीं, तापमान में बढ़ोतरी इनके लिए हानिकारक साबित होती है। इसी तरह ज्यादा तापमान बढ़ने से मक्का, ज्वार एवं धान इत्यादि फसलों का क्षरण हो सकता है। क्योंकि, ज्यादा तापमान की वजह से इन फसलों में दाना नहीं बनता या फिर कम बनता है। इस तरह तापमान में इजाफा इन फसलों पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

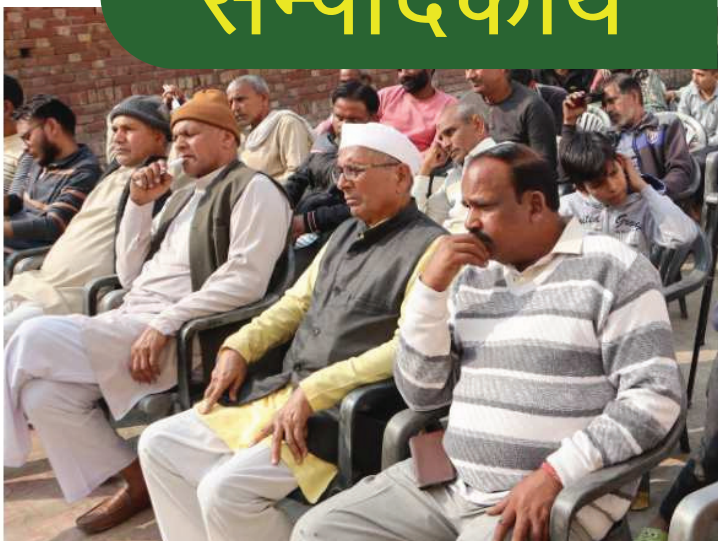

मेरीखेती ने दिसंबर माह की किसान पंचायत का भव्य आयोजन किया

मेरीखेतीडॉटकॉम द्वारा आयोजित मासिक किसान पंचायत का आयोजन प्रति माह देश के विभिन्न स्थानों पर किया जाता है। मेरीखेती किसानों की कृषि वैज्ञानिकों तक पहुँच बनाने के लिए प्रति माह किसान पंचायत का आयोजन करती है। मेरीखेती ने दिसंबर माह की किसान पंचायत का आयोजन ग्राम दुल्हेरा चौहान जिला मेरठ में किया था। इस पंचायत में बड़े–बड़े अनुभवी कृषि वैज्ञानिक जैसे सी.बी सिंह रिटायर्ड ICAR पूसा, TMU डायरेक्टर–केहर सिंह और सुधीर चौधरी सहायक अधिकारी सोलन कृषि विभाग उत्तराखंड ने किसानों को खेती करने के अद्भुद तकनीकों के बारे में बताया। साथ ही, किसानों की स्थानीय भौगोलिक समस्याओं को सुना एवं उनका संभव समाधान भी बताया।

केहर सिंह रिटायर्ड MTU डायरेक्टर का कहना है, कि किसानों को आजकल खेती में कम उर्वरक इस्तेमाल करने की आवश्यकता है। उर्वरकों का कम इस्तेमाल करने से खेती की उर्वरक क्षमता पर बेहतर असर पड़ता है। किसानों को संबोधित करते हुए केहर सिंह ने कहा कि किसानों को संगठित होकर लड़ने की बेहद आवश्यकता है। अगर किसान इकट्ठे होकर कृषि उत्पादन करेंगे तो उनको खाद, बीज और बिक्री मूल्य सब एकदम शानदार मिल सकेगा।

डॉ सी,बी सिंह रिटायर्ड ICAR पूसा ने किसानों को जैविक खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने बदलते जमाने में कृषि की नवीन पद्धतियों एवं तकनीकों के ऊपर बल देने को कहा। डॉ सी.बी सिंह का कहना है, कि अगर किसान खेती के साथदृसाथ पशुपालन भी करें तो ये उनके लिए बेहद लाभकारी साबित होगा। खेती–किसानी से जुड़े समस्त कार्यों को कृषि वैज्ञानिक बेहद ही ज्यादा तथ्यात्मकता के साथ करते हैं। इसलिए किसानों को अपने नजदीकी कृषि विज्ञान केंद्र पर जाकर उनसे सलाह लेकर कृषि करनी उचित रहेगी।

Kisan diwas 2023: किसान दिवस पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह जी के जन्मदिवस पर ही क्यों मनाया जाता है?

भारत एक कृषि प्रधान देश माना जाता है। क्योंकि, यहां की आधी से ज्यादा जनसंख्या आज भी कृषि अथवा इससे संबंधित कार्यों पर आश्रित है। अब ऐसी स्थिति में आपके मन में विचार आ रहा होगा कि किस वजह से 23 दिसंबर के दिन ही किसान दिवस मनाया जाता है? आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि 23 दिसंबर को ही देश के पांचवें प्रधानमंत्री और दिग्गज किसान नेता चौधरी चरण सिंह की जयंती है। उन्होंने अन्नदाताओं के हित में एवं खेती के लिए विभिन्न अहम कार्य किए हैं, जिन्हें इस दिन याद किया जाता है।

किसान मसीहा चौधरी चरण सिंह जी का राजनैतिक सफर

फरवरी 1937 में वह 34 वर्ष की आयु में छपरौली (बाग. पत) निर्वाचन क्षेत्र से संयुक्त प्रांत की विधान सभा के लिए चुने गए। चौधरी चरण सिंह कहा करते थे कि किसानों की दशा बदलेगी, तभी देश बढ़ेगा और इस दिशा में वे अपने जीवन भर निरंतर कार्य करते रहे। चौधरी चरण सिंह (23 दिसंबर 1902 – 29 मई 1987) वह भारत के किसान राजनेता एवं पाँचवें प्रधानमंत्री थे। उन्होंने यह पद 28 जुलाई 1979 से 14 जनवरी 1980 तक संभाला। चौधरी चरण सिंह उत्तर प्रदेश के दो बार मुख्यमंत्री बने। हालांकि, उनका कार्यकाल दोनों बार ज्यादा लंबा नहीं चला था।

इसके बावजूद भी उन्होंने मुख्यमंत्री रहते हुए भूमि सुधार लागू करने में बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए किसान वर्ग के हितों में बहुत सारे बड़े एवं ऐतिहासिक निर्णय लिए थे। ऐसा कहा जाता है, कि चौधरी चरण सिंह ने स्वयं ही उत्तर प्रदेश जमींदारी और भूमि सुधार बिल का प्रारूप तैयार किया था।

चौधरी चरण सिंह जी द्वारा किसानों के लिए उठाए गए ऐतिहासिक कदम

भारत में प्रत्येक वर्ष 23 दिसंबर को किसान दिवस के रूप में मनाया जाता है। क्योंकि, इस दिन भारत अथक परिश्रम करने वाले अन्नदाताओं के प्रति आभार व्यक्त करता है। भारत की अर्थव्यवस्था के अंदर उनका अहम योगदान रहा है। किसान दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में कृषि वैज्ञानिकों के योगदान, किसानों की समस्याएं, कृषि क्षेत्र में नए प्रयोग, नई तकनीक, फसल पद्धति और खेती में सकारात्मक बदलाव जैसे विभिन्न मुद्दों पर महत्वपूर्ण चर्चा होती है। 1938 में उन्होंने विधानसभा में एक कृषि उपज बाजार विधेयक पेश किया जो दिल्ली के हिंदुस्तान टाइम्स के 31 मार्च 1938 के अंक में प्रकाशित हुआ था।

इस विधेयक का उद्देश्य व्यापारियों की लोलुपता के खिलाफ किसानों के हितों की रक्षा करना था। किसानों के हित में अपना जीवन समर्पित करने की वजह से चौधरी चरण सिंह जी को किसान मसीहा की उपाधि मिली है। किसान दिवस के दिन पूरे देशभर में चौधरी चरण सिंह जी के किसान हित में किए गए प्रयासों को याद किया जाता है।

दुनिया का सबसे बड़ा और भारत के कुछ बड़े ट्रैक्टर कौन–कौन से हैं?

किसान भाइयों अगर आप अपनी यंत्रीकरण की समझ को और विकसित करना चाहते हैं। तो आज हम आपको इस लेख में उसी के बारे में बताऐंगे। चलिए जानते हैं, कि विश्व का सबसे बड़ा ट्रेक्टर कौन सा है? आप एक किसान हैं, तो आप इस लेख को पढ़कर ही जाँच कर सकते हैं। क्या आपका ट्रैक्टर दुनिया के सबसे बड़े ट्रैक्टरों में शामिल हैं अथवा नहीं हैं। तकनीक हर क्षेत्र में निरंतर बढ़ती जा रही है, इस बात का प्रमाण हम प्रत्येक इलाके में देख सकते हैं। मोबा. इल फोन हो अथवा फिर वाहन, हर क्षेत्र में हमें बढ़ती तकनीक का कमाल दिखने को मिलता है। तकनीकों के चलते आज इतने बड़ेदृबड़े ट्रैक्टर निर्मित हो चुके हैं, कि जिन्हें देख कर ऐसा लगता है कि ये कोई ट्रैक्टर नहीं बल्कि कोई बड़ा मॉनस्टर अथवा रोबोट हैं।

विश्व का सबसे बड़ा ट्रैक्टर कौनदृसा है?

विश्व का सबसे बड़ा ट्रेक्टर ठपह ठनक 16V&747 है। यह ट्रैक्टर विश्व का सबसे बड़ा ट्रैक्टर है। इसे देखकर आपको ऐसा लगेगा जैसे आप किसी मॉनस्टर को देख रहे हैं।

इस ट्रैक्टर की लंबाई की बात करें तो यह 28 फीट और चौड़ाई 20 फीट है। सच में ये आकार में बहुत ही बड़ा होता है। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इस ट्रैक्टर का एक टायर 8 फीट ऊंचा हैं। इसका निर्माण 1977 में किया गया था, इसमें आप को 24 लीटर का 16 सिलेंडर वाला डीजल इंजन मिलता है। इस ट्रैक्टर में 6 स्पीड ट्रांसमीटर दिए गए हैं, जो इस ट्रैक्टर की क्षमता को काफी बढ़ाता है। इस ट्रैक्टर में 1000 लीटर का डीजल टैंक विघमान होता है।

विश्व एवं भारत के बड़े तथा विशाल ट्रैक्टर्स की विशेषताऐं एवं कीमतें

Eicher 557: आयशर 557 बड़े एवं विशाल ट्रैक्टर में Eicher 557 आखिरी स्थान पर आता है। इस ट्रैक्टर की इंजन क्षमता 3300cc हैं, यह ट्रैक्टर सुगमता से खेती के किसी भी कार्य को कुछ ही मिनट में कर सकता हैं। सिर्फ इतना ही नहीं रोड में चलने की इसकी गति देखने योग्य होती है। इस वजह से यह धुलाई के कार्य में भी इस्तेमाल किया जाता है। ये ट्रैक्टर 3 सिलेंडर एवं 50HP वाले इंजन के साथ आते हैं। यह ट्रैक्टर पावर स्टीयरिंग की सुविधा के साथ आता है। साथ ही, इसका ब्रेक तेल के अंदर डूबा हुआ होता है। यह ट्रैक्टर सहजता से 1470kg से 1850kg तक का भार उठा सकते हैं। ये ट्रैक्टर आप को 6 लाख 25 हजार से 6 लाख 60 हजार रूपये में मिल जायेंगे।

Massey Ferguson 7250 power up: मैसी फर्गुशन 7250 पावर अप

जैसा कि हम सब जानते हैं, कि डेंमल का भी नाम भी बड़े–बड़े ट्रैक्टरों में शम्मिलित है। यह ट्रैक्टर 3 सिलेंडर और 50HP इंजन के साथ आता है, इस ट्रैक्टर में भी तेल के अंदर डूबे हुए ब्रेक आते हैं। इस ट्रैक्टर में आप को तमअमतेम PTO भी उपलब्ध की जाती हैं। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इसके डीजल टैंक में 60 लीटर तेल डाला जा सकता है। इस ट्रैक्टर की भार उठाने की क्षमता 2300kg हैं। इस ट्रैक्टर की कीमत 6 लाख 80 हजार से शुरू होती है और 7 लाख 50 हजार तक जाती हैं।

Farmtrac 60: फार्मट्रेक 60

यह ट्रैक्टर इस श्रेणी का सबसे बेहतरीन ट्रैक्टर है। यह ट्रैक्टर 3 सिलेंडर तथा 50HP वाले इंजन के साथ आता है, दूसरे ट्रैक्टर की भांति इस ट्रैक्टर में भी तेल में डूबे ब्रेक विघमान होते हैं। इस ट्रैक्टर में आप को fully constant mash gearbox भी मिलता है, इस ट्रैक्टर की भार उठाने की क्षमता 1800kg है। यह किसानों का एक भरोसेमंद ट्रैक्टर है, जो इस ट्रैक्टर को आप 6 लाख से 6 लाख 50 में खरीद सकते हैं।

जानिए परिशुद्ध कृषि प्रणाली, ऊर्ध्वाधर खेती एवं टिकाऊ कृषि पद्धतियों के बारे में

भारतीय कृषि क्षेत्र निरंतर बढ़ता जा रहा है। साथ ही, कृषि क्षेत्र में नवीन प्रौद्योगिकियों एवं नए रुझानों को स्वीकृत कर रही है। ये प्रवृत्तियाँ इस युग में उत्पादन वृद्धि एवं सफल खेती में मददगार हैं। आइए भारतीय कृषि में शीर्ष 10 रुझानों पर एक नजर डालें।

परिशुद्धता कृषि (Precision Farming)

परिशुद्धता खेती, जिसे परिशुद्धता कृषि के तौर पर भी जाना जाता है, खेती का एक आधुनिक दृष्टिकोण है, जो फसल की उपज को अनुकूलित करने एवं अपशिष्ट को कम करने के लिए प्रौद्योगिकी तथा डेटा विश्लेषण का इस्तेमाल करता है। सटीक खेती का प्रमुख उद्देश्य रोपण, कटाई और अन्य कृषि प्रक्रियाओं के बारे में सूचित फैसला लेने हेतु डेटा-संचालित तकनीकों का उपयोग करके कृषि प्रथाओं में दक्षता बढ़ाना है। सटीक कृषि तकनीकों में फसल स्वास्थ्य, मृदा की नमी के स्तर एवं मौसम के पैटर्न की निगरानी के लिए सेंसर, ड्रोन, जीपीएस मैपिंग एवं डेटा एनालिटिक्स का उपयोग करना शम्मिलित है। इस डेटा को इकट्ठा और विश्लेषण करके, किसान कब बोना है, कितना उर्वरक का इस्तेमाल करना है और अपनी फसल की कटाई कब करनी है, इसके बारे में ज्यादा जानकारीपूर्ण फैसला ले सकते हैं। परिशुद्ध खेती के विभिन्न लाभ हैं, जिनमें फसल की पैदावार में वृद्धि, सिंचाई और बाकी संसाधनों का कम उपयोग तथा बेहतर स्थिरता शम्मिलित है। इसमें कीटनाशकों और अन्य रसायनों के उपयोग को कम करके, खेती के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने की भी क्षमता है। परिशुद्ध खेती कृषि में एक रोमांचक विकास है, जिसमें हमारे भोजन उगाने एवं उत्पादन करने के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव लाने की क्षमता है।

ऊर्ध्वाधर खेती (Vertical Farming)

वर्टिकल खेती नियंत्रित-पर्यावरण कृषि (सीईए) तकनीक का इस्तेमाल करके लंबवत खड़ी परतों या संरचनाओं में फसल उत्पादन की एक विधि है। यह दृष्टिकोण स्थान के शानदार कुशल इस्तेमाल की अनुमति देता है, क्योंकि फसलें खड़ी खड़ी परतों या अलमारियों में उत्पादित की जाती हैं। सामान्यतः शहरी क्षेत्रों में या घर के अंदर। वर्टिकल फार्मिंग सिस्टम में पौधों के विकास के लिए नियंत्रित वातावरण प्रदान करने के लिए हाइड्रोपोनिक्स, एरोपोनिक्स और एक्वापोनिक्स जैसी विभिन्न तकनीकों को शामिल किया जा सकता है, जिसमें तापमान, आर्द्रता, प्रकाश तथा पोषक तत्वों जैसे कारकों को सावधानीपूर्वक नियंत्रित किया जाता है।

ऊर्ध्वाधर खेती का एक प्रमुख लाभ यह है, कि यह मौसम की परिस्थितियों की कोई भी परवाह किए बगैर वर्ष भर फसल उत्पादन की अनुमति देता है। यह कीटनाशकों एवं शाकनाशियों के इस्तेमाल को भी कम करता है। क्योंकि, नियंत्रित वातावरण कीटों एवं बीमारियों के संकट को कम करता है। इसके अतिरिक्त, ऊर्ध्वाधर खेती पारंपरिक खेती के पर्यावरणीय असर को कम कर सकती है। क्योंकि, इसमें सामान्य तौर पर कम पानी एवं उर्वरक की जरूरत होती है। साथ ही, भूमि के बड़े भाग की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।

हालाँकि, ऊर्ध्वाधर खेती से संबंधित चुनौतियाँ भी हैं, जिनमें उच्च स्टार्टअप लागत, ऊर्जा खपत एवं प्रौद्योगिकी को संचालित करने के लिए विशेष कौशल तथा ज्ञान की आवश्यकता शम्मिलित है। इन चुनौतियों के बावजूद, ऊर्ध्वाधर खेती खाद्य उत्पादन का एक तीव्रता से लोकप्रिय होने वाली पद्धति बन रही है, विशेष कर घनी आबादी वाले शहरी इलाकों में, जहां ताजा उत्पादन तक पहुंच सीमित हो सकती है।

टिकाऊ खेती (Sustainable Farming)

सतत खेती एक कृषि पद्धति है, जो दीर्घकालिक उत्पादकता, पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक जिम्मेदारी पर बल देती है। इसमें ऐसी तकनीकों का इस्तेमाल करना शामिल है, जो पर्यावरण पर नका. रात्मक प्रभावों को काफी कम करती हैं, जैसे कि कीटनाशकों एवं सिंथेटिक उर्वरकों के इस्तेमाल को कम करना एवं नवीकरणीय संसाधनों तथा संरक्षण प्रथाओं के इस्तेमाल को प्रोत्साहन देना। टिकाऊ खेती का उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करते हुए स्वस्थ भोजन का उत्पादन करना एवं कृषक समुदायों की आर्थिक व्यवहार्यता को सुनिश्चित करना है।

टिकाऊ कृषि पद्धतियों के कुछ उदाहरणों में शामिल हैं:

फसल चक्र: इसमें मृदा के स्वास्थ्य में सुधार एवं कीट तथा बीमारी की समस्याओं को कम करने के लिए एक खेत में बारी–बारी से फसलें उगाना शामिल है।

संरक्षण जुताई: इसमें मृदा के कटाव को कम करने एवं मृदा के स्वास्थ्य में सुधार के लिए फसल के अवशेषों को मृदा की सतह पर छोड़ना शम्मिलित है।

एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम): इसमें कीटों के प्रबंधन और कीटनाशकों के इस्तेमाल को कम करने के लिए जैविक, सांस्कृतिक तथा रासायनिक नियंत्रण विधियों के संयोजन का उपयोग करना शामिल है।

कवर फसल: इसमें मृदा के स्वास्थ्य में सुधार, कटाव को रोकने एवं लाभकारी कीड़ों के लिए आवास प्रदान करने के लिए मुख्य फसलों के मध्य मृदा को ढकने वाली फसलें लगाना शम्मिलित हैं। कृषि वानिकी: इसमें मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार, छाया और आश्रय प्रदान करने और जैव विविधता बढ़ाने के लिए पेड़ों और फसलों को एक साथ उगाना शामिल है।

जल संरक्षण: इसमें पानी के उपयोग को कम करने और इस बहुमूल्य संसाधन को संरक्षित करने के लिए कुशल सिंचाई प्रणालियों और जल–बचत तकनीकों का उपयोग करना शामिल है।सतत खेती तेजी से महत्वपूर्ण होती जा रही है, क्योंकि वैश्विक जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता की हानि तथा मृदा के क्षरण जैसी चुनौतियों का सामना कर रही है। टिकाऊ कृषि पद्धतियों को अपनाकर, किसान पर्यावरण की रक्षा करने, स्वस्थ भोजन का उत्पादन करने तथा अपने समुदायों की आर्थिक तथा सामाजिक भलाई में योगदान करने में मदद कर सकते हैं।

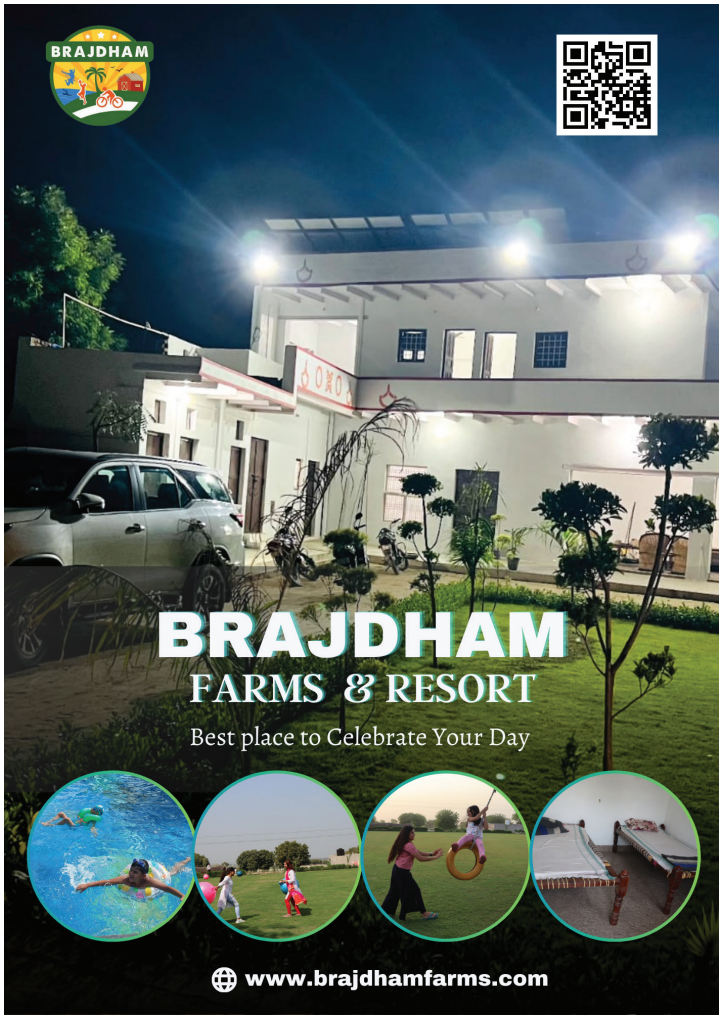

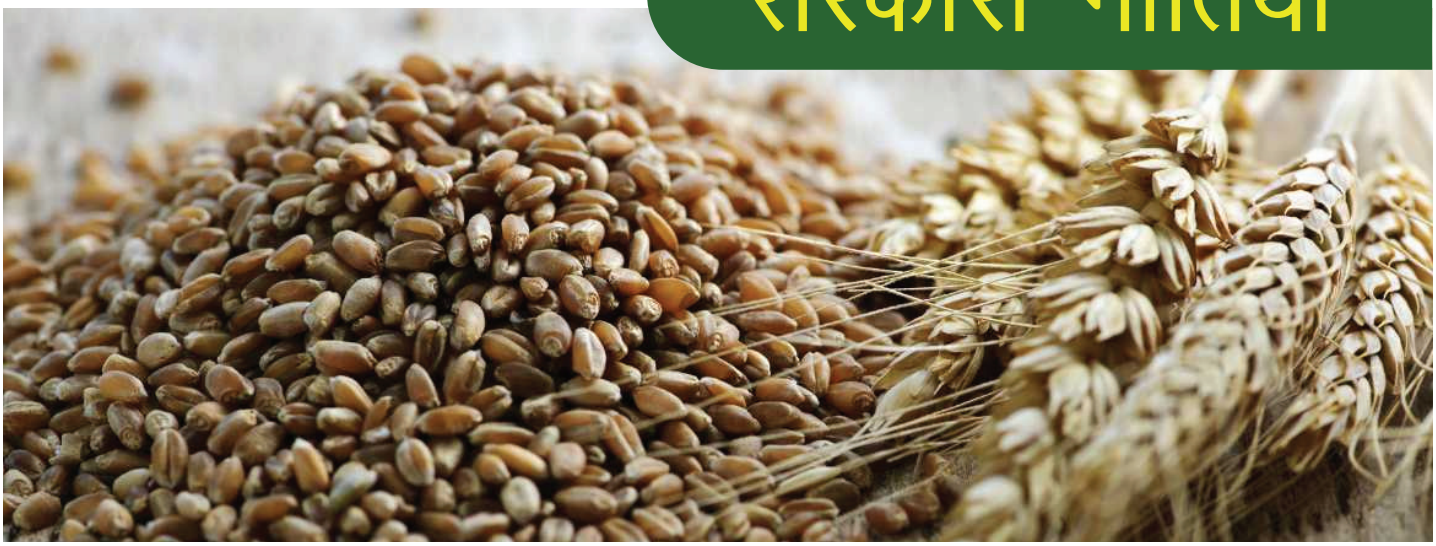

सरकार ने खाद्यान्न सुनिश्चित करने के लिए गेहूं की कीमतों पर नियंत्रण हेतु क्या तैयारी की है ?

गेंहू व आटे की कीमतों को नियंत्रण में रखना सरकार की जिम्मेदारी होती है। अब जैसा कि हम सब जानते हैं, कि अनाज की कीमतों में इजाफा देखा जा रहा है। इसके लिए सरकार ने कीमतों को कम करने हेतु 3.46 लाख टन गेहूं और 13,164 टन चावल खुले बाजार में विक्रय किया है। लेकिन, 5 लाख टन और खाद्यान्न बाजार में उतारने की योजना बनाई है, जिससे कि कीमतों को नियंत्रण में रखा जा सके। खाद्य वस्तुओं की बढ़ती महंगाई ने सरकार की चिंता को बढ़ा रखा है। बाजार में पर्याप्त उपलब्धता बरकरार रखने के लिए सरकार ने लगभग 4 लाख टन गेहूं एवं चावल खुले बाजार में उतार दिया है। वहीं, वर्तमान में 5 लाख टन अनाज तथा उतारने की तैयारी चल रही है। ऐसा कहा जा रहा है, कि जनवरी के दूसरे सप्ताह तक यह खाद्यान्न खुले बाजार में उतार दिया जाएगा।

एफसीआई की तरफ से इन थोक विक्रेताओं को खाद्यान्न उपलब्ध करा रही है

केंद्र सरकार ने खाद्यान्न खरीद तथा वितरण नोडल एजेंसी भारतीय खाद्य निगम (FCI) के माध्यम से खुले बाजार में खद्यान्न उपलब्ध करा रही है। खुदरा कीमतों को नियंत्रित करने की कोशिशों के अंतर्गत थोक उपभोक्ताओं को ई–नीलामी के माध्यम से इस सप्ताह 3.46 लाख टन गेहूं एवं 13,164 टन चावल विक्रय किया है। विगत वर्ष चावल की बिक्री 3,300 मीट्रिक टन की गई थी।

चावल को कितनी कीमत पर बिक्रय किया गया है

26वीं ई–नीलामी में 4 लाख टन गेहूं तथा 1.93 लाख टन चावल की प्रतुति थोक विक्रेताओं के लिए की गई थी, जिसके पश्चात 3.46 लाख टन गेहूं एवं 13,164 टन चावल थोक विक्रेताओं को बिक्रय किया गया है। गेहूं की औसत कीमत 2,178.24 रुपये प्रति क्विंटल निर्धारित की गई है। वहीं, चावल 2905.40 रुपये प्रति क्विंटल औसत कीमत पर विक्रय किया गया था।

सरकार द्वारा खाद्यान्न सुरक्षा के लिए क्या किया जा रहा है ?

केंद्र सरकार खुले बाजार बिक्री योजना (OM) के अंतर्गत खुदरा कीमतों पर नियंत्रण करने के लिए अपने बफर स्टॉक से गेहूं एवं चावल बिक्री कर रही है। सरकार ने मार्च 2024 तक खुले बाजार बिक्री योजना के अंतर्गत बिक्री के लिए 101.5 लाख टन गेहूं आवंटित किया है। केंद्र सरकार ने कहा है, कि चावल, गेहूं और आटे की खुदरा कीमतों पर लगाम लगाने के लिए सरकार गेहूं एवं चावल दोनों की साप्ताहिक ई–नीलामी करती रहेगी। इसके अंतर्गत अब जनवरी 2024 के दूसरे सप्ताह तक लगभग 5 लाख टन गेहूं तथा चावल खुले बाजार में उतारने की योजना है।

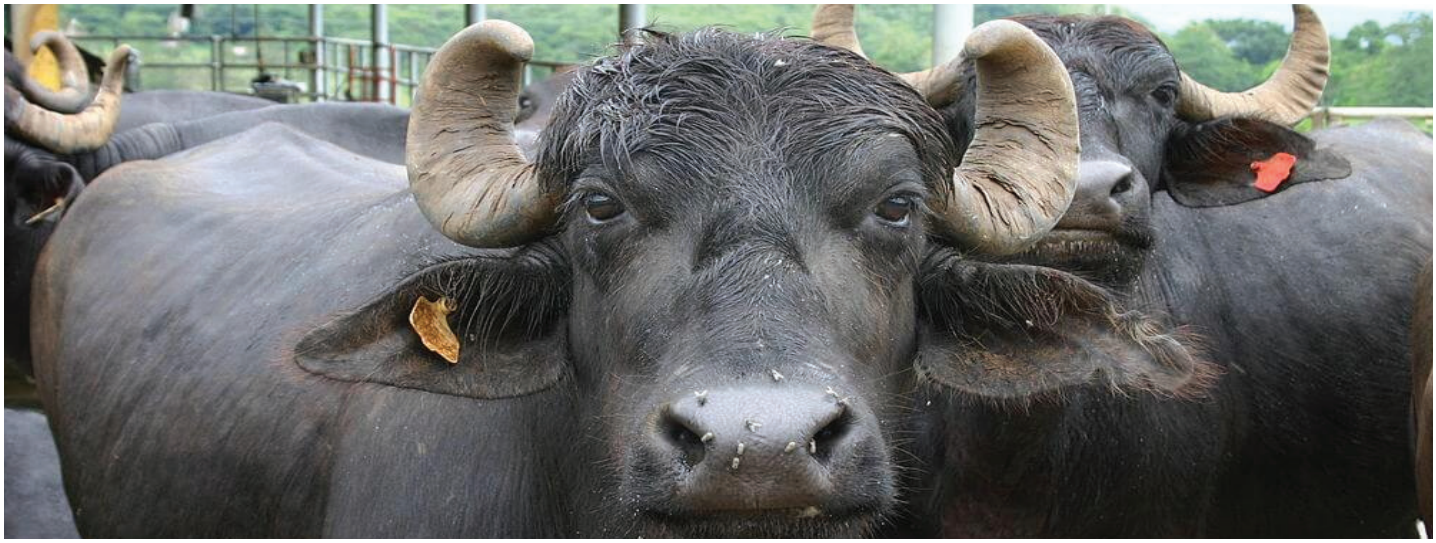

बिहार डेयरी एंड कैटल एक्सपो 2023 में 10 करोड़ के भैंसे ने लूटी महफिल

गुरुवार से बिहार की राजधानी पटना में बिहार डेयरी एंड कैटल एक्सपो 2023 की तीन दिवसीय प्रदर्शनी लगाई गई थी। इस एक्सपो में डेयरी एवं पशुपालन से संबंध रखने वाली दर्जनों कंपनियों के स्टॉल स्थापित किए गए हैं। इसी बीच एक भैंसा भी काफी चर्चा में बन गया है। सोशल मीडिया पर अब इसकी तस्वीर भी बड़ी तेजी से वायरल होती जा रही है। इस भैंसे की कीमत 10 करोड़ रुपये के आसपास तय की गई है। हरियाणा से पटना पहुंचा भैसा गोलू –2 अपने डेयरी फॉर्म में एसी रूम में रहता है। खाने के साथ-साथ गोलू पांच किलो सेब, पांच किलो चना तथा बीस किलो दूध हर रोज पीता है। दो लोग हर रोज इसका मसाज करते हैं। हरियाणा से आए किसान ने इस बात की जानकारी भी दी है।

गोलू भैंसा मुख्य रूप से कहा से आया था

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, इस गोलू नाम का यह भैंसा हरियाणा से पटना लाया गया है। यह भैंसा मुर्रा नस्ल का है। भैंसे के मालिक का कहना है, कि भैंसे की कीमत 10 करोड़ रुपये के आसपास है। इसके लिए भैंस के मालिक नरेंद्र सिंह को राष्ट्रपति से पद्मश्री भी मिल चुका है। इस भैंस का इस्तेमाल प्रजनन के लिए किया जाता है। 10 करोड़ रुपये की कीमत वाले भैंसे के मालिक नरेंद्र सिंह ने कहा है, कि वह भैंसा को प्रतिदिन साधारण चारा खिलाते हैं। भैंसा पर हर महीने करीब 50 से 60 हजार रुपये खर्च होते हैं। ये कीमती भैंसा पहले भी कई किसान मेलों में जा चुका है।

गोलू–2 भैंसा उनके घर की तीसरी पीढ़ी माना जाता है

किसान ने बताया कि 6 वर्ष का भैंसा गोलू–2 उनके घर की तीसरी पीढ़ी है। इसके दादा पहली पीढ़ी थे, जिसका नाम गोलू था। उसका बेटा बीसी 448–1 को गोलू–1 कहा जाता था। यह गोलू का पोता है, जिसका नाम गोलू–2 रखा गया है। किसान ने बतायादृ हमारी कोशिश है कि देश भर के किसान ऐसे भैंसे से लाभ उठा सकें। सोशल मीडिया पर अब इस भैंसे की खूब चर्चा है।

कार्बन क्रेडिट फाइनेंस प्रोजेक्ट से किसानों को क्या और कैसे फायदा मिलेगा?

कार्बन क्रेडिट फाइनेंस प्रोजेक्ट लघु यानी छोटे कृषकों को कार्बन बाजारों से अतिरिक्त वित्तीय सहायता हासिल करने में मदद करके बीएचजीवाई परियोजना की समर्थन समयावधि के बाद भी वृक्षों की लगातार देखभाल सुनिश्चित करने में सहायता करेगा। ट्रांसफॉर्म रूरल इंडिया (TRI) ने Intellecap और ACORN_Rabobank) की मदद से, झारखंड में 1 लाख रुपए से ज्यादा कृषकों को लाभ पहुंचाने के लिए कार्बन क्रेडिट फाइनेंस प्रोजेक्ट का अनावरण किया है। यह पहल राज्य के उन समस्त कृषकों को लक्षित करती है, जिन्हें 2018 से बिरसा हरित ग्राम योजना के अन्तर्गत समर्थन हांसिल हुआ है। बतादें, कि रबोबैंक एसीओआरएन प्लेटफॉर्म में उनके एकीकरण की सुविधा प्रदान की गया है। प्रमुख तौर पर महिलाएं, जिन्होंने मनरेगा की बिरसा हरित ग्राम योजना (बीएचजीवाई) के अंतर्गत झारखंड सरकार के समर्थन से 1 लाख से ज्यादा एकड़ ग्रामीण जमीन पर फलों के बगीचे एवं स्थानीय लकड़ी के वृक्ष लगाए हैं। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इन कृषकों को आगामी 15–20 वर्षों में कार्बन हटाने का फायदा मिलेगा।

झारखंड़ में बीएचजीवाई परियोजना की पहल हुई

यह प्रोजेक्ट लघु कृषकों को कार्बन बाजारों से अलावा वित्तीय मदद हासिल करने में सहयोग करके बीएचजीवाई परियोजना की समर्थन अवधि के उपरांत भी वृक्षों की निरंतर देखरेख निर्धारित करती है। उल्लेखनीय तोर से, इसमें कृषकों के लिए कोई भी जोखिम नहीं है अथवा उनके या सरकार की तरफ से कोई जरूरी निवेश नहीं है। परियोजना की डिजाइन का आरंभ झारखंड सरकार के समर्थन में कार्यान्वयन हिस्सेदारों के सहयोग से दिसंबर 2022 में प्रारंभ हुई थी।

इंटेलकैप के प्रबंध निदेशक "कृषि एवं जलवायु" ने इसको लेकर क्या कहा है ?

इंटेलकैप के प्रबंध निदेशक-कृषि और जलवायु, संतोष के. सिंह ने कहा, "हम छोटे किसानों की आय बढ़ाने और उन्हें जलवायु स्मार्ट कृषि में परिवर्तित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। जलवायु वित्त, मुख्य तौर पर कार्बन वित्त का समर्थन करके, परियोजना इस परिवर्तन को लाभदायक और जलवायु लचीली कृषि प्रथाओं में सक्षम बनाती है। हम उस पारिस्थितिकी तंत्र पर भी ध्यान दे रहे हैं, जो इसे प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। साथ ही, मंच छोटे किसानों की मदद के लिए सरकारी एजेंसियों, निवेशकों और कॉर्पोरेट्स के साथ काम करता है। यह परियोजना किसानों को समुचित भुगतान के सिद्धांत पर निर्धारित की गई है, जिसमें उत्पन्न कार्बन क्रेडिट राजस्व का 80: सीधे कृषकों के खातों में स्थानांतरित किया जाएगा। कार्बन क्रेडिट के अतिरिक्त, हिस्सेदार भारत सरकार के ग्रीन क्रेडिट प्लेटफॉर्म तथा अन्य वैश्विक जैव विविधता प्लेटफार्मों के जरिए से कृषकों को अतिरिक्त फायदा प्रदान करने के मार्ग तलाशेंगे। परियोजना का उद्देश्य वृक्षारोपण का समुचित रखरखाव निर्धारित करना, लघु कृषकों की आय को प्रोत्साहन देना एवं स्थानीय रोजगार के अवसर उत्पन्न करना है।

मुख्यमंत्री कृषि आशीर्वाद योजना क्या है और यह किसानों के लिए कितनी लाभकारी है

किसानों की आर्थिक मदद के लिए झारखंड सरकार मुख्यमंत्री कृषि आशीर्वाद योजना चलाई जा रही है। इस योजना के माध्यम से राज्य के लाखों कृषकों को फयदा प्रदान किया जा रहा है। कृषकों के हित के लिए विभिन्न योजनाएं जारी की जा रही हैं। ये योजनाएं केंद्र एवं राज्य सरकार की तरफ से संचालित की जाती हैं। ऐसी ही एक योजना झारखंड सरकार की तरफ से जारी की जा रही है, जिसे मुख्यमंत्री कृषि आशीर्वाद योजना के नाम से जाना जाता है।

ये योजना प्रदेश भर के छोटे एवं सीमांत कृषकों को वित्तीय मदद प्रदान करने के लिए चलाई जा रही है। इस योजना के माध्यम से सरकार 5 एकड़ अथवा उससे कम कृषि भूमि वाले कृषकों को प्रति वर्ष 5 हजार रुपये प्रति एकड़ के आधार पर धनराशि हस्तांतरित करती है।

मुख्यमंत्री कृषि आशीर्वाद योजना का मकसद

इस योजना का प्रमुख उद्देश्य कृषकों की आमदनी बढ़ाना है। साथ ही, उन्हें कृषि कार्यों के लिए जरूरी धन मुहैय्या कराना है। योजना के अंतर्गत लाभार्थी कृषकों को प्रति वर्ष एक बार 5000 रुपये की धनराशि सीधे उनके बैंक खातों में ट्रांसफर की जाती है। योजना का फायदा पाने के लिए आवेदक को संबंधित जिला कृषि कार्यालय में आवेदन करना पड़ेगा। आवेदन पत्र में आवेदक का नाम, पता, आधार संख्या, बैंक खाता संख्या तथा अन्य आवश्यक जानकारी शम्मिलित होनी चाहिए। कृषि आशीर्वाद योजना के अंतर्गत ऑनलाइन आवेदन करने वाले किसान भाई घर बैठे लाभार्थी सूची में अपना नाम सहजता से जाँच कर सकते हैं। इस योजना से जुड़ी अधिक जानकारी के लिए किसान भाई आधिकारिक साइट msy-jharkhand-gov-in की मदद ले सकते हैं।

मुख्यमंत्री कृषि आशीर्वाद योजना की क्यादृक्या पात्रता है

- आवेदक को झारखंड का मूल निवासी होना चाहिए।
- आवेदनकर्ता के पास 5 एकड़ या उससे कम कृषि योग्य जमीन होनी चाहिए।
- आवेदक का नाम भूमि अभिलेखों के अंतर्गत दर्ज होना चाहिए।
- मुख्यमंत्री कृषि आशीर्वाद योजना से क्या लाभ मिलता है
- किसान भाइयों को कृषि कार्यों के लिए आवश्यक धन उपलब्ध होता है।
- किसानों की आमदनी में इजाफा होता है।
- किसानों को कृषि कार्यों में काफी प्रोत्साहन मिलता है।

सरकार के प्रोत्साहन से हरियाणा के मोरनी क्षेत्र में मशरूम की खेती की तरफ बढ़ी रुची

मोरनी क्षेत्र के कृषकों के लिए मशरूम की खेती वरदान सिद्ध होते दिख रही है। यहां के युवा भी मशरूम की खेती में अपनी तकदीर चमकाते दिखाई नजर आ रहे हैं। हरियाणा सरकार मशरूम की खेती के लिए अनुदान देकर कृषकों का होसला बुलंद कर रही है।पंचकूला जनपद के मोरनी इलाके के कृषकों के लिए मशरूम की खेती वरदान सिद्ध हो रही है। यहां के अधिकांश बेरोजगार युवा सरकार से अनुदान हांसिल कर मशरूम की खेती मे अपनी तकदीर चमका रहे हैं। मोरनी क्षेत्र के कृषकों के लिए सर्वाधिक मुनाफा इस खेती से हांसिल हो रहा है। यहां पर पहले किसान परंपरागत ढंग से खेती किया करते थे, जिसमें सरसों, तिल, गेंहू, टमाटर और मक्का के अतिरिक्त बाकी नकदी फसलें उगाई जाती थी। मगर जंगली जानवरों के भय की वजह से ज्यादातर किसान इन फसलों को उगाना बंद करके मशरूम की खेती पर ज्यादा ध्यान देने लगे। हरियाणा सरकार भी अनुदान देकर कृषकों के हौसलों को बुलंद कर रही है।

खेती के लिए सबसे उपयुक्त समय कौनदृसा होता है

मोरनी क्षेत्र में मशरूम की खेती के लिए अनुकूल वक्त दिसंबर के प्रथम हफ्ते से शुरू होकर मार्च के आखिर तक होता है। इसी से जागरूक होकर मोरनी गांव के बहलों निवासी युद्ध सिंह परमार कौशिक ने मशरूम की खेती आरंभ कर दी, जिसमें उन्हें काफी शानदार मुनाफा मिलने की आशा है।

हरियाणा के मोरनी क्षेत्र में मशरूम की खेती के लिए अनुकूल वातावरण है। इस काम को करने के लिए अधिक भूमि की आवश्यकता नहीं होती। किसान इसको छोटे से कमरे से भी चालू कर सकते हैं। इसके पश्चात सरकार द्वारा अनुदान लेकर बड़ा व्यवसाय भी आरंभ कर सकते हैं।

मशरूम उत्पादन का शानदार तरीका

कम्पोस्ट को निर्मित करने के लिए धान की पुआल को भिगोकर एक दिन पश्चात इसमें डीएपी, यूरिया, पोटाश, गेहूं का चोकर, जिप्सम तथा कार्बोफ्यूडोरन मिलाकर इसे सड़ने के लिए छोड़ दिया जाता है। करीब डेढ़ माह के उपरांत कम्पोस्ट तैयार होता है। वर्तमान में गोबर की खाद और मिट्टी को बराबर मिलाकर लगभग डेढ़ इंच मोटी परत बिछाकर उस पर कम्पोस्ट की दो-तीन इंच मोटी परत चढ़ाई जाती है। इसमें नमी स्थिर बनी रहे, इसलिए स्प्रे से मशरूम पर दिन में दो से तीन बार छिड़काव किया जाता है। इसके ऊपर एकदृदो इंच कम्पोस्ट की परत और चढ़ाई जाती है। इस प्रकार से मशरूम का उत्पादन आरंभ हो जाता है।

सरकार कितना अनुदान प्रदान कर रही है

सरकार ने मशरूम उत्पादन को प्रोत्साहन देने के लिए जिन तीन योजनाओं पर अनुदान देने का निर्णय किया है, उसमें मशरूम उत्पादन इकाई, मशरूम स्पॉन इकाई और मशरूम कंपोस्ट उत्पादन इकाई शम्मिलित है। इन तीनों योजनाओं की समकुल लागत 55 लाख रुपये है। इसपर कृषकों को 50 प्रतिशत मतलब 27.50 लाख रुपये का अनुदान प्रदान किया जाता है। यदि किसान भिन्न-भिन्न योजनाओं का फायदा लेना चाहें तो इसकी भी छूट है। किसान किसी भी योजना का आसानी से चयन कर सकते हैं।

इन राज्यों में पीएम किसान सम्मान निधि के तहत 12 हजार प्रदान किए जाऐंगे

पीएम किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत कृषकों को अब 12 हजार रुपये मिल सकते हैं। इस योजना का आरंभ कृषकों की आर्थिक सहायता के लिए किया गया था। कृषकों की आर्थिक उन्नति के लिए केंद्र व राज्य सरकारें विभिन्न योजनाएं चलाती हैं। केंद्र सरकार की ओर से चलाई जाने वाली सबसे बड़ी योजना में पीएम किसान सम्मान निधि का नाम सबसे ऊपर आता है। इस योजना के अंतर्गत किसान भाइयों को धनराशि हस्तांतरित की जाती है, जिसका उपयोग वह खेती के कामों में लेते हैं। योजना का फायदा पा रहे कृषकों के लिए शानदार समाचार है।

इन राज्यों में मिल सकेंगे 12 हजार रुपए

दरअसल, पीएम नरेंद्र मोदी ने राजस्थान में विधानसभा चुनाव प्रचार के दौरान जनसभा को संबोधित करते हुए कहा था, कि सरकार बनने पर योजना के लाभार्थियों को 12 हजार रुपये प्रदान किए जाएंगे। साथ ही, एमपीसी पर फसल खरीदने व बोनस देने की बात भी पीएम मोदी ने कही थी। अब ऐसी स्थिति में जिन राज्यों में भाजपा की सरकार है। वैसे राज्यों के कृषकों को 12 हजार रुपये मिल सकते हैं। 12 हजार में से 6 हजार रुपये केंद्र तथा 6 हजार रुपये राज्य सरकार देगी।

गैर बीजेपी शासित राज्यों में 12 हजार मिलना मुश्किल

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि अब तक प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के अंतर्गत कृषकों को वर्षभर में 6 हजार रुपये की धनराशि प्रदान की जाती है। ये धनराशि उनके बैंक खाते में तीन किस्तों में पहुंचती है। अब तक योजना के चलते समकुल 15 किस्त जारी की जा चुकी हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक, वर्तमान में बीजेपी शासित राज्यों में किसान भाइयों को हर साल 12 हजार रुपये मिल सकते हैं। वहीं, गैर बीजेपी शासित राज्यों में किसानों को 12 हजार रुपये मिलना उतना सुगम नहीं होगा। आंकड़ों की बात करें तो इन राज्यों में केंद्र सरकार की ओर से दी जाने वाली धनराशि के अतिरिक्त राशि प्रदान करने के लिए राज्य सरकारों की इच्छा होनी जरूरी है।

पीएम किसान की 15 वीं किस्त कब जारी हुई थी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 नवंबर को झारखंड दौरे के समय 8 करोड़ से ज्यादा किसानों के बैंक खाते में योजना के तहत 15वीं किस्त के रुपये हस्तांतरित किए थे। इस योजना का मकसद किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाना और उन्हें सम्पन्न बनाना है।

भारत की तरफ से केन्या के कृषि क्षेत्र को 250 मिलियन अमेरिकी डॉलर का उपहार

वार्ता के पश्चात अपने मीडिया बयान में पीएम मोदी ने कहा है, कि भारत ने अपनी विदेश नीति में हमेशा अफ्रीका को उच्च प्राथमिकता दी है और पिछले लगभग एक दशक में मिशन मोड पर महाद्वीप के साथ अपने समग्र संबंधों का विस्तार किया है। केन्या के राष्ट्रपति विलियम सामोई रुतो दोनों देशों के बीच समग्र संबंधों का विस्तार करने के उद्देश्य से तीन दिवसीय यात्रा पर सोमवार को भारत पहुंचे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को भारत के दौरे पर आए केन्या राष्ट्रपति विलियम सामोई रुतो के साथ व्यापक बातचीत के पश्चात केन्या के कृषि क्षेत्र के आधुनिकीकरण के लिए उन्हें 250 मिलियन अमेरिकी डॉलर देने के भारत के फैसले की घोषणा की। रुतो दोनों देशों के बीच समग्र संबंधों का विस्तार करने के उद्देश्य से तीन दिवसीय यात्रा पर सोमवार को यहां पहुंचे।

पीएम मोदी ने क्या कहा है

वार्ता के बाद अपने मीडिया बयान में पीएम मोदी ने कहा कि भारत ने अपनी विदेश नीति में सदैव अफ्रीका को उच्च प्राथमिकता दी है और पिछले लगभग एक दशक में मिशन मोड पर महाद्वीप के साथ अपने समग्र संबंधों का विस्तार किया है। उन्होंने कहा, "मुझे विश्वास है कि राष्ट्रपति रुटो की भारत यात्रा न केवल द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करेगी बल्कि अफ्रीका के साथ हमारे जुड़ाव को एक नई गति देगी।

भारत केन्या के कृषि क्षेत्र के आधुनिकीकरण के लिए देगा सहयोग

प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत केन्या को उसके कृषि क्षेत्र के आधुनिकीकरण के लिए 250 मिलियन अमेरिकी डॉलर की ऋण सहयोग प्रदान करेगा। हिंद–प्रशांत का जिक्र करते हुए मोदी ने कहा कि क्षेत्र में भारत एवं केन्या के मध्य करीबी सहयोग साझा प्रयासों को आगे बढ़ाएगा।

आतंकवाद मानवता के सामने सबसे गंभीर चुनौती

पीएम मोदी ने कहा कि भारत तथा केन्या का मानना है, कि आतंकवाद मानवता के समक्ष सबसे गंभीर चुनौती है। उन्होंने आगे बताया कि दोनों पक्षों ने आतंकवाद विरोधी सहायता बढ़ाने का फैसला किया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि दोनों पक्ष भारत–केन्या आर्थिक सहयोग की पूर्ण क्षमता का एहसास करने के लिए नवीन अवसर तलाशना जारी रखेंगे।

किसानों के लिए मिशन अमृत सरोवर बनेगा ढ़ाल, ये मिशन सूखे की समस्या को खत्म करेगा

मिशन अमृत सरोवर ग्रामीण विकास मंत्रालय, जल शक्ति मंत्रालय, संस्कृति मंत्रालय, पंचायती राज मंत्रालय, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय एवं तकनीकी संगठनों की हिस्सेदारी के साथ "संपूर्ण सरकार" दृष्टिकोण पर आधारित है। दिन-प्रतिदिन पानी की समस्याओं से लड़ रहे कृषकों और ग्रामीणों के लिए सरकार ने एक महत्वाकांक्षी योजना का आरंभ किया है। इस योजना का नाम है, अमृत सरोवर योजना। यह योजना जल संरक्षण तथा सूखे जैसी भयानक स्थिति से जूझने के लिए केंद्र सरकार की तरफ से लाई गई है। इस योजना के मुताबिक, 15 अगस्त 2023 तक भारत भर के हर एक जनपद में 75–75 तालाबों का निर्माण किया जाना था। इससे गर्मी के दिनों में होने वाले भूजल की गिरावट को काफी हद तक काबू में किया जा सकेगा।

मिशन अमृत सरोवर की प्रमुख विशेषताएं क्या-क्या हैं ?

मिशन अमृत सरोवर 24 अप्रैल 2022 को जारी किया गया और 15 अगस्त 2023 को पूर्ण हुआ। इसका लक्ष्य भारत के हर एक जनपद में 75 अमृत सरोवर (तालाब) का विकास, मरम्मत करना है, जिससे भारत भर में कुल मिलाकर तकरीबन 50,000 अमृत सरोवर होंगे।

मिशन अमृत सरोवर 15 अगस्त 2023 को पूर्ण हो चुका है। दरअसल, मिशन अमृत सरोवर ग्रामीण विकास मंत्रालय, पंचायती राज मंत्रालय, पर्यावरण, जल शक्ति मंत्रालय, संस्कृति मंत्रालय, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय और तकनीकी संगठनों की हिस्सेदारी के साथ "संपूर्ण सरकार" दृष्टिकोण पर आधारित है।

इस मिशन के अंतर्गत भारत के हर जनपद में कम से कम 75 अमृत सरोवरों का निर्माण अथवा कायाकल्प किया जा सकेगा। हर एक अमृत सरोवर में कम से कम 01 एकड़ का तालाब क्षेत्र होगा, जिसकी जल धारण क्षमता तकरीबन 10,000 घन मीटर होगी। हर एक अमृत सरोवर नीम, पीपल एवं बरगद इत्यादि वृक्षों से घिरा होगा। प्रत्येक अमृत सरोवर सिंचाई, मछली पालन, बत्तख पालन, सिंघाड़े की खेती, जल पर्यटन एवं बाकी गतिविधियों जैसे बहुत सारे उद्देश्यों के लिए पानी का इस्तेमाल करके आजीविका सृजन का स्रोत होगा। अमृत सरोवर उस क्षेत्र में एक सामाजिक मिलन स्थल के तोर पर भी कार्य करेगा। मिशन अमृत सरोवर आजादी का अमृत महोत्सव के दौरान की गई कार्रवाई का एक स्पष्ट उदाहरण है।

प्रत्येक अमृत सरोवर स्थल हर एक स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण का स्थान है। मिशन अमृत सरोवर में स्वतंत्रता सेनानी अथवा उनके परिवार के सदस्य, शहीदों के परिवार के सदस्य, पद्म पुरस्कार विजेता जुड़े हुए हैं। मिशन अमृत सरोवर राज्यों एवं जनपदों के जरिए से विभिन्न योजनाओं जैसे महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (महात्मा गांधी एनआरई. जीएस), 15वें वित्त आयोग अनुदान, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना उपयोजनाएं जैसे वाटरशेड विकास घटक, हर खेत के अभिसरण के साथ कार्य करता है। मिशन अमृत सरोवर बुनियादी ढांचागत परियोजनाओं को प्रोत्साहन देने के लिए जल संरक्षण, लोगों की हिस्सेदारी और जल निकायों से निकाली गई मृदा के उचित इस्तेमाल पर केंद्रित है। रेल मंत्रालय, सड़क परिवहन तथा राजमार्ग मंत्रालय एवं बुनियादी ढांचा परियोजना विकास के लिए लगी बाकी सार्वजनिक एजेंसियां भी अमृत सरोवर से निकली मृदा, खाद के उपयोग के उद्देश्य से मिशन में शम्मिलित हैं।

खुशखबरी: पंजाब सरकार ने गन्ना का भाव 391 रुपये प्रति क्विंटल की दर से बढ़ाया

वर्तमान में गन्ने की खेती करने वाले कृषकों को पहले से ज्यादा भाव मिलेंगे। पंजाब भारत भर में गन्ने का सर्वाधिक मूल्य देने वाला राज्य है। पंजाब सरकार ने किसानों के फायदे में एक बड़ा निर्णय लिया है। राज्य सरकार की तरफ से गन्ना कृषकों के लिए बड़ी खुशख. बरी है। सरकार ने गन्ने की कीमत में इजाफा करने का ऐलान कर दिया है। वर्तमान में राज्य के गन्ना कृषकों को 391 रुपये प्रति क्विंटल के अनुरूप रुपये दिए जाएंगे।इसके अतिरिक्त अब पंजाब भारत में सर्वाधिक गन्ने की कीमत देने वाला राज्य भी बन गया है। पंजाब के पश्चात हरियाणा व बाकी राज्यों का नाम आता है। गन्ने का भाव देने में प्रथम स्थान पर पंजाब है तो दूसरे स्थान पर हरियाणा है। हरियाणा में कृषकों को गन्ने का भाव 386 रुपये प्रति क्विंटल दिया जाता है। यूपी और उत्तराखंड के कृषकों को 350 रुपये का भाव दिया जाता है।

किसानों को इतने रुपये प्रति क्विंटल मिलेगा फायदा

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि राज्य के किसान विगत कई दिनों से सरकार से गन्ने की कीमतों को बढ़ाने की मांग कर रहे थे। राज्य में गन्ने की प्रति क्विंटल कीमत 380 रुपये थी, जो वर्तमानं में बढ़ाकर के 391 रुपये प्रति क्विंटल कर ड़ाली है। किसान भाइयो को इस निर्णय के पश्चात फिलहाल 11 रुपये प्रति क्विंटल का फायदा मिलेगा। पंजाब सरकार ने ये निर्णय राज्य के किसानों की मांग पर किया है।

कृषकों के लिए फायदेमंद फैसला साबित होगा

गन्ना किसान बहुत दिनों से सरकार से गन्ने के भाव को बढ़ाने की मांग जाहिर कर रहे थे। सरकार ने कृषकों की मांग को पूर्ण करते हुए यह निर्णय लिया है, जिसको लेकर कृषकों ने बीते दिनों धरना भी दिया था। इसके पश्चात कृषकों के प्रतिनिधियों से पंजाब के मुख्यमंत्री ने वार्तालाप की और उन्हें मूल्य वृद्धि हेतु आश्वस्त भी किया था। इसके साथ-साथ कृषकों की मांग कीमतें 450 रुपये प्रति क्विंटल करने की थी। रिपोर्ट्स की मानें तो पंजाब सरकार के इस निर्णय के उपरांत गन्ना किसानों को लाभ मिलेगा। बतादें, कि इस निर्णय से कृषकों की आमदनी में इजाफा होने के साथ-साथ उनकी आर्थिक स्थिति भी काफी सुधरेगी।

इस योजना को शुरू कर प्रधानमंत्री मोदी ने महिला किसानों का किया सशक्तिकरण

प्रधानमंत्री मोदी ने हाल ही में ड्रोन दीदी योजना की शुरुआत की है। पीएम मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से विकसित भारत संकल्प यात्रा के लाभार्थियों से वार्तालाप की। किसानों के हित के लिए सरकार की तरफ से बहुत सारी योजनाएं जारी की जा रही हैं। साथ ही, कृषि क्षेत्र में महिलाओं की हिस्सेदारी बड़े इसके लिए भी सरकार कार्य कर रही है। आज के विकसित भारत संकल्प यात्रा के अंतर्गत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विकसित भारत संकल्प यात्रा के लाभार्थियों से वार्तालाप की है। इसी दौरान प्रधानमंत्री महिला किसान ड्रोन केंद्र का शुभारंभ किया गया। ड्रोन दीदी योजना के अंतर्गत 1261 करोड़ रुपये के समकुल खर्च के साथ महिलाओं को 15 हजार ड्रोन बांटे जाएंगे।

पीएम मोदी प्राकृतिक एवं सामाजिक न्याय के सिद्धांतों के नजरिए की नई आकांक्षा पैदा हुई है

पीएम मोदी का कहना है, कि सरकार की ओर से लोगों की जरूरतों को पहचानने एवं उन्हें उनके अधिकार प्रदान करने के प्राकृतिक न्याय-सामाजिक न्याय के सिद्धांतों के नजरिए की नवीन आकांक्षा पैदा हुई है। इसके साथ ही करोड़ों लोगों के अंदर उपेक्षा की भावना समाप्त हुई है। पीएम का कहना है, कि स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं को आत्मनिर्भर करने के लिए चल रहे अभियान को ड्रोन दीदी के माध्यम से ज्यादा मजबूती मिलेगी। इससे आमदनी के अतिरिक्त साधन उपलब्ध होंगे। इससे कृषकों को बेहद ही कम कीमत पर ड्रोन जैसी अत्याधुनिक तकनीक मिल सकेगी, जिसके सहयोग से समय के साथ-साथ दवा एवं उर्वरकों की भी बचत होगी।

कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने महिलाओं को ड्रोन उपलब्ध कराने को लेकर क्या कहा

इसके साथ ही, कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा है, कि महिलाओं को 15 हजार ड्रोन उपलब्ध किए जाएंगे। दरअसल, इन ड्रोन दीदी के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण भी होगा और वह आत्मनिर्भर भी बनेंगी, रोजगार सृजन से उनकी आजीविका शानदार होगी। इसके साथ ही खेती में ड्रोन का उपयोग बढने से खेती भी काफी उन्नत बनेगी। स्वयं सहायता समूहों से संबंधित बहनों की क्षमता बढ़ाने एवं आजीविका को शानदार करने के लिए ड्रोन दीदी कार्यक्रम की कल्पना बेहद ही ज्यादा शानदार है। उन्होंने कहा है, कि पेस्टीसाइड, यूरिया और डीएपी का जब खेतों में छिड़काव होता है, तो शरीर पर इसका काफी दुष्प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त इस दौरान कहीं पर ज्यादा तो कहीं पर कम छिड़काव जैसा असंतुलन भी बना रहता है। हालाँकि, कि जब ड्रोन का उपयोग बढ़ेगा तो शरीर पर दुष्प्रभाव कम देखने को मिलेगा। वहीं, उर्वरक की खपत भी काफी हद तक कम हो जाएगी।

NGT ने पराली जलाने के चलते बढ़ते प्रदूषण को लेकर पंजाब –हरियाणा सरकार से नाखुशी जताई

एनजीटी ने इससे पूर्व प्रदूषण एवं पराली जलाने के बढ़ते मामलों को लेकर पंजाब सरकार की खिंचाई की थी। एनजीटी ने पराली जलाने पर तत्काल रोक लगाने के लिए सुप्रीम कोर्ट के आदेश का पालन करने में विफल रहने के लिए राज्य सरकार की आलोचना भी की थी।

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने पंजाब तथा हरियाणा सरकार को 2024 में पराली जलाने के मामलों को कम करने के लिए एक कार्य योजना तैयार करने का निर्देश दिया। ट्रिब्यूनल ने टिप्पणी में कहा, कि 'आप इसके विषय में भूल जाएंगे तथा अगले वर्ष पंजाब में पुनः पराली जलाई जाएगी। एनजीटी ने राज्यों को आगामी वर्ष के लिए विभि. ान्न निवारक कदमों समेत एक समयबद्ध कार्य योजना (एक्शन प्लान) तैयार करने का निर्देश दिया है। दिल्ली प्रदूषण के संबंध में, ट्रिब्यूनल ने दिल्ली में सिर्फ GRAP को लागू करने एवं रद्द करने के लिए वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग को फटकार लगा दी। एनजीटी ने कहा है, कि सीएक्यूएम अपने आधार पर कार्य कर रहा है। GRAP का क्या काम है? वे बस GRAP को रद्द करते हैं और लागू करते हैं। उनके 90: फीसद सदस्य बैठकों में शामिल नहीं होते हैं।'

एनजीटी ने पराली जलाने के बढ़ते मामलों को लेकर नाराजगी जाहिर की है

एनजीटी ने इससे पूर्व प्रदूषण एवं पराली जलाने के बढ़ते मामलों को लेकर पंजाब सरकार से सवाल पूछा था। एनजीटी ने पराली जलाने पर तत्काल रोक लगाने के सुप्रीम कोर्ट के आदेश का पालन करने में विफल रहने के लिए राज्य सरकार की आलोचना भी की थी। हरित न्यायाधिकरण मतलब कि NGT ने पराली जलाने पर प्रतिबंध नहीं लगाने के लिए पंजाब सरकार द्वारा उठाए जा रहे कदमों पर नाखुशी व्यक्त की थी।

एनजीटी ने पराली जलाने को लेकर प्रशासन को जिम्मेदार बताया

एनजीटी ने इसको "प्रशासन की पूर्ण विफलता" बताते हुए कहा कि "जब मामला उठाया गया था तब पराली जलाने की लगभग 600 घटनाएं दर्ज की गई थीं और अब यह संख्या 33,000 है, इस तथ्य के बावजूद कि एनजीटी और सुप्रीम कोर्ट इस मामले पर विचार कर रहे हैं और आप कह रहे हैं कि आप प्रयास कर रहे हैं।" एनजीटी ने कहा था कि "यह आपके प्रशासन की पूर्ण विफलता है। पूरा प्रशासन काम पर है और फिर भी आप विफल रहे हैं।"

पंजाब के वकीलों से एनजीटी ने सवाल किया था

एनजीटी ने पंजाब सरकार को "उल्लंघनकर्ताओं पर मुकदमा चलाने में सेलेक्टिव रोल" के लिए भी बुलाया था। क्योंकि पंजाब के वकील ने कहा था कि उसने 1,500 में से एक ही दिन में फसल जलाने के लिए महज 829 के विरुद्ध एफआईआर दर्ज की थी।

यह एक दिन की घटना का तकरीबन एक–चौथाई है। इस पर नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने पंजाब के वकील से कहा कि सभी के विरुद्ध समान कार्रवाई क्यों नहीं की जा रही है। दिल्ली–एनसीआर में प्रदूषण के स्तर में वृद्धि के बीच, सुप्रीम कोर्ट ने 7 नवंबर को हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और पंजाब को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया कि फसल अवशेष जलाना "तत्काल" रोका जाए, यह कहते हुए कि वह प्रदूषण के कारण "लोगों को मरने" नहीं दे सकता।

धान की फसल के बाद भी किसान कर सकते हैं आलू की खेती, जाने सम्पूर्ण जानकारी

आलू की खेती रबी के मौसम में बड़े पैमाने पर की जाती है। उत्तर प्रदेश में आलू की खेती सबसे ज्यादा की जाती है। आलू की खेती किसी भी प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है। आलू की बुवाई का कार्य छोटे किसानों द्वारा हाथ से किया जाता हैं वही बड़े किसानों द्वारा मशीन से बुवाई का कार्य किया जाता हैं। अब किसानों द्वारा आलू की खेती धान की कटाई के बाद भी की जा सकती हैं। इस लेख में हम आपको आलू की खेती के बारे में सम्पूर्ण जानकरी देंगे।

आलू की बुवाई के लिए भूमि की तैयारी

आलू की बुवाई के लिए सबसे पहले भूमि की अच्छे तरीके से जुताई होनी चाहिए। खेत की जुताई के बाद आलू की रोपाई से पहले उसमे जैविक खाद को भी मिलाया जाता हैं ताकि आलू की उर्वरकता अच्छे से हो सके। आलू की खेती करने से पहले भूमि की कम से कम दो से तीन बार जुताई करनी चाहिए। अंतिम जुताई से पहले खेत में 4 से 5 ट्राली गोबर की खाद डालनी चाहिए और बाद में जुताई करके उसे खेत में अच्छी तरीके से मिला दे, ताकि पूरे खेत में खाद फैल जाये और भूमि को ज्यादा उपजाऊ बनाया जा सके। इस खाद के प्रयोग से खेत की उर्वरा शक्ति भी बनी रहेगी और आलू के उत्पादन में भी इजाफा होगा।

आलू की बुवाई का सबसे अच्छा समय क्या हैं

आलू की बुवाई के लिए सबसे अच्छा समय सितम्बर से अक्टूबर के बीच का महीना माना जाता है। यानी जब धान की कटाई पूरी हो जाती हैं इसके तुरत बाद यदि किसान आलू की खेती करना चाहे तो कर सकता है। 15 सितम्बर से 15 अक्टूबर के बीच का समय आलू की बुवाई के लिए बेहतर माना जाता हैं। साल में आलू की बुवाई दो बार की जाती हैं। सितम्बर माह से आलू की बुवाई को अगेती बुवाई माना जाता है। किसान नवंबर से दिसंबर के महीने में भी आलू की पछेती रोपाई करते है।

आलू की फसल में कितनी बार सिंचाई की जानी चाहिए

आलू की बुवाई के बाद खेत में 3 – 4 सिंचाई की जानी चाहिए। यदि आलू की फसल में ज्यादा पानी लगाया जायेगा तो फसल खराब भी हो सकती है। आलू की फसल में हमेशा हल्की से माध्यम सिंचाई ही करनी चाहिए। आलू की खुदाई के कुछ दिन पहले से ही सिंचाई को रोक देना चाहिए। अगर सिंचाई का कार्य रोका नहीं जाता हैं तो इससे फसल को भारी नुक्सान पहुंच सकता हैं। आलू के खेत में सिर्फ इतना ही पानी देना चाहिए जिससे मिट्टी में नमी रह सके। यदि आपको लगता हैं की आलू के पौधे पीले पड रहे हैं, तो उसी समय खेत में पानी देना बंद कर दे।

क्या आलू की खेती में ज्यादा लागत आती हैं

आलू की खेती में अन्य फसलों के मुकाबले ज्यादा लागत नहीं आती हैं। आलू की खेती छोटे किसान भी लाभ उठाने के लिए कर सकते है। आलू की खेती भारत के बहुत से राज्यों में सामान्य रूप से करी जाती है। आलू की फसल का उत्पादन किसान द्वारा साल में दो बार किया जा सकता हैं आलू की खेती में बहुत ही कम पानी की आवश्कता रहती है। यदि किसान रासायनिक पदार्थो का उपयोग करके उत्पादन नहीं करना चाहते हैं तो वो जैविक खाद का भी उपयोग कर सकते हैं या फिर गोबर खाद का भी उपयोग किसानो द्वारा किया जा सकता है।

आलू की खुदाई कब की जाती हैं

आलू की खुदाई मध्य मार्च के महीने में करी जाती हैं। आलू की खुदाई का सही समय मध्य मार्च ही माना जाता है। आलू की फसल लगभग 60 दिन में पककर तैयार हो जाती हैं, लेकिन ज्यादा से ज्यादा समय 90–110 दिन का समय आलू की फसल को पकने में लगता है। आलू की खुदाई के बाद कम से कम आलू को कुछ दिनों के लिए सूखने के लिए छोड़ दिया जाना चाहिए ताकि आलू को विभिन्न रोगों से बचाया जा सके। आलू की फसल को कई प्रकार के रोगों से बचाने के लिए किसानों द्वारा आलू को कोल्ड स्टोर जैसी जगहों पर स्टॉक कर दिया जाता हैं, ताकि आलू की कीमत बढ़ने पर आलू को स्टोर से निकाला जा सके और उन्हें अच्छी कीमतों पर बेचा जा सकें।

HD 2967 Wheat Variety in Hindi: गेहूं की इस किस्म से किसानों को शानदार पैदावार मिल सकती है

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि आधुनिक दौर में गेहूं की उन प्रजातियों की बिजाई करना चाहते हैं, जिस प्रकार में रोग प्रतिरोधक क्षमता ज्यादा हो। **सामान्यतः** गेहूं की फसल में पीला रतुआ रोग होने का ज्यादा खतरा रहता है, जिससे गेहूं की शानदार पैदावार नहीं मिलती है।ऐसी स्थिति में कृषक गेहूं की एचडी 2967 किस्म की ज्यादा बिजाई कर रहे हैं। **सामान्यतः** भारत के प्रत्येक राज्य में इस किस्म की बिजाई होती है। परंतु, हरियाणा के कृषक इस किस्म को कुछ अधिक ही पंसद करते हैं। बतादें, कि इस किस्म की बिजाई करने के पश्चात कीटनाशक पर खर्चा नहीं करना पड़ता है। किसान भाइयों के मुताबिक, आधुनिक दौर में गेहूं की उन प्रजातियों की बिजाई करना चाहते हैं, जिस किस्म में रोग प्रतिरोधक क्षमता काफी अधिक मात्रा में होती है।

बतादें, कि सामन्यतः गेहूं की फसल में पीला रतुआ रोग होने की आशा रहती है, जिससे गेहूं की बेहतरीन पैदावार नहीं मिल पाती है।

2967 Wheat Variety Details (गेहूं की एचडी 2967 किस्म HD)

कृषि विशेषज्ञों का कहना है, कि यह एक अगेती प्रजाति है, जिसकी बिजाई से फसल में काफी कम रोग लगते हैं। इसके साथ ही गेहूं की उपज भी शानदार मिलती है। इस वजह से ज्यादातर किसान 2967 किस्म SD 2967 variety of wheat की बिजाई करते हैं। इस किस्म में पीला रतुआ रोग से लड़ने की बेहतरीन क्षमता होती है। बतादें, कि यह गेहूं की फसल में लगने वाला ऐसा रोग है, जो कि फसल को आधे से ज्यादा बर्बाद कर देता है। यदि वक्त पर इस रोग की रोकथाम न की जाए, तो यह समीपवर्ती पौधों को अपनी भी चपेट में ले लेती है। ऐसी स्थिति में ज्यादातर किसान एचडी 2967 की बिजाई करते हैं।

2967 गेहूं बोने का समय?

भ्क 2967 variety sowing गेंहू की एक अगेती किस्म है, 2967 गेहूं बोने का समय 1 से 15 नवंबर तक होती हैं। यदि आपने वक्त रहते बुवाई नहीं की है, तो इससे गेहूं के उत्पादन पर प्रभाव पड़ सकता है।

एचडी 2967 किस्म से पैदावार एवं तूड़ा

गेंहू की एचडी 2967 किस्म की बुवाई से औसत उत्पादन 50.1 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तथा पैदावार क्षमता 66.1 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक होती है। गेहूँ की HD 2967 अंतपमजल एचडी 2967 किस्म का तूड़ा काफी शानदार बनता है। इस किस्म की बढ़वार ज्यादा होती है, जिससे एक एकड़ फसल में बाकी किस्मों से ज्यादा तूड़ा निकलता है। बतादें, कि तूड़े को सूखे चारे के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है। किसान भाई तूड़े को बेच भी सकते हैं। यह काफी ज्यादा महंगा बिकता है।

जानिए यूकलिप्टस पेड़ की खूबियों के बारे में

यूकलिप्टस का वृक्ष आपको कुछ सालों में ही धनी बना सकता है। यदि आप शानदार आमदनी करना चाहते हैं, तो ये एक बेहद बेहतरीन विकल्प है। यदि आप एक बड़े भूमि के हिस्से के मालिक हैं और आप उस जगह का समुचित उपयोग करना चाहते हैं तो ये खबर आपके लिए काफी काम की है। यदि आप किसी ऐसी भूमि पर पेड़ उगाकर शानदार मुनाफा कमा सकते हैं। इसके अंदर लागत भी अधिक नहीं होती है। साथ ही, कुछ वर्ष उपरांत आय भी तगड़ी होती है। दरअसल, किसान भाइयों हम बात कर रहे हैं, यूकलिप्टस के वृक्ष के बारे में। भारत में इस पेड़ का नाम सफेदा, गम एवं नीलगिरी है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, इस पेड़ का मूल ऑस्ट्रेलिया से है। ये काफी शीघ्रता से बढ़ते हैं, कि कुछ वर्षों के दौरान ही एक परिपक्व पेड़ की भांति बन जाते हैं। इस पेड़ की लकड़ी भी बेहद फायदेमंद है। इस वजह से इन पेड़ों की लकड़ियां अत्यंत महंगी होती हैं। दरअसल, इन वृक्षों को धन प्रदान करने वाले वृक्ष कहा जाता है।

अगर एक बार आपने इनका उत्पादन कर लिया, तो आपको कोई भी उन्नति करने एवं मालामाल होने से रोक नहीं पाऐगा।

यूकलिप्टस पेड़ के विभिन्न लाभों के बारे में जानें

यूकलिप्टस के विभिन्न लाभ हैं, साथ ही, ये वृक्ष मलेरिया से संरक्षित करता है। यूकलिप्टस के पेड़ों को संरक्षित रखने के लिए सिंचाई की जरूरत होती है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, यूकलिप्टस के वृक्ष अत्यधिक जल सोखते हैं। अगर यूकलिप्टस को ऐसी जगहों पर उगाया जाए जहां अशुद्ध यानी गंदा पानी काफी ज्यादा जमता है, तो पानी इकट्ठा नहीं होगा और मच्छर पानी पर नहीं पनपेंगे। यूक. लिप्टस के वृक्ष काफी ज्यादा भूमि नहीं घेरते बल्कि ये सीधे बढ़ते हैं।

यूकलिप्टस का पेड़ कितने सालों में विकसित हो सकता है

युकलिप्टस का पेड़ चार से पांच वर्षों के अंतराल में इतना बड़ा हो जाएगा कि इससे 400 किलो तक लकड़ी बिक सकती है। आप इस पेड़ को लगाने के कुछ वर्षों उपरांत ही काफी धनवान बन सकते हैं। सांस से संबंधित समस्याओं को दूर करने में भी इस वृक्ष का तेल काफी कारगर साबित होता है। अगर आपके पास भूमि का काफी छोटा हिस्सा है और आप कम समयावधि में धन कमाना चाहते हैं, तो यूकलिप्टस का वृक्ष आपके लिए एक शानदार विकल्प है।

जौ की फसल का शानदार उत्पादन पाने के लिए इन बातों की जानकारी बेहद आवश्यक

जौ की खेती रेतीली से लगाकर मध्यम दोमट मृदा तक में की जा सकती है। परन्तु, इसकी शानदार उपज प्राप्त करने के लिए समुचित जल निकासी एवं अच्छी उर्वरकता वाली दोमट मृदा उपयुक्त मानी जाती है। जौ की खेती बाकी तरह की भूमि जैसे-लवणीय, क्षारीय अथवा हल्की मृदा में भी की जा सकती है।

बुआई का समय

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इसकी बिजाई के लिए जो बीज इस्तेमाल में लाया जाए, वह रोगमुक्त, प्रमाणित व क्षेत्र के अनुसार उन्नत किस्म का होना चाहिए। बीजों में किसी अन्य किस्म के बीज उपलब्ध नहीं होने चाहिए। बोने से पूर्व बीज के अंकुरण का परीक्षण अवश्य कर लेना चाहिए। जौ रबी मौसम की फसल है, जिसे सर्दी के मौसम में उत्पादित किया जाता है। सामान्य तौर पर इसकी बिजाई अक्टूबर से लेकर दिसंबर तक की जाती है।

सिंचाई

असिंचित क्षेत्रों में 20 अक्टूबर से 10 नवंबर तक जौ की बिजाई करनी चाहिए। वहीं, सिंचित क्षेत्रों में 25 नवंबर तक बिजाई कर देनी चाहिए। पछेती जौ की बिजाई 15 दिसंबर तक कर देनी चाहिए।

बीज एवं बीजोपचार

जौ के लिए 80–100 कि.ग्रा. बीज प्रति हैक्टयर बिजाई के लिए उपयुक्त है।

जौ की बिजाई हल के पीछे कूंड़ों में अथवा सीड. ड्रिल से 20–25 सें.मी. पंक्ति से पंक्ति की दूरी पर 5–6 सें.मी. गहराई पर करें। असिंचित दशा में 6–8 सें.मी. गहराई में बिजाई करें। बीज से उत्पन्न होने वाले रोगों पर नियंत्रण के लिए बीज उपचार जरूरी है। खुली कंगियारी से संरक्षण के लिए 2 ग्राम बाविस्टन अथवा वीटावैक्स से प्रति कि.ग्रा. बीज उपचारित करें। बंद कंगियारी पर काबू करने हेतु थीरम तथा बाविस्टीन / वीटावैक्स को 1:1 के अनुपात में मिलाकर 2.5 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज के लिए उपयोग करें।

असिंचित एवं सिंचित क्षेत्रों के लिए प्रजातियां

जौ की छिलका वाली उन्नत प्रजातियां जैसे कि –अंबर, ज्योति, आजाद, के 141, आरडी 2035, आर.डी. 2052, आरडी 2503, आरडी 2508, आरडी 2552, आरडी 2559, आरडी 2624, आरडी 2660, आर.डी. 2668, आरडी 2660, हरितमा, प्रीती, जागृति, लखन, मंजुला, आरएस 6, नरेंद्र जौ1, नरेंद्र जौ 2, नरेंद्र जौ 3, के 603, एनडीबी 1173, एसओ 12 हैं। बिना छिलके वाली उन्नत प्रजातियां गीतांजलि (के–1149), डीलमा, नरेंद्र जौ 4 (एनडीबी 943)।

ऊसरीली भूमि के लिए कुछ बेहतर किस्में

आजाद, के–141, जे.बी. 58, आर.डी. 2715, आर.डी. 2786, पी.एल. 751, एच.बीएल. 316, एच.बी.एल. 276, बी.एलबी. 85, बी.एल.बी. 56 व लवणीय एवं क्षारीय भूमि के लिए एन.डी.बी. 1173, आर.डी. 2552, आर.डी 2794, नरेन्द्र जौ–1, नरेन्द्र जौ–3 हैं।

माल्ट व बीयर के लिए उन्नत शानदार किस्में

प्रगति, तंभरा, डीएल 88 (6 धारीय), आरडी 2715, डीड. ब्ल्यूआर 28 व रेखा (2 धारीय) एवं डी.डब्लू आर. 28 तथा अन्य प्रजातियां जैसे–डी.डब्ल्यूआर.बी.91, डी.डब्ल्यू.आर.यू.बी 52, बी.एच. 393, पी.एल. 419, पी.एल. 426, के. 560, के.–409, एन.ओ.आरजौ–5 आदि हैं।

जौ की फसल में उर्वरकों का उपयोग इस प्रकार करें

उर्वरकों का इस्तेमाल मृदा परीक्षण के आधार पर ही करना बेहतर रहता है। असिंचित दशा के लिए एक हैक्टेयर में 40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 20 कि.ग्रा. फॉस्फोरस और 20 कि.ग्रा. पोटाश का इस्तेमाल करें। सिंचित तथा समय से बुआई के लिए प्रति हैक्टर 60 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 30 कि.ग्रा. फास्फोरस तथा 20 कि.ग्रा. पोटाश और माल्ट प्रजा. तियों के लिए 80 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 40 कि.ग्रा. फॉस्फोरस और 20 कि.ग्रा पोटाश इस्तेमाल करें। ऊसर और विलंब से बिजाई की दशा में नाइट्रोजन 30 कि.ग्रा., फॉस्फेट 20 कि.ग्रा. और जिंक सल्फेट 20–25 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर उपयोग करें।

जैविक खेती से किसान कमा सकते है अधिक उपज जाने सम्पूर्ण जानकारी

भारत वर्ष में जैविक खेती बहुत पुराने समय से चलती आ रही है। हमारे ग्रांथों में प्रभु कृष्ण और बलराम, जिन्हें हम गोपाल और हलधर कहते हैं, कृषि के साथ–साथ गौपालन भी किया जाता था। आजादी मिलने तक भारत में यह परम्परागत खेती की जाती रही है। बाद में जनसंख्या विस्फोट ने देश पर उत्पादन बढ़ाने का दबाव डाला, जिसके परिणामस्वरूप देश रासयनिक खेती की ओर बढ़ा और अब इसके बुरे परिणाम सामने आने लगे हैं। रासायनिक खेती हानिकारक होने के साथ–साथ बहुत महंगी होती है, जिससे फसल उत्पादन की लागत बढ़ जाती ह। इसलिए देश अब जैविक खेती की ओर बढ़ रहा है क्योंकि यह स्थायी, सस्ता और स्वावलम्बी है। आइए जानते हैं जैविक खेती क्या है और किसानों को इसे क्यों करना चाहिए।

मिट्टी की सेहत सुधार में केंचुए का है मुख्य योगदान

हम सब जानते हैं कि जमीन पर पाए जाने वाले केंचुए आदमी के लिए बहुत उपयोगी हैं। भूमि में पाए जाने वाले केंचुए खेत में पढ़े हुए पेड़–पौधों के अवशेषों और कार्बनिक पदार्थों को खाकर गोलियों में बदल देते हैं, जो पौधों के लिए देशी खाद बनते हैं। इस केंचुए से 2 महीने में कई हैक्टेयर का खाद बनाया जा सकता है। इस खाद को बनाने के लिए आसानी से उपलब्ध खरपतवार, मिट्टी और केंचुआ की जरूरत पड़ती है। जैव कल्चर के माध्यम से बढ़ती है

मिट्टी की उर्वरा शक्ति

जैव कल्चर मिट्टी की उर्वरा शक्ति और फसल उत्पादन क्षमता को बढ़ाते हैं। Nitrogen उर्वरक अक्सर दलहनी फसलों में नहीं प्रयोग किया जाता है, इसका कारण यह है कि राइजोबियम कल्चर दलहनी पौधों की जड़ों में पाया जाता है। जो वायुमंडल से नाईट्रोजन लेकर पोषक तत्वों की पूर्ति करता है, लेकिन दूसरी फसलों की जड़ों में राईजोबियम नहीं होता है

इसलिए दलहनी पौधों को दूसरी फसलों के साथ उगाया जाता है जिससे नाईट्रोजन की आवश्यकता को पूरा किया जाता है।

जैविक खाद बनाने की विधि

कृषि में अत्यधिक रासायनिक उर्वरक तथा कीटनाशक के उपयोग से बीमारियां और खर्च बढ़ रहे हैं जैविक कृषि को अपनाने से लागत कम होगी और बीमारी कम होगी। इसके लिए किसानों को अपने घर पर देशी खाद और रासायनिक कीटनाशक बनाने की जरूरत है। किसान घर पर गाय के गोबर, गो मूत्र और गुड से तरल जैविक खाद बना सकते है।

जैविक खाद होती है पोषक तत्वों से भरपूर

फसल की उत्पादकता मिट्टी में नाईट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश और अन्य पोषक तत्व की मात्रा पर निर्भर करती है। जब मिट्टी में पोषक तत्व की कमी होती है, इसके लिए प्राकृतिक खाद का उपयोग करना चाहिऐ। जैविक खाद में नाईट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश की मात्रा जानना महत्वपूर्ण है।

जैविक तरीके से उगाई गयी सब्जियों का किसानों को मिलता है अधिक दाम

जैविक सब्जी और साग की मांग बढ़ गई है। इसके लिए यह महत्वपूर्ण है कि सब्जी में प्रयोग किया गया खाद कीटनाशक गोबर, केंचुआ और अन्य जैविक खाद से बना हो। किसान अपने घर में कीटनाशक और खाद बनाकर जैविक सब्जी और साग उत्पादन कर सकते हैं। जिससे अच्छा पैसा कमाया जा सकता है।

पंजीकृत होना बहुत आवश्यक है

कृषक जैविक खेती के लिए पंजीकृत होना चाहिए। जिससे फसलों और फलों का अच्छा मूल्य मिल सकता है। केंद्र सरकार ने जैविक खेती की प्रमाणिकता देना शुरू कर दिया है। इसके लिए हर राज्य में एक सरकारी संस्था बनाई गई है। पुरे देश में निजी संस्थानों का भी सहयोग लिया जा सकता है। नियमों के साथ, यह संस्था किसी भी किसान को जैविक प्रमाणिकता देती है। यदि किसान जैविक खेती करता है तो उसे जैविक पंजीयन कराना चाहिए, क्योंकि पंजीयन नहीं होने से किसान को फसल का मूल्य कम मिलता है। किसान 1400 रुपये खर्च करके एक हैक्टेयर पंजीकृत कर सकते हैं।

प्याज उत्पादक किसान और ग्राहकों के लिए केंद्र सरकार ने कदम उठाया

प्याज की बढ़ती कीमतों के चलते केंद्र सरकार ने एक और बड़ा निर्णय लिया है। सरकार भारतभर की समस्त मंडियों में प्याज की खरीद जारी रखेगी। भाव में गिरावट आने तक सरकार का दखल जारी रहेगा। प्याज की बढ़ती कीमतों में गिरावट लाने के लिए केंद्र सरकार अब तक विभिन्न महत्वपूर्ण कदम उठा चुकी है, जिसका प्रभाव भी अब दिखने लग गया है। सरकार के दखल के पश्चात अब प्याज के भाव गिरकर 60 रुपये प्रति किलोग्राम तक गिर गए हैं। इसी मध्य केंद्र सरकार ने एक बड़ा निर्णय लिया है, जिससे प्याज कृषकों को तो लाभ होने के साथ–साथ ग्राहकों को भी राहत मिलेगी।

केंद्र सरकार प्याज की खरीद निरंतर जारी रखेगी

दरअसल, सरकार ने प्याज की खरीद जारी रखने का निर्णय लिया है। उपभोक्ता मामलों के सचिव रोहित कुमार सिंह ने बताया है, कि सरकार ने प्याज की खरीद जारी रखने का फैसला लिया है। यह खरीद भारतभर की समस्त मंडियों में होगी। उन्होंने बताया है, कि जब तक प्याज के भाव कम नहीं हो जाते सरकार तब तक प्याज की खरीद करेगी।

विगत सप्ताह ही प्याज के निर्यात पर प्रतिबंधित लगाया

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि सरकार ने विगत सप्ताह ही प्याज के निर्यात पर आगामी वर्ष 31 मार्च तक के लिए प्रतिबंध लगा दिया है। सरकार ने यह कदम प्याज की घरेलू कीमतों को नियंत्रण में रखने एवं उपलब्धता बढ़ाने के उद्देश्य से उठाया है। परंतु, प्याज उत्पादक किसान इस निर्णय से खुश नहीं हैं और भारत के विभिन्न हिस्सों में इसका विरोध कर रहे हैं। महाराष्ट्र के नासिक जनपद में भी प्याज उत्पादक किसान इस निर्णय को वापस लेने की मांग कर रहे हैं। किसानों के इसी विरोध के मध्य सरकार ने प्याज की खरीद जारी रखने का निर्णय लिया है।

निर्यात प्रतिबंध का किसानों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा

उपभोक्ता मामलों के सचिव का कहना है, कि सरकार उम्मीद कर रही है, कि जनवरी तक प्याज की कीमतें मौजूदा औसत कीमत 57.02 रुपये प्रति किलोग्राम से कम करके 40 रुपये प्रति किलोग्राम से नीचे पहुँच जाऐंगी। उन्होंने कहा कि किसानों पर निर्यात प्रतिबंध का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। साथ ही, यह व्यापारियों का एक छोटा समूह है, जो भारतीय और बांग्लादेश के बाज. ारों में कीमतों के मध्य अंतराल का लाभ उठा रहा है।

रबी सीजन में सरसों की खेती से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि रबी की फसलों में सरसों का एक काफी महत्वपूर्ण स्थान है। भारत के विभिन्न राज्यों जैसे कि उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब और हरियाणा में इसकी खेती प्रमुखता से की जाती है। परंतु, राजस्थान में विशेष रूप से अलवर, करौली, कोटा, जयपुर, धौलपुर, भरतपुर और सवाई माधोपुर इत्यादि जनपदों में किसान सरसों की बिजाई करते हैं। सरसों के बीज में अगर तेल की मात्रा की बात की जाए तो वह लगभग 30 से 48 फीसद तक पाई जाती है।

सरसों की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु तथा मृदा

सरसों का उत्पादन शरद ऋतु में किया जाता है। अच्छी पैदावार के लिए 15 से 25 सेल्सियस तापमान की जरूरत पड़ती है। हालाँकि, इसकी खेती समस्त प्रकार की मृदा में सहजता से की जा सकती है। परंतु, बलुई दोमट मृदा सबसे ज्यादा उपयुक्त मानी जाती है। यह फसल हल्की क्षारीयता को सुगमता से सहन कर सकती है। परंतु, मृदा अम्लीय नहीं होनी चाहिए।

सरसों की उन्नत किस्में कुछ इस प्रकार हैं

आपको हर साल बीज खरीदने की जरूरत नही है, क्योंकि बीज काफी ज्यादा महंगे आते हैं। इस वजह से जो बीज आपने विगत वर्ष बोया था अगर उसकी उपज पैदावार या आपके किसी किसान साथी की पैदावार शानदार रही हो तो आप उस बीज की सफाई और ग्रेडिंग करके उसमें से रोगमुक्त ओर मोटे दानों को अलग करें। साथ ही, उसका बीजोपचार करने के बाद बिजाई करें तो भी शानदार परिणाम हांसिल होंगे। परंतु, जिन कृषक भाइयों के पास ऐसे बीज उपलब्ध नहीं हैं, वे इन किस्मों के बीज की बिजाई कर सकते हैं।

- **आर एच 30:**– सिंचित व असिचित दोनो ही स्थितीयों में गेहूं, चना एवं जौ के साथ खेती के लिए उपयुक्त।
- **टी 59 (वरूणा):**– इसकी उपज असिंचित क्षेत्र में 15 से 18 हेक्टेयर होती है. इसमें तेल की मात्रा 36 प्रतिशत होती है।
- **पूसा बोल्ड:**– आशीर्वाद (आर. के. 01से 03): यह किस्म देरी से बुवाई के लिए (25 अक्टुबर से 15 नवम्बर तक) उपयुक्त पायी गई है।

- **अरावली (आर.एन.393):**– सफेद रोली के लिए मध्यम प्रतिरोधी है।
- **NRC HB 101:**– यह सेवर भरतपुर से विकसित उन्नत किस्म है। इसकी पैदावार काफी ज्यादा शानदार रही है। सिंचित क्षेत्र के लिए अत्यंत उपयोगी किस्म है। 20–22 क्विंटल उत्पादन प्रति हेक्टेयर तक दर्ज किया गया है।
- **NRC DR 2:**– इसका उत्पादन तुलनात्मक काफी अच्छा है। इसका उत्पादन 22–26 क्विंटल तक दर्ज किया गया है।
- **R-H&749:**– इसका उत्पादन 24–26 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक दर्ज किया गया है।

सरसों की फसल के लिए खेत की तैयारी

सरसों के लिए भुरभुरी मृदा की काफी आवश्यकता होती है। इसके लिए खरीफ की कटाई के पश्चात एक गहरी जुताई करनी चाहिए। वहीं, इसके पश्चात तीन चार बार देसी हल से जुताई करनी फायदेमंद होती है। नमी संरक्षण के लिए हमें पाटा अवश्य लगाना चाहिए। खेत में दीमक, चितकबरा और बाकी कीटो का संक्रमण ज्यादा हो तो, नियंत्रण के लिए आखिरी जुताई के वक्त क्यूनालफॉस 1.5 फीसद चूर्ण 25 किलोग्राम प्रति हेक्टयर की दर से खेत में मिश्रित करना चाहिए। साथ ही, उत्पादन में बढ़ोतरी करने के लिए 2 से 3 किलोग्राम एजोटोबेक्टर एवं पी.ए.बी कल्चर की 50 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद अथवा वर्मीकल्चर में मिलाकर आखिरी जुताई से पहले मिला दें।

सरसों की बिजाई की समयावधि

सरसों की बिजाई करने के लिए उपयुक्त तापमान 25 से 26 डिग्री सेल्सियस तक होता है। बारानी में सरसों की बिजाई 05 अक्टूबर से 25 अक्टूबर तक कर देनी चाहिए। सरसों की बिजाई कतारो में करनी चाहिए। कतार से कतार का फासला 45 सें. मी. और पौधों से पौधे का फासला 20 सें. मी. रखना चाहिए। इसके लिए सीडड्रिल मशीन का इस्तेमाल भी करना चाहिए। सिंचित क्षेत्र में बीज की गहराई 5 से.मी. तक रखी जाती है। अगर बीज दर की बात करें तो सरसों की बिजाई के लिए शुष्क इलाकों में 4 से 5 कि.ग्रा और सिंचित क्षेत्र में 3– 4 कि. ग्रा बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त रहता है।

बीजोपचार

- जड़ सड़न रोग से संरक्षण के लिए बीज को बिजाई के पूर्व फफूंदनाशक बाबस्टीन वीटावैक्स, कैपटान, थिरम, प्रोवेक्स मे से कोई एक 3 से 5 ग्राम दवा प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें।
- कीटो से बचाव हेतु ईमिडाक्लोरपीड 70 डब्लू पी, 10 मिलीलीटर प्रति किलोग्राम बीजदर से उपचरित करें।
- कीटनाशक उपचार के बाद मे एजेटोबॅक्टर तथा फॉस्फोरस घोलक जीवाणु खाद, दोनों की 5 ग्राम मात्रा से प्रति किलो बीज को उपचारित कर बोएं।

सरसों की फसल में खाद उर्वरक का बेहतर प्रबंधन

सिंचित फसल के लिए 7 से 12 टन सड़ी गोबर, 175 किलो यूरिया, 250 सिंगल सुपर फॉस्फेट, 50 किलो म्यूरेट ऑफ पोटाश और 200 किलो जिप्सम बिजाई से पहले खेत में मिलानी है। यूरिया की आधी मात्रा बिजाई के वक्त और शेष आधी मात्रा प्रथम सिंचाई के उपरांत खेत में डालें। असिंचित इलाकों में बरसात से पहले 4 से 5 टन सड़ी गोबर, 87 किलो यूरिया, 125 किलो सिंगल सुपर फॉस्फेट, 33 किलो म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति हेक्टेयर के मुताबिक बिजाई के वक्त खेत में डाल दें। वहीं, अगर हम सिंचाई की बात करें तो प्रथम सिंचाई बिजाई के 35 से 40 दिन बाद एवं द्वितीय सिंचाई दाने बनने की अवस्था में करें।

सरसों की बेहतर पैदावार के लिए खरपतवार नियंत्रण कैसे करें ?

सरसों के साथ विभिन्न प्रकार के खरपतवार उग आते हैं। इनके नियंत्रण के लिए निराई गुड़ाई बुवाई के तीसरे सप्ताह के उपरांत से नियमित समयांतराल पर 2 से 3 बार करना जरूरी होता है। रासायनिक नियंत्रण के लिए अंकुरण से पहले और बुवाई के शीघ्र पश्चात खरपतवारनाशी पेंडीमेथालीन 30 ईसी रसायन की 3.3 लीटर मात्रा को प्रति हेक्टेयर की दर से 800 से 1000 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए। अगर जलवायु अच्छी हो और फसल रोग, कीट एवं खरपतवार मुक्त रहे एवं पूर्णतया वैज्ञानिक दिशा-निर्देशों के साथ खेती करें तो 25–30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक पैदावार प्राप्त की जा सकती है।

कपास की खेती किसान भाइयों को मोटा मुनाफा दिला सकती है

कपास यानी कि रुई की खेती के जरिए किसान भाई शानदार मुनाफा हांसिल कर सकते हैं। किसान भाई रुई की बाजार में बिक्री करके शानदार मुनाफा प्राप्त कर सकते हैं। किसान भाई रुई की खेती कर बेहतरीन फायदा अर्जित कर सकते हैं। किसान भाइयों को कपास की खेती करने के लिए किन बातों का विशेष ध्यान रखना पड़ेगा। कपास की खेती करने के लिए भूमि को बेहतर ढ़ंग से ध्यान रखना होगा। कपास की खेती के लिए भूमि को शानदार तरीके से एकसार करना आवश्यक है। कृषक भाई इसमें पर्याप्त मात्रा में जैविक खाद डालें। कपास की बिजाई के लिए बीज की गुणवत्ता एवं भूमि की उर्वरकता पर विचार करें। अक्सर प्रति एकड़ 10 किलोग्राम बीज की जरूरत पड़ती है।

खरपतवार नाशक का स्प्रे बेहद आवश्यक है

बुवाई के दौरान प्रति एकड़ 20 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस एवं 40 किलोग्राम पोटाश डालें। 20 से 25 दिनों के पश्चात प्रति एकड़ 10 किलोग्राम नाइट्रोजन डालें। 40 से 50 दिनों के पश्चात प्रति एकड़ 10 किलोग्राम नाइट्रोजन डालें। खरपतवार की रोकथाम: कपास की फसल खरपतवार से पीड़ित हो सकती है। खरपतवारों को दूर करने के लिए खरपतवार नाशक का छिड़काव करें।

कपास के क्या-क्या लाभ हैं

कपास यानी रुई एक महत्वपूर्ण नकदी फसल है। किसान भाई रुई को मार्केट में बेचकर अच्छा मुनाफा प्राप्त कर सकते हैं। रुई से सूती कपड़ा, धागा और रस्सी इत्यादि तैयार किए जाते हैं।

कपास यानी रुई को धूप में सुखाना बेहद आवश्यक है

कपास की फसल को कई रोग तथा कीट लग सकते हैं। किसान भाई वक्त-वक्त पर फसल की जांच अवश्य करें, रोग एवं कीटों को भी नियंत्रित करें। आवश्यकता के मुताबिक, रोग नाशक तथा कीटनाशक का छिड़काव कराएं। रुई 120 से 130 दिनों के समयांतराल में पक जाती है। जब फसल पक जाए, तो कटाई करें। कटाई करने के बाद कपास को धूप में सूखने दें।

अलसी की खेती से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी

अलसी की फसल बहुउद्देशीय फसल होने की वजह भारत भर में आजकल अलसी की मांग अत्यंत बढ़ी है। अलसी बहुमूल्य तिलहन फसल है, जिसका इस्तेमाल विभिन्न उद्योगों के साथ-साथ औषधियां तैयार करने में भी किया जाता है। अलसी के हर एक हिस्से का प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष तौर पर बहुत सारे रूपों में इस्तेमाल किया जा सकता है। अलसी के बीज से निकलने वाला तेल प्रायः सेवन के तौर पर इस्तेमाल में नही लिया जाता है, बल्कि दवाइयाँ बनाने में होता है। इसके तेल का इस्तेमाल वार्निश, पेंट्स व स्नेहक निर्मित करने के साथ पैड इंक और प्रेस प्रिंटिंग हेतु स्याही निर्मित करने में इस्तेमाल किया जाता है। इसका बीज फोड़ों फुन्सी में पुल्टिस बनाकर इस्तेमाल किया जाता है। अलसी के तने के माध्यम से उच्च गुणवत्ता वाला रेशा अर्जित किया जाता है। वहीं, रेशे से लिनेन निर्मित किया जाता है। अलसी की खली दूध देने वाले पशुओं के लिये पशु आहार के तौर पर इस्तेमाल की जाती है। साथ ही, खली में बहुत सारे पौध पौषक तत्वों की समुचित मात्रा होने की वजह इसका इस्तेमाल खाद के तौर पर किया जाता है। अलसी के पौधे का काष्ठीय हिस्सा और छोटे-छोटे रेशों का इस्तेमाल कागज निर्मित करने में किया जाता है।

खाद एवं उर्वरक का इस तरह इस्तेमाल करें

असिंचित इलाकों के लिए शानदार उत्पादन हांसिल करने हेतु नत्रजन 50 किग्रा. फास्फोरस 40 किग्रा. और 40 किग्रा. पोटाश की दर से और सिंचित क्षेत्रों में 100 किग्रा. नत्रजन, 60 किग्रा. फास्फोरस एवं 40 किग्रा. पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से इस्तेमाल करें। असिंचित दशा में नत्रजन व फास्फोरस और पोटाश की संपूर्ण मात्रा तथा सिंचित दशा में नत्रजन की आधी मात्रा व फास्फोरस की भरपूर मात्रा बिजाई के समय चोगें द्वारा 2–3 सेमी. नीचे इस्तेमाल करें। वहीं, सिंचित दशा में नत्रजन की शेष आधी मात्रा आप ड्रेसिंग के तौर पर प्रथम सिंचाई के पश्चात उपयोग करें। फास्फोरस के लिए सुपर फास्फेट का इस्तेमाल ज्यादा लाभप्रद है।

अलसी की खेती में इस प्रकार सिंचाई करें

यह फसल मूलतः असिंचित रूप में बोई जाती है। लेकिन, जहाँ सिंचाई का साधन मौजूद है, वहाँ दो सिंचाई पहली फूल आने पर तथा दूसरी दाना बनते वक्त करने से उत्पादन में वृद्धि होती है।

अलसी में खतपतवार नियंत्रण इस तरह करें

मुख्य रूप से अलसी में कुष्णनील, हिरनखुरी, चटरी-मटरी, अकरा-अकरी, जंगली गाजर, प्याजी, खरतुआ, सत्यानाशी, बथुआ और सेंजी इत्यादि प्रकार के खरपतवार देखे गए हैं, इन खरपतवारों के नियंत्रण के लिए किसान यह उपाय करें।

नियंत्रण हेतु इस प्रकार उपचार करें

प्रबंधन के लिए बिजाई के 20 से 25 दिन पश्चात पहली निदाई–गुड़ाई एवं 40–45 दिन बाद दूसरी निदाई–गुड़ाई करनी चाहिए। अलसी की फसल में रासायनिक विधि से खरपतवार प्रबंधन के लिए पेंडीमेथलीन 30 फीसद ई.सी. की 3.30 लीटर प्रति हेक्टेयर 800–1000 लीटर पानी में घोलकर फ्लैट फैन नाजिल से बिजाई के 2–3 दिन के समयांतराल में समान रूप से स्प्रे करें।

Dumba Goat: जानें दुम्बा बकरी की विशेषता और कीमत के बारे में

दुम्बा बकरी (dumba goat) का बाजार में शानदार भाव इसकी खूबसरती तथा चकली के भारी पन के अधार पर मिलता है। बतादें, कि दो माह के समयांतराल में ही दुम्बा के बच्चे की कीमत 30000 रुपए तक पहुँच जाती है और तीन चार महीने तक इसकी कीमत 70–75 हजार रुपए तक पहुँच जाती है। कृषकों की आमदनी बढ़ाने के लिए कृषि के अतिरिक्त पशुपालन भी एक शानदार विकल्प हो सकता है। पशुपालन में अब तक गाय, बकरी एवं सुअर पालन के बारे में आपने सामान्यत सुना ही होगा। लेकिन, दुम्बा पशुपालन इन्ही में से एक अच्छा विकल्प है। निश्चित तौर पर यह भी रोजगार का एक अच्छा विकल्प है।

Dumba goat की विशेष बात यह है, कि इसमें आमदनी काफी शानदार होती है। दरअसल, बाजार में दुम्बा की मांग भी होती है। इसके साथ ही, यह शीघ्रता से तैयार भी हो जाता है। अपनी इन्हीं समस्त विशेषताओं की वजह यह पशुपालन के माध्यम से पैसे कमाने का अच्छा विकल्प हो सकता है।

उत्तर प्रदेश के अमरोहा जिले में भी दुम्बा पालन (dumba goat)

उत्तर प्रदेश के अमरोहा जनपद के किसान गुड्डू अंसारी विगत चार वर्षों से दुम्बा पालन कर रहे हैं। इससे वो हर वर्ष लाखों रुपए अर्जित कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि वो एक ऐसा रोजगार चाह रहे थे, जिसमें कम वक्त निवेश करना पड़े। साथ ही, शानदार मुनाफा प्राप्त हो इस वजह से उन्होंने दुम्बा पालन करने का निर्णय किया। गुड्डू का कहना है, कि शुरुआत में उन्होंने पांच दुम्बा से अपना व्यवसाय शुरु किया, जिसमें चार मादा एवं एक नर को रखा इसके पश्चात उन्होंने बीस और दुम्बा बकरी खरीदी।

दुम्बा बकरी की कीमत एवं वजन (Dumba Goat Price in India)

दुम्बा बकरी की एक प्रजाति जिनकी दुम चक्की की पाट की तरह गोल और भारी होती है। दुम्बा की इस खूबी की वजह से इसकी कीमत भी अच्छी रहती है। इसलिए लोग इसे बेहद पसंद करते हैं। विशेष रूप से लोग नर को काफी ज्यादा पसंद करते हैं। साथ ही, इसके अतिरिक्त बच्चों को भी बेचते हैं।

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि एक बार में दुम्बा एक ही बच्चे को पैदा करती है। बाजार मांग पर गुड्डू अंसारी उन्हें दुम्बा के बच्चे विक्रय करते हैं। कनउइं हवंज सात माह से लगाकर 1 वर्ष के मध्य 9वें माह में बच्चा देती है। प्रारंभिक दो माह में ही बच्चा 25 – किलो का हो जाता है। इसकी शानदार खूबसरती एवं चकली के भारी पन के अनुरूप भाव मिलता है।

प्रकार के खरपतवार उग आते हैं। इनके नियंत्रण के लिए निराई गुड़ाई बुवाई के तीसरे सप्ताह के उपरांत से नियमित समयांतराल पर 2 से 3 बार करना जरूरी होता है। रासायनिक नियंत्रण के लिए अंकुरण से पहले और बुवाई के शीघ्र पश्चात खरपतवारनाशी पेंडीमेथालीन 30 ईसी रसायन की 3.3 लीटर मात्रा को प्रति हेक्टेयर की दर से 800 से 1000 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए। अगर जलवायु अच्छी हो और फसल रोग, कीट एवं खरपतवार मुक्त रहे एवं पूर्णतया वैज्ञानिक दिशादृनिर्देशों के साथ खेती करें तो 25–30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक पैदावार प्राप्त की जा सकती है।

दुम्बा पालक गुड्डू बकरी का चारा एवं रखरखाव किस तरह करते हैं ?

गुड्डू अंसारी का कहना है, कि वो कनउइं हवंज को भूस की सानी खिलाते हैं तथा चने का दाना खाने के तौर पर देते हैं। सर्दी के मौसम में चने का दाना, जौ एवं बाजरा खिलाते हैं। इसके अतिरिक्त शर्दियों से बचाने के लिए सरसों तेल का इस्तेमाल किया जाता है।

क्या हैं पंढरपुरी भैंस की विशेषताएं, दुग्ध उत्पादन क्षमता व कीमत

पंढरपुरी भैंस को विभिन्न नामों से जाना जाता है। ये विशेष तौर पर महाराष्ट्र के क्षेत्रों में पाई जाती हैं। वैसे तो भैंस की इस नस्ल की कई सारी विशेषताएं हैं। परंतु, इसे अपनी दूध उत्पादन क्षमता के लिए काफी जाना जाता है। ये भैंस एक दिन के अंदर 15 लीटर तक दूध देने की क्षमता रखती है। भारत में गाय के साथ–साथ भैंसों का भी पालन किया जाता है। भैंस के दूध में फैट की मात्रा ज्यादा होती है। इस वजह से बाजार में इसकी काफी ज्यादा मांग रहती है।

वहीं, डेयरी उत्पादों में भी भैंस के दूध का काफी उपयोग किया जाता है। ज्यादा मुनाफे की वजह से विभिन्न डेयरी पालक एवं किसान भैंसों का पालन करते हैं। अब यदि ऐसी स्थिति में आप भी एक भैंस अपने तबेले में लाने की सोच रहे हैं, तो ये खबर अवश्य पढ़ लें। वैसे तो भैंस की समस्त नस्लें ही एक से बढ़कर एक हैं, लेकिन इस लेख में हम आपको एक ऐसी नस्ल से अवगत कराऐंगे, जो कि आपको शानदार मुनाफा प्रदान करेगी। इस भैंस को अपनी दुग्ध उत्पादन क्षमता के लिए जाना जाता है। जो कि बाकी भैंसों की तुलना में अधिक दूध देती है। हम भैंस की पंढरपुरी नस्ल की बात कर रहे हैं।

पंढरपुरी भैंस प्रतिदिन 15 लीटर दूध प्रदान करती है

पंढरपुरी भैंस की उत्पत्ति महाराष्ट्र के पंढरपुरी इलाके से हुई है। ऐसा कहते हैं, भैंस का नाम पंढरपुर गांव से पड़ा है, जो महाराष्ट्र के सोलापुर जनपद में मौजूद है। इसे पंधारी, महाराष्ट्र भैंस अथवा धारवाड़ी के नाम से भी जाना जाता है। हालाँकि, ये भैंस देश के विभिन्न इलाकों में पाई जाती है। परंतु, महाराष्ट्र में इसका सर्वाधिक पालन किया जाता है। यह भैंस महाराष्ट्र के पंढरपुर, पश्चिम सोलापुर, पूर्व सोलापुर ,बार्शी, अक्कलकोट, सांगोला, मंगलवेड़ा, मिराज, कर्वी, शिरोल और रत्ना. गिरी जैसे जनपदों में पाई जाती है। इस नस्ल को उसकी विशेषताओं के लिए जाना जाता है। लेकिन, इसकी सबसे बड़ी विशेषता है, इसके दूध देने की क्षमता। ये भैंस प्रतिदिन 15 लीटर तक दूध दे सकती है। यदि आप भी इस भैंस को आय का एक स्त्रोत बनाना चाहते हैं, तो सबसे पहले इसकी पहचान, कीमत और विशेषताऐं जान लें।

पंढरपुरी भैंस की पहचान एवं विशेषताएं इस प्रकार हैं

- पंढरपुरी भैंस के सींग किसी तलवार की भांति नजर आते हैं। इनकी लंबाई लगभग 45 से 50 सेंटीमीटर तक होती है। सींग सिर से ऊपर की तरफ आते हुए अंदर की ओर मुड़ जाते हैं।

- इस भैंस का वजन लगभग 450 से 470 किलो के मध्य होता है।
- पंढरपुरी भैंस हल्के काले रंग अथवा भूरे रंग की होती है। बहुत सारी पंढरपुरी भैंस में सफेद धब्बे भी दिखने को मिल जाते हैं।
- इस भैंस के बाल चमकदार और मध्यम साइज के होते हैं।
- इस भैंस का सिर लंबा एवं पतला होता है, जबकि नाक की हड्डी थोड़ी बड़ी होती है।
- पंढरपुरी भैंस शरीर से कठोर तथा मजबूत होती है।
- पंढरपुरी भैंस की प्रतिदिन दूध देने की क्षमता औसतन 6 से 7 लीटर तक होती है। सही रखरखाव मिलने पर ये रोजाना 15 लीटर तक भी दूध देने की क्षमता रखती है।

पंढरपुरी भैंस का प्रतियोगिताओं में भी काफी दबदबा है

महाराष्ट्र में पंढरपुरी भैंस का पालन केवल दूध के लिए नहीं किया जाता बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में किसान इन्हें इस वजह से भी पालते हैं, ताकि वे रेसिंग तथा बुल फाइटिंग जैसी प्रतियोगिताओं में हिस्सा ले सकें। ये अत्यंत शांत स्वभाव की होती हैं, इसलिए किसान इन्हें सहजता से पाल सकते हैं। इन्हें अधिकांश क्षेत्रों में पाला जाता है। जहां धान, गन्ना और ज्वार सहजता से उपलब्ध हो सके। यह इनकी मुख्य खुराक में से एक है। इसकी कीमत की बात की जाए तो एक पंढरपुरी भैंस की कीमत लगभग 50 हजार से 2 लाख रुपये के मध्य होती है। यह कीमत क्षेत्र एवं भैंस के दूध देने की क्षमता पर निर्भर करती है।

मिट्टी की सेहत–खाद

जानिए पारिस्थितिकी और उसके प्रमुख घटक क्या–क्या हैं?

पारिस्थितिकी विज्ञान की एक महत्वपूर्ण शाखा है, जिसमें मानव विज्ञान, जनसंख्या, समुदाय, पारिस्थितिकी तंत्र एवं जीवमंडल शम्मिलित है। पारिस्थितिकी जीवों, पर्यावरण एवं जीव एकदूदूसरे और उनके पर्यावरण के साथ कैसे वार्तालाप करते हैं। इसके विभिन्न स्तर होते हैं, जैसे समुदाय, जीवमंडल, पारिस्थितिकी तंत्र, जीव और जनसंख्या। एक पारिस्थितिकी विज्ञानी का प्राथ. मिक उद्देश्य जीवन प्रक्रियाओं, अनुकूलन और आवास, जीवों की परस्पर क्रिया और जैव विविधता के संदर्भ में उनकी समझ में काफी सुधार करना है।

जैविक और अजैविक कारक

पारिस्थितिकी का प्रमुख उद्देश्य पर्यावरण में जीवित चीजों के जैविक और अजैविक कारकों के वितरण को समझना आवश्यक है। जैविक तथा अजैविक कारकों में जीवित एवं निर्जीव कारक एवं पर्यावरण के साथ उनकी वार्तालाप शम्मिलित है।

जैविक घटक

जैविक घटक किसी पारिस्थितिकी तंत्र के सजीव कारक हैं। जैविक घटकों के कुछ उदाहरणों में बैक्टीरिया, जानवर, पक्षी, कवक, पौधे इत्यादि शम्मिलित हैं।

अजैविक घटक

अजैविक घटक किसी पारिस्थितिकी तंत्र के निर्जीव रासायनिक और भौतिक कारक हैं। इन घटकों को वायुमंडल, स्थलमंडल और जलमंडल से प्राप्त किया जा सकता है।

अजैविक घटकों के कुछ उदाहरणों में सूर्य का प्रकाश, मिट्टी, हवा, नमी, खनिज और बहुत कुछ शामिल हैं। जीवित जीवों को जैविक घटकों में वर्गीकृत किया गया है, जबकि सूरज की रोशनी, पानी, स्थलाकृति जैसे गैर-जीवित घटकों को अजैविक घटकों के अंतर्गत सूचीबद्ध किया गया है।

पारिस्थितिकी के प्रकार

पारिस्थितिकी को विभिन्न प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है। पारिस्थितिकी के विभिन्न प्रकार नीचे प्रदान किए गए हैं।

वैश्विक पारिस्थितिकी

यह पृथ्वी के पारिस्थितिक तंत्र, भूमि, वायुमंडल तथा महासागरों के मध्य परस्पर क्रिया से जुड़े हैं। यह बड़े स्तर पर होने वाली अंतः क्रियाओं तथा ग्रह पर उनके असर को समझने में सहायता करता है।

लैंडस्केप पारिस्थितिकी

यह ऊर्जा, सामग्री, जीवों और पारिस्थितिक तंत्र के बाकी उत्पादों के आदानदृप्रदान से जुड़ा हुआ है। लैंडस्केप पारिस्थितिकी, लैंडस्केप संरचनाओं तथा कार्यों पर मानव प्रभावों की भूमिका पर रौशनी डालती है।

पारिस्थितिकी तंत्र पारिस्थितिकी

यह संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र से संबंधित है, जिसके अंतर्गत जीवित एवं निर्जीव घटकों तथा पर्यावरण के साथ उनके संबंधों का अध्ययन शम्मिलित है। यह विज्ञान शोध करता है, कि पारिस्थितिक तंत्र किस प्रकार से कार्य करते हैं, साथ ही उनकी परस्पर क्रिया इत्यादि।

सामुदायिक पारिस्थितिकी

यह इस बात से जुड़ी हुई है, कि जीवित जीवों के मध्य परस्पर क्रिया द्वारा सामुदायिक संरचना को कैसे संशोधित किया जाता है। पारिस्थितिकी समुदाय एक विशेष भौगो. लिक इलाकों में रहने वाली विभिन्न प्रजातियों की दो अथवा दो से ज्यादा आबादी से निर्मित होता है।

जनसंख्या पारिस्थितिकी

यह उन कारकों से जुड़ा हुआ है, जो आनुवांशिक संरचना एवं जीवों की आबादी के आकार को परिवर्तित एवं प्रभा. वित करते हैं। पारिस्थितिकी विज्ञानी जनसंख्या के आकार में उतारदृचढ़ाव, जनसंख्या की वृद्धि एवं जनसंख्या के साथ किसी भी अन्य वार्तालाप में रुचि रखते हैं। जीव विज्ञान में, जनसंख्या को एक निर्धारित समय में किसी जगह पर रहने वाली एक ही प्रजाति के व्यक्तियों के समूह के तौर पर परिभाषित किया जा सकता है। जन्म और आप्रवासन जनसंख्या बढ़ाने वाले मुख्य कारक हैं और मृत्यु और प्रवासन जनसंख्या घटाने वाले प्रमुख कारक हैं। जनसंख्या पारिस्थितिकी जनसंख्या वितरण एवं घनत्व की जांचदृपरख करती है। जनसंख्या घनत्व किसी दिए गए आयतन अथवा क्षेत्र में व्यक्तियों की तादात से है। इससे यह निर्धारित करने में सहायता मिलती है, कि क्या कोई प्रमुख प्रजाति संकट में है अथवा उसकी संख्या को क़ाबू में किया जाना है और संसाधनों की भरपाई की जानी है।

जीव पारिस्थितिकी

जैविक पारिस्थितिकी पर्यावरणीय चुनौतियों के उत्तर में एक व्यक्तिगत जीव के व्यवहार, शरीर विज्ञान, आकृति विज्ञान का अध्ययन है। यह देखता है, कि व्यक्तिगत जीव जैविक तथा अजैविक घटकों के साथ किस तरह परस्पर क्रिया करते हैं। पारिस्थितिकी विज्ञानी शोध करते हैं, कि जीव अपने परिवेश के इन निर्जीव तथा सजीव घटकों के प्रति किस तरह अनुकूलित होते हैं। व्यक्तिगत प्रजातियाँ शारीरिक अनुकूलन, रूपात्मक अनुकूलन एवं व्यवहारिक अनुकूलन जैसे बहुत सारे अनुकूलन से जुड़े हुए हैं।

आणविक पारिस्थितिकी

पारिस्थितिकी का अध्ययन प्रोटीन की पैदावार पर केंद्रित है। साथ ही, ये प्रोटीन जीवों एवं उनके पर्यावरण को किस तरह से प्रभावित करते हैं। बतादें, कि यह आणविक स्तर पर होता है। डीएनए प्रोटीन बनाता है, जो एक दूसरे एवं पर्यावरण के साथ वार्तालाप करते हैं। ये अंतःक्रियाएँ कुछ जटिल जीवों को जन्म देती हैं।

विश्व मृदा दिवस के अवसर पर पौधों की बीमारियों के प्रबंधन में स्वस्थ मिट्टी की भूमिका

स्वस्थ मिट्टी विभिन्न परस्पर जुड़े तंत्रों के माध्यम से पौधों की बीमारी के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जो पौधों की समग्र स्वस्थ में योगदान करती है। एक मिट्टी का पारिस्थितिकी तंत्र जो पोषक तत्वों से समृद्ध है, सूक्ष्म जीवों की आबादी में संतुलित है, और अच्छी भौतिक संरचना रखता है, पौधों की बीमारियों की गंभीरता को काफी कम करता है। स्वस्थ मिट्टी पौधों के रोगजनकों के खिलाफ अग्रिम पंक्ति की रक्षा के रूप में कार्य करती है।

पोषक तत्व संतुलन

स्वस्थ मिट्टी पौधों के विकास के लिए आवश्यक पोषक तत्वों का इष्टतम संतुलन प्रदान करती है। पौधों में मजबूत प्रतिरक्षा प्रणाली विकसित करने के लिए मैक्रोन्यूट्रिएंट्स (नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटेशियम) और सूक्ष्म पोषक तत्वों का पर्याप्त स्तर महत्वपूर्ण है।

संतुलित पोषक तत्व वाले पौधे संक्रमण से लड़ने और बीमारियों से उबरने में बेहतर सक्षम होते हैं। मिट्टी में पोषक तत्वों की कमी होने से पौधे विभिन्न बीमारियों के प्रति रोगग्राही (usceptible) हो जाते है।

माइक्रोबियल विविधता

मिट्टी में एक विविध और संपन्न माइक्रोबियल समुदाय पौधों की बीमारियों को दबाने में सहायक है। लाभकारी सूक्ष्मजीव, जैसे कि कुछ बैक्टीरिया और कवक, पौधों के साथ सहजीवी संबंध स्थापित करते हैं, विकास को बढ़ावा देते हैं और पौधों की रोगजनकों को दूर करने की क्षमता को बढ़ाते हैं। यह सूक्ष्मजीव विविधता एक प्रतिस्पर्धी माहौल बनाती है जो हानिकारक रोगाणुओं के प्रसार को सीमित करती है। मैं अपने विभिन्न लेखों के माध्यम से अक्सर यह बताया हूं की मिट्टी दो तरह की होती है एक सजीव एवं एक निर्जीव। सजीव मिट्टी उसे कहते है जिसमे माइक्रोबियल की संख्या बहुतायत से हो एवं निर्जीव उसे कहते है जिसमे माइक्रोबियल की संख्या कम होती है। अतः हमे यह प्रयास करना चाहिए की मिट्टी में माइक्रोबियल की संख्या हमेशा बढ़ती रहे ,हमे इस तरह का कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए जो मिट्टी के अंदर रहने वाले माइक्रोबियल के लिए उपयोगी न हो। कृषि रसायनों के अंधाधुंध प्रयोग एवं पराली जलाने से हमारे मिट्टी के अंदर के माइक्रोबियल की संख्या कम हो रही है एवं हमारी मिट्टी सजीव से धीरे धीरे निर्जीव होते जा रही है। आज विश्व मृदा स्वस्थ दिवस के अवसर पर हमे यह संकल्प लेने है की हम इस तरह का कोई भी कार्य नहीं करेंगे जो हमारी मिट्टी को निर्जीव बनाने में सहयोग देता हो।

मिट्टी की संरचना और वातन

अच्छे वातन के साथ अच्छी तरह से संरचित मिट्टी इष्टतम जड़ विकास की सुविधा प्रदान करती है और पौधे की पोषक तत्वों को अवशोषित करने की क्षमता को बढ़ाती है। मजबूत, स्वस्थ जड़ें रोगों के प्रति अधिक प्रतिरोधी होती हैं, और बेहतर मिट्टी की संरचना जलभ. राव को रोक सकती है, जो अक्सर जड़ रोगों से जुड़ा होता है।

दमनकारी मिट्टी

कुछ मिट्टी विशिष्ट पादप रोगजनकों के प्रति प्राकृतिक दमन प्रदर्शित करती हैं। इस घटना को विरोधी सूक्ष्मजीवों या पदार्थों की उपस्थिति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है जो रोगजनकों के विकास में बाधा डालते हैं। दमनकारी मिट्टी की क्षमता को समझना और उसका दोहन करना पादप रोग प्रबंधन में एक प्रभावी रणनीति हो सकती है।

प्रेरित प्रणालीगत प्रतिरोध (आईएसआर)

स्वस्थ मिट्टी पौधों में प्रणालीगत प्रतिरोध उत्पन्न करती है। जब पौधे मिट्टी में मौजूद कुछ लाभकारी सूक्ष्मजीवों या यौगिकों के संपर्क में आते हैं, तो वे अपने रक्षा तंत्र को सक्रिय कर देते हैं। यह प्रेरित प्रणालीगत प्रतिरोध पौधे की बाद के रोगजनक हमलों का सामना करने की क्षमता को बढ़ाता है।

जैविक रोग नियंत्रक

स्वस्थ मिट्टी लाभकारी जीवों के लिए एक भंडार है जो जैविक नियंत्रण एजेंटों के रूप में कार्य करती है। शिकारी नेमाटोड, माइकोपरसिटिक कवक और अन्य जीव अपनी आबादी को नियंत्रण में रखते हुए, पौधों के रोगजनकों का शिकार कर सकते हैं। इन प्राकृतिक शत्रुओं को मृदा पारिस्थितिकी तंत्र में एकीकृत करने से टिकाऊ और पर्यावरण–अनुकूल रोग प्रबंधन में योगदान मिलता है।

ह्यूमस और कार्बनिक पदार्थ

विघटित कार्बनिक पदार्थों से प्राप्त ह्यूमस, मिट्टी की संरचना, जल धारण और पोषक तत्वों की उपलब्धता में सुधार करता है। इसके अतिरिक्त, कार्बनिक पदार्थ लाभकारी सूक्ष्मजीवों की गतिविधि को बढ़ाते हैं, जिससे मिट्टी के वातावरण को बढ़ावा मिलता है जो रोगजनकों के जीवित रहने के लिए कम अनुकूल होता है।

चक्रण के माध्यम से पादप रोगों का विनाश

फसल चक्रण एक ऐसी प्रथा है जो मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखने में निहित है। फसलों को बदल–बदलकर, किसान विशिष्ट रोगजनकों और कीटों के जीवन चक्र को बाधित करते हैं। इससे मिट्टी में रोगजनकों का जमाव कम हो जाता है और रोग फैलने का खतरा कम हो जाता है।

मृदा पीएच विनियमन

मिट्टी का पीएच पोषक तत्वों की उपलब्धता और माइक्रोबियल गतिविधि को प्रभावित करता है। विशिष्ट फसलों के लिए उचित पीएच रेंज बनाए रखने से एक ऐसा वातावरण बनता है जो पौधों के स्वास्थ्य का समर्थन करता है। कुछ रोगजनक अम्लीय या क्षारीय मिट्टी में पनपते हैं, और पीएच को समायोजित करने से उनका प्रभाव सीमित हो सकता है।

पर्यावरणीय तनावों के प्रति लचीलापन

स्वस्थ मिट्टी सूखे या अत्यधिक तापमान जैसे पर्यावरणीय तनावों के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करती है। पोषक तत्वों से भरपूर, अच्छी तरह से संरचित मिट्टी में उगने वाले पौधे तनाव झेलने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित होते हैं, जिससे वे अवसरवादी रोगजनकों के प्रति कम संवेदनशील होते हैं जो अक्सर कमजोर पौधों को निशाना बनाते हैं।

सारांश

पादप रोग प्रबंधन में स्वस्थ मिट्टी की भूमिका बहुआयामी और परस्पर जुड़ी हुई है। पोषक तत्वों के प्रावधान से लेकर माइक्रोबियल इंटरैक्शन तक, मिट्टी का स्वास्थ्य विभिन्न कारकों को प्रभावित करता है जो सामूहिक रूप से पौधों की बीमारियों का विरोध करने और उनसे उबरने की क्षमता में योगदान करते हैं। मिट्टी के स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने वाली स्थायी कृषि पद्धतियाँ न केवल मजबूत पौधों के विकास को बढ़ावा देती हैं, बल्कि पौधों के रोगजनकों द्वारा उत्पन्न चुनौतियों का दीर्घकालिक समाधान भी प्रदान करती हैं।

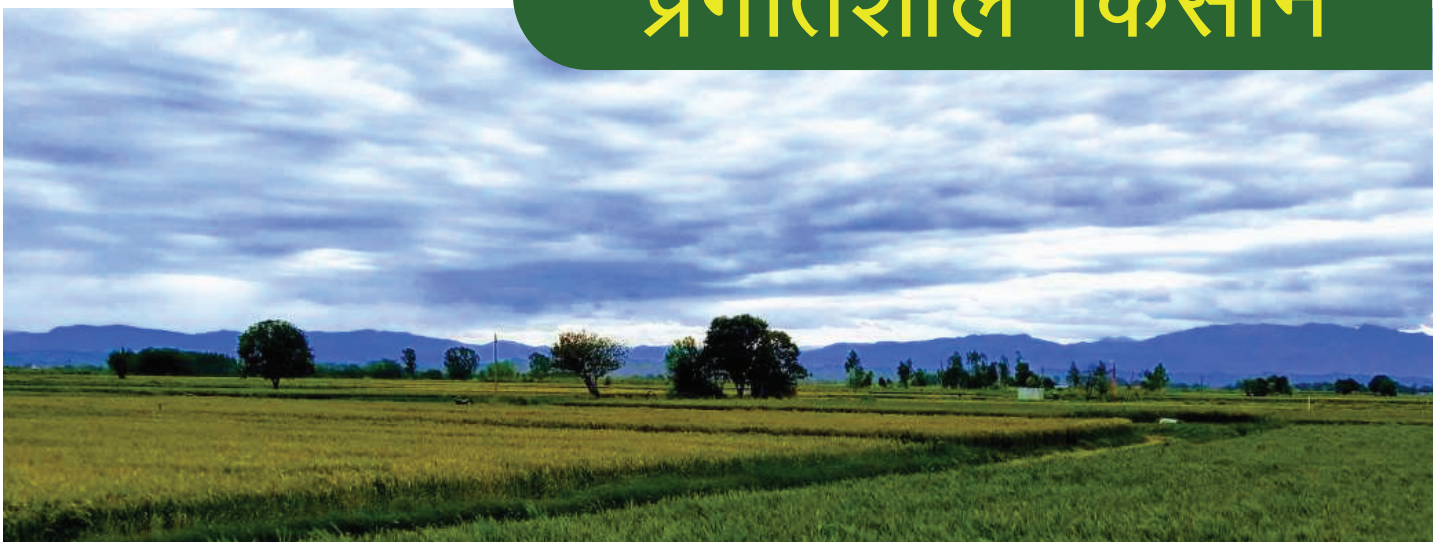

प्रगतिशील किसान सत्यवान ने इस तरह की खेती से कमाया बेहतरीन मुनाफा

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि सफल किसान की इस सीरीज में आज हम आपको दिल्ली के एक ऐसे किसान की कहानी बताने जा रहे हैं, जो जैविक तथा प्राकृतिक खेती के माध्यम से लाखों में मुनाफा अर्जित कर रहे हैं। भारत में जहां एक तरफ खेती में जमकर रसायनों का उपयोग किया जा रहा है, तो वहीं आज भी कुछ किसान ऐसे हैं जो जैविक तथा प्राकृतिक खेती के माध्यम से शानदार मुनाफा अर्जित कर रहे हैं। बतादें, कि इन्हीं में से एक प्रगतिशील किसान सत्यवान भी है। वर्तमान में सत्यवान खेती तथा डेयरी फार्मिंग की सहायता से लाखों रुपये की आमदनी कमा रहे हैं।

किसान को केवल शानदार भूमि ही मालामाल बना सकती है

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि प्रगतिशील किसान सत्यवान का कहना है, कि वह दिल्ली के दरियापुर कलां गांव के मूल निवासी हैं। साथ ही, यह प्राकृतिक खेती के जरिए लाखों की आय अर्जित कर रहे हैं। सत्यवान खेती के अतिरिक्त देसी गाय का भी पालन करते हैं। वह अंतर फसलें भी उगा रहे हैं, जिसकी वजह से आज कृषकों के लिए एक उदाहरण भी बन गए हैं। सत्यवान का कहना है, कि 'यदि धरती बलवान होगी तो किसान धनवान होगा', इससे उनका तात्पर्य यह है, कि ज्यादा कीटनाशकों के इस्तेमाल की वजह हमारी मृदा पूर्णतय जीवांश रहित हो चुकी है। बतादें, कि इस वजह से फसलों में बीमारियां लगनी शुरू हो गई हैं।

किसान अपनी 20 एकड़ जमीन में खेती करता है

उन्होंने बताया कि, वह 5 एकड़ खेत में सिर्फ प्राकृतिक खेती ही करते हैं और उनके पास समकुल जोत के लिए 20 एकड़ भूमि है। सत्यवान धान, गेहूं, गन्ना और मटर सहित अन्य विभिन्न प्रकार की सब्जियों की खेती करते हैं। इसके अतिरिक्त वह अपने खेत में सब्जियों की नर्सरी भी तैयार करते हैं, जिसे शानदार कीमतों में कृषकों को बेच देते हैं।

जोश का राज़ मेरा SWARAJ

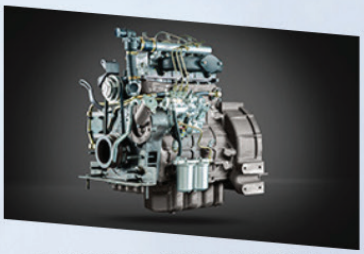

POWERFUL ENGINE

STRONG FRONT AXLE

LED FENDER AND TAIL LAMP

ट्रैक्टर बोले तो SWARAJ

NAYA SWARAJ, MERA SWARAJ

MERIKHETI

किसानो की बात
मेरी खेती के साथ

www.merikheti.com

Contact No : +91 8800777501
Address : 5A-46, 6th Floor, Cloud 9 Tower, Vaishali,
Sector -1, Ghaziabad - 201010